संस्मरण

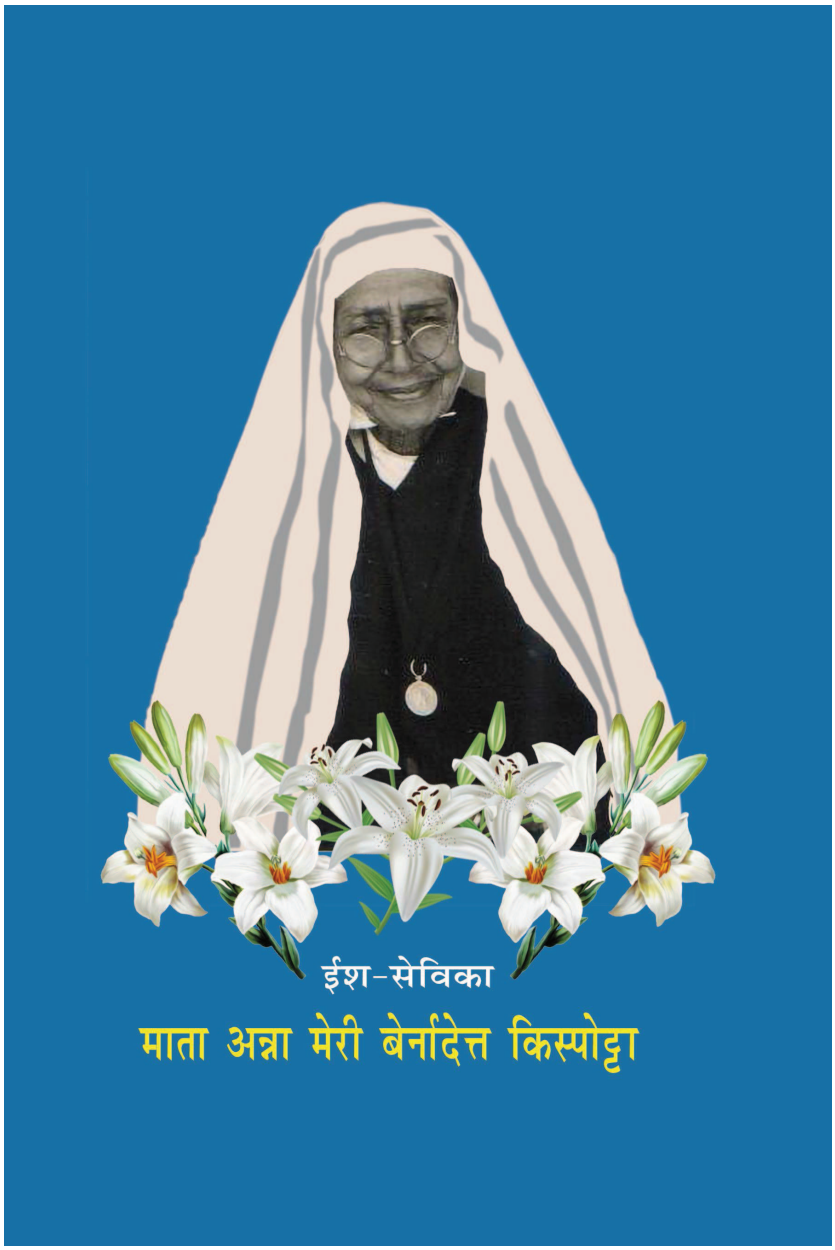
ईश-सेविका
माता अन्ना मेरी बेर्नादेत्त किस्पोट्टा

संस्मरण

संत अन्ना की पुत्रियों
को
समर्पित

प्रथम संस्करण : 24 जुलाई 2022

प्रकाशक : संत अन्ना की पुत्रियों का धर्मसंघ, राँची

धर्मसंघ की स्थापना के 125वीं जयंती समारोह के अवसर पर

सर्वाधिकार : संत अन्ना जेनेरालेट, लोवाडीह, राँची (झारखण्ड)

मुद्रक : काथलिक प्रेस, राँची - 834001 मोबाईल नं० - 8757340417
ई-मेल : catholic_press@yahoo.in

विषय-सूची

प्रस्तावना			v
भूमिका			vii
अध्याय	1:	छोटानागपुर में काथलिक कलीसिया की शुरुआत	1
	1.1	फादर कोन्सटन्ट लीवन्स का आगमन	1
	1.2	लोरेटो की धर्मबहनों का आगमन	3
	1.3	लड़कियों में बुलाहट का बीज	4
अध्याय	2 :	बुलाहट की चुनौतियाँ	7
	2.1	काथलिक कलीसिया से	7
	2.2	लूथरन कलीसिया से	11
अध्याय	3 :	मन परिवर्तन	19
अध्याय	4 -	धर्मसंघीय बुलाहट की पहचान	21
अध्याय	5 :	धर्मसंघीय बुलाहट की जाँच	34
अध्याय	6 :	धर्मसंघ की स्थापना	40
अध्याय	7 :	धर्मसंघ का विस्तार	49
अध्याय	8 :	धन्यवाद समारोह	52
शब्द अनुक्रमणिका			59
व्यक्तियों के नाम उनकी अपनी भाषा के अनुसार			63

प्रस्तावना

वर्ष 2022 संत अन्ना की पुत्रियों के धर्मसंघ राँची की 125 वर्षीय जयन्ती का समापन वर्ष है जिसकी स्थापना 26 जुलाई 1897 ई. में हुई थी। इस धर्मसंघ की संस्थापिका ईश सेविका माता मेरी बेर्नादेत्त प्रसाद किस्पोट्टा हैं जिन्होंने अपनी प्रथम तीन सहयोगी बहनों : माता सेसिलिया, माता बेरोनिका एवं माता मेरी के साथ धर्मसंघ की नींव डाली। यह धर्मसंघ 125 वर्षों की लम्बी अवधि में विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए आज एक नन्हें पौधे से एक विशाल वटवृक्ष का रूप धारण कर चुका है। इसकी जड़ें छोटानागपुर की उर्वर माटी में गहराई प्राप्त कर चुकी हैं और इसकी शाखाएँ अपनी जन्म भूमि भारत के विभिन्न क्षेत्रों में विकसित होकर इटली और जर्मनी जैसे उन्नत देशों को भी अपनी कर्म भूमि बना चुकी हैं। यह ईश्वर की ही महान् कृपा का चमत्कारी चिह्न है।

माता मेरी बेर्नादेत्त के माध्यम से ईश्वर ने न केवल संत अन्ना की पुत्रियों के धर्मसंघ के लिए वरन् छोटानागपुर की स्थानीय कलीसिया एवं वृहद् स्तर पर विश्वव्यापी कलीसिया के लिए भी अद्‌भुत कार्य किए हैं। माता मेरी बेर्नादेत्त ने इस धर्मसंघ की स्थापना के साथ एक और अनुपम उपहार दिया है, अर्थात् ''संस्मरण''। दरअसल यह उनके निज हाथों से लिखी गई एक आत्मकथा है जिसमें उन्होंने संत अन्ना की पुत्रियों के धर्मसंघ, राँची की उत्पत्ति का प्रारंभिक इतिहास प्रस्तुत किया है और साथ ही अपने बुलाहटीय जीवन की विभिन्न घटनाओं का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है। चूँकि इसकी रचना करीब एक सौ साल पहले हुई है, इसकी भाषा उस समय की हिन्दी के अनुसार है जो आधुनिक हिन्दी से कुछ भिन्न है। लेकिन येसु के प्रेम से प्रज्वलित होकर रचित माता मेरी बेर्नादेत्त की इस आत्मकथा के प्रत्येक शब्द में सराहनीय आध्यात्मिकता निहित है जो आज भी हमें ईश्वर के साथ अपने रिश्ते को गहरा करने के लिए प्रेरित करती है। अत: इसे अधिक से अधिक लोगों तक उपलब्ध करना उचित और लाभप्रद जान पड़ा। इसलिए धर्मसंघ की अधिकारिणियों द्वारा इसे वर्तमान हिन्दी में लिखने का आग्रह स्व. फा. लीनुस कुजूर, ये. सं. से किया गया था जिसे उन्होंने बड़ी लग्नता एवं समर्पण के साथ पूरा किया।

संस्मरण का यह नया संस्करण स्वयं में एक सुन्दर कृति है जो भाषा को परिमार्जित करने के बावजूद माता बेनदित्त, वास्तविक लेखिका की मनोभावनाओं को अक्षुण्ण रखते हुए संस्मरण की वास्तविकता को भी बरकरार रखती है। इसकी प्रस्तुतकर्त्ता ने आरंभ में भूमिका, नए संस्करण के उद्देश्य, नए संस्करण के सिद्धांत व नियम तथा सप्रसंग व्याख्या और अन्त में अनुक्रमणिका एवं व्यक्तियों के नाम उनकी अपनी भाषा के अनुसार जोड़ कर इसे बेहत्तर ढंग से समझने के लिए आसान कर दिया है। साथ ही इसे अध्यायों एवं पद संख्याओं में वर्गीकृत कर इसकी महत्वपूर्ण घटनाओं को अधिक स्पष्ट कर दिया है।

मुझे अपार हर्ष और गर्व हो रहा है कि 125 वर्षीय जुबिली के पावन अवसर पर संस्मरण के इस नए संस्करण का विमोचन संत अन्ना की पुत्रियों के धर्मसंघ की एक खास उपलब्धि होगी। साथ ही यह धर्मसंघ एवं कलीसिया के लिए एक आध्यात्मिक धरोहर के रूप में पाठकों का मार्गदर्शक सिद्ध होगा। आशा है कि इस आध्यात्मिक प्रेमोपहार के माध्यम से ईश्वरीय राज्य के विस्तार में भी बहुमूल्य योगदान मिल सकेगा।

मैं स्व. फा. लीनुस कुजूर, ये. सं. के प्रति हृदय से आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने बहुत ही तत्परता से इस संस्करण को पूरा कर हमारे धर्मसंघ के प्रति अपने नि:स्वार्थ प्रेम का प्रमाण दिया है। साथ ही उन्होंने विशेष रूप से हिन्दी भाषी ख्रीस्त विश्वासियों के लिए एक अनमोल भेंट प्रदान की है। कृपालु प्रभु उनके सभी उपकारों के लिए उन्हें अनन्त शांति से पुरस्कृत करे। मैं श्रद्धेय फा. सुधीर कुजूर, ये. सं. के प्रति भी कृतज्ञता अर्पित करती हूँ जिन्होंने इस संस्करण के अंतिम रूप देने में अपना महत्वपूर्ण हाथ और साथ दिया है। उन्होंने इसकी भाषा अशुद्धियों को संशोधित कर तथा अपने सुन्दर सुझावों द्वारा अहम् भूमिका निभाया है। मैं उन सबके प्रति भी दिल से आभारी हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस संस्करण को इसके विमोचन तक पहुँचाने में अपना प्रेमपूर्ण सहयोग दिया है। ईश-सेविका माता मेरी बेर्नादेत्त की ममतामयी छाया हम सभों पर सदा बनी रहे।

सि. लीली ग्रेस तोपनो, डी. एस. ए.
सुपीरियर जेनेरल

भूमिका

बहुत कम लोगों को यह मालूम होगा कि माता अन्ना बेर्नादेत्त किस्पोट्टा छोटानागपुर की पहली महिला है, जिन्होंने अपने को येसु को समर्पित कर दिया और एक धर्मसंघ की स्थापना की, जिसका नाम है - संत अन्ना की पुत्रियाँ, राँची। छोटानागपुर में ही जन्म लेने वाली यह पहली धर्मसंघीय संस्था है, जिसने आरंभ से ही भारतीय पहिरावा-साड़ी को अपने समर्पण की पहचान बनायी और लोगों की ही भाषा में धर्म की गूढ़ बातों को समझने-समझाने का बीड़ा उठाया। अपनी प्रेरणा का स्रोत माता बेर्नादेत्त फादर कोन्सटन्ट लीवन्स और विशेषकर लोरेटो की धर्मबहनों को मानती हैं, अत: उनकी आत्मकथा में उनका जिक्र हरदम करती हैं, अपितु उनका वह अंध अनुकरण नहीं था। उन्होंने केवल उन बातों को उनसे लिया जो उदाहरणीय है लेकिन अपने धर्मसंघ के लिए कुछ ऐसे नये निर्णय लिये, जो सम्पूर्ण धर्मसंघ के लिए भविष्यवाणी की तरह हो गये; जैसे संस्कृति के अनुकूल पहिरावे को धर्मसंघीय जीवन में ग्रहण करना।

माता बेर्नादेत्त ने यह भी स्वीकार किया है कि वे समर्पित जीवन जीने के लिए अकेले नहीं रही हैं। उनके साथ ही साथ तीन अन्य स्थानीय बहनों ने स्वेच्छापूर्वक शुद्धता का जीवन जीना चाहा और अन्त तक उसके प्रति वफादार रहीं - वे हैं माता अन्ना सेसिलिया, माता अन्ना बेरोनिका और माता अन्ना मेरी। ये चार छोटानागपुर की भूमि-पुत्रियाँ हैं, जिन्होंने नयी पीढ़ी के लिए आध्यात्मिक यात्रा का मार्ग दिखाया है और अपनी अखण्ड एकता का परिचय देते हुए सामुदायिक धर्मसंघीय जीवन की नींव डाली हैं, जिसमें उनकी संस्कृति की झलक मिलती है।

आपने कभी सुना या देखा होगा कि यदि कोई धर्मबहन बनती है या किसी धर्मबन्धु का पुरोहिताभिषेक होता है, तो समाज में उनके लिए *मड़वा* गाड़ा जाता है, याने उन्हें शादी की विधि से अपनाया जाता है। कहने का तात्पर्य यह कि आजीवन धर्मबहन, धर्मबन्धु और पुरोहित बनने को समुदाय ने ईश्वर के साथ संयुक्ति के जीवन के रूप में स्वीकार किया। छोटानागपुर की ये विशिष्ट प्रथाएँ माता अन्ना बेर्नादेत्त की जीवनी पढ़ने से समझ में आयेंगी।

अपेक्षा है कि पाठक माता अन्ना बेर्नादेत्त किस्पोट्टा की इस आत्मकथा को पढ़कर उस आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश कर सकेंगे, जिसे अपनी सरल भाषा और उदाहरण से माता अन्ना बेर्नादेत्त ने इन पँक्तियों में अंकित कर दिया है।

नये संस्करण का उद्देश्य

राँची की संत अन्ना की पुत्रियों ने अपनी इच्छा प्रकट कीं कि वे संस्थापिका, अन्ना मेरी बेर्नादेत्त, की कृति को और अच्छी तरह से समझना चाहती हैं, जिससे वे अपने धर्मसंघ की स्थापना के मतलबों व उसकी विशेषताओं को अपने जीवन में आत्मसात् कर सकें। साथ ही साथ उनकी यह भी चाह है कि धर्मसंघ की विशेषताओं को वे ख्रीस्तीय धर्मशिक्षा व ईशशास्त्र से जोड़ सकें।

इन्हीं उद्देश्यों को ख्याल में रखते हुए संस्थापिका के द्वारा लिखी गयी "राँची धर्मप्रान्त के संत अन्ना की पुत्रियों के धर्मसंघ की उत्पत्ति" का, जिसे "संस्मरण" के नाम से जाना जाता है, नया संस्करण निकालने की योजना बनी। अत: नये संस्करण के माध्यम से एक ऐसी पुस्तिका तैयार की जा रही है, जिसके द्वारा धर्मबहनें अपनी संस्थापिका की आध्यात्मिक-यात्रा को ससंदर्भ जान सकें तथा उसमें निहित मनोभावनाओं को अपने जीवन में हृदयंगम कर सकें। इस संस्करण को "माता अन्ना बेर्नादेत्त किस्पोट्टा की आत्मकथा" कहा गया है, जिससे पढ़ने वाले यह जानें कि यह ऐसी कृति जिसे धर्मसंघ की संस्थापिका ने अपने हाथों से लिखी हैं।

इस संस्करण को प्रकाशित करते समय यह भी ध्यान दिया जा रहा है कि भाषा की दृष्टि से इस कृति को सर्वसाधारण तक पहुँचा दी जाए, क्योंकि यह अपने में सम्पूर्ण छोटानागपुर की कलीसिया की धरोहर है। अपेक्षित यह भी है कि माता अन्ना बेर्नादेत्त किस्पोट्टा को, जो ईश-सेविका बन चुकी हैं, छोटानागपुर के विश्वासी भी जानें और उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करें। अत: सम्पूर्ण "संस्मरण" को उसकी मौलिकता को बिना बदले, वर्तमान भाषा में लोगों तक पहुँचाया जाए।

नये संस्करण के सिद्धान्त व नियम

सिद्धान्त: सबसे पहले इस बात पर ध्यान दिया गया है कि संस्थापिका जो कहना चाहती हैं, वह बनी रहे और कि उनकी भाषा व शैली भी यथासंभव वही हो। अत: नया संस्करण उनके विचारों को और अच्छी तरह समझ सकने के लिए सरल बनाया जा रहा है, क्योंकि इस कृति की भाषा करीब एक सौ साल पहले की है, जब हिन्दी अपनी प्रारंभिक अवस्था में ही थी। हिन्दी साहित्य की दृष्टि से यह अपने में एक अनूठी देन है, क्योंकि सामान्य बोल-चाल की भाषा में धर्म की गूढ़ बातों को प्रकट की गयी है, यही कारण है कि नया संस्करण

बनाते समय कृति की आदि सर्जनात्मकता को रखते हुए, जो समय के अनुसार इतिहास बन चुकी है, वर्तमान पाठक के लिए लिखा जा रहा है। उसके लिए निम्नलिखित नियम बनाये गये हैं -

1) सम्पूर्ण वृतान्त को केवल एक ही लिपि में लिखा जा रहा है, क्योंकि आदि कृति में देवनागरी और रोमन दोनों लिपियों का प्रयोग किया गया था। 2) शब्दों का उच्चारण वर्तमान भाषा के अनुसार लिखा जा रहा है, - जैसे दिई को दी, तोर्पा को तोरपा, ख्रिस्तानों को ख्रीस्तीय बना दिया गया है। 3) विदेशी शब्दों का उच्चारण उनकी ही भाषा के अनुसार किया जा रहा है, जिससे नाम की विशेषता बनी रहे, जैसे Mother को मदर, Paul Goethals को पौल गूथल्स, Louis Cardon को लूई कार्दों। 4) उर्दू शब्दों का बिना अर्थ बदले पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है, उदाहरणार्थ वास्ते को लिए बना दिया गया है। 5) पढ़ने की सुविधा हेतु अंक को आवश्यकतानुसार अक्षर में बदल दिया गया है, जैसे 28 को अट्ठाइस। 6) उन वाक्यों को जोड़ दिया गया है, जो एक दूसरे पर आश्रित हैं, जैसे अनुच्छेद 67 का नम्बर 4 इस प्रकार है, [निज मातृ-गृह राँची में है। जहाँ उम्मेदवार तथा नौशिष्यों का घर है, जिसमें उन्हीं का जाँचपन, क्रिया-कर्म तथा शिक्षा-दीक्षा होती है। उसे इस तरह लिखा गया है - "उनका निज मातृ-गृह राँची में है, जो उम्मेद्वारों तथा नौशिष्यों का घर है, जिसमें उनकी जाँच, क्रिया-कर्म तथा शिक्षा-दीक्षा होती है।" 7) कभी-कभी अनावश्यक शब्दों को, मूल विचार को बिना तोड़-मोड़ किये, छोड़ दिया गया है, जैसे अनुच्छेद 3 नम्बर 9 में इस तरह लिखा था, बहुतेरी जंगली और निर्बुद्धि लड़कियाँ थीं, परन्तु उन के बीच में से कई एक कुछ-कुछ समझदार थीं] उसे इस तरह बना दिया गया है, "बहुतेरी जंगली और निर्बुद्धि लड़कियाँ थीं, परन्तु उन के बीच में से कुछ समझदार थीं।" 8) आवश्यकतानुसार अर्थ की स्पष्टता के लिए शब्द जोड़ दिया गया है।

यह कृति धर्मसंघ की स्थापना का इतिहास है, अत: उसी प्रवाह के अनुसार अध्याय शीर्षक और उपशीर्षक जोड़ दिये गए हैं, जिससे कथा का प्रवाह पाठक के मन में बना रहे। यह धर्मसंघ की स्थापना के लिए आध्यात्मिक-प्रेरणा का स्रोत है, अत: उसे बाइबिल की तरह नम्बर दे दिया जा रहा है, जिससे प्रत्येक अनुच्छेद और वाक्य पर यथासमय सविस्तार चर्चा हो सके। इसमें जो अनुच्छेद हैं, वे संस्थापिका के अपने हैं, अत: उनपर हस्तक्षेप नहीं किया गया है। फिर शोधकर्त्ताओं की सुविधा हेतु पुस्तिका के आरंभ में विषय-सूची और

अंत में शब्द-सूची जोड़ दी गयी है जिससे विषयानुसार अध्ययन करने की सुविधा हो। अन्त में विदेशी नामों को परिशिष्ट में 2022 दर्शाया गया है, जिससे उनकी मौलिकता से सब परिचित हों।

सप्रसंग व्याख्या

यह कृति पुरानी है, अतः आज के पाठक को ध्यान में रखते हुए उस समय के भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक संदर्भ को व्याख्या के रूप में पृष्ठ के नीचे जोड़ दिया जा रहा है, जिससे भावार्थ को समझने में आसानी हो। चूँकि यह वृतान्त लेखिका के आध्यात्मिक-अनुभव को भी दर्शाता है, यथासंभव उन नियमों का उल्लेख किया जाएगा, जो उनके अनुभव पर आधारित हैं तथा जो आज धर्मसंघ, संत अन्ना की पुत्रियाँ राँची, के संविधान और निर्देशिका में पाये जाते हैं।

अपेक्षा है कि संस्मरण के इस नये संस्करण से संस्थापिका के विचारों और उनकी मनोभावना को समझने में आसानी हो। साथ ही साथ आशा है कि यह अध्ययन, शोध व विचारात्मक चर्चा के लिए पाठ्यक्रम-सा बन जाए व सत्य की खोज करने का साधन बन जाए, जिसके द्वारा हम सच्ची स्वतंत्रता को पा सकें, जिससे छोटानागपुर की कलीसिया अपनी परिपक्वता में बढ़ती जाए।

प्रस्तुतकर्ता
फादर लीनुस कुजूर, ये॰ सं॰

राँची महाधर्मप्रान्त की संत अन्ना की पुत्रियों के धर्मसंघ[1] की उत्पत्ति

अध्याय 1 : छोटानागपुर में काथलिक कलीसिया की शुरुआत

1.1 फादर कोन्सटन्ट लीवन्स का आगमन

1. [1]17वीं मार्च[2] 1885 ईस्वी में छोटानागपुर के महाप्रेरित मान्यवर प्यारे फादर कोन्सटन्ट लीवन्स, ये० सं० राँची पहुँचे। [2]वे यहाँ पहुँचकर कुछ महीनों के लिए डूरंडा में वास करके रोज-रोज इधर-उधर सैर को जाकर आदमियों से कुछ-कुछ बातचीत करते-करते अनेक लोगों को काथलिक कलीसिया में भरती करने लगे और एतवार-एतवार थड़पखना के जेल रोड के एक मकान[3] में पवित्र-मिस्सा करते थे। [3]जब उन्हें अपने प्रधान फादर से आज्ञा मिली कि आप तोरपा जाइये, तब वे यहाँ से तोरपा पधारे। [4]जब प्यारे फादर तोरपा पहुँचे तो उनके रहने के लिए घर-द्वार कुछ भी न था, इसलिए वे

---

1 धर्मसंघ को बोलचाल की भाषा में धर्मसमाज कहा जाता था, जो इस शीर्षक में भी प्रयोग किया गया था।

2 17 वीं मार्च 1885 फादर कोन्सटन्ट लीवन्स पहली बार कलकत्ता से गिरिडीह होते हुए हजारीबाग पहुँच चुके थे, फिर 18वीं मार्च राँची-डूरंडा पहुँचे जहाँ ख्रीसान्त सपार्त, ये० सं० ने उसका स्वागत किया। वे दूसरे दिन ही लोगों से मिलने व भाषा सीखने के लिए जमगई निकल पड़े। अधिकारियों के अनुसार फादर लीवन्स को प्रेरिताई के लिए नयी जगह की खोज करनी थी, अत: 23 नवम्बर 1885 से तोरपा में रहने का निर्णय लिया। उनके पूर्व 1869 से बेल्जियम के अगुस्तुस स्कोटकमन आ चुके थे और अपने येसु संघियों के साथ 16 वर्षों में कोचांग, बंदगाँव, सरवादा और डोलडा पल्लियों की स्थापना कर चुके थे, अपितु रोमन काथलिकों की संख्या बहुत कम थी।

3 फादर कोन्सटन्ट लीवन्स को उनके मिशन सुपीरियर सिल्भे ग्रोजाँ ने सन् 1886 में पुरुलिया रोड राँची के दक्षिणी भाग में, जिसे अब डॉक्टर कामिल बुल्के पथ के नाम से जाना जाता है, जमीन खरीद कर रहने का प्रबंध कर दिया, क्योंकि कचहरी के काम के लिए उन्हें तोरपा से राँची बराबर आना-जाना पड़ता था। यहाँ उनके लिए एक घर बना दिया गया, जो मनरेसा हाऊस के नाम से आज भी जाना जाता है।

एक ख्रीस्तीय के घर में रहे, जब तक कि अपने लिए एक कच्चा घर न बना चुके।

2. [1]यहाँ छोटानागपुर में काथलिक पुरोहितों के आने के पहले ही लूथरन[4] और अँगरेजी मिशन[5] के लोग अपने-अपने धर्म फैला दिए थे।

3. [1]जब फादर लीवन्स तोरपा में रहकर काथलिक धर्म का प्रचार करने लगे, तब चारों ओर से लोग भीड़ के भीड़ लूथेरन, अँगरेजी मिशन, उराँव, मुण्डा और खड़िया जाति के लोग उनके पास दौड़े आते थे। [2]पाँच ही वर्ष में इतने ख्रीस्तीयों की बढ़ती हुई कि प्यारे फादर लीवन्स, प्यारे फादर यान देस्मेत, ये॰ सं॰, तथा दूसरे-दूसरे साथी फादर लोग कलकत्ता के आर्चबिशप महामान्यवर प्यारे पौल गूथल्स से तेज-तेज अर्जी करने लगे, यह बोलकर कि आप कृपा करके प्यारी लोरेटो मदरों और सिस्टरों को भेजिए, जो यहाँ आकर लड़कियों के लिए स्कूल खोलें और धर्म की भी शिक्षा देवें, तो हमारे कामों की खूब सफलता होगी। [3]जरूर महामान्यवर बिशप स्वामी जी ने ऐसे खुशहाल खबर पाया, तो उन्होंने बिना देर किए लोरेटो मदरों से यह माँगा कि राँची में उनकी कॉन्वेंट खोली जाए, जहाँ लड़कियों को लिखने-पढ़ने का ज्ञान देने के साथ प्रश्नोत्तर[6] को अधिक सिखलाई जाए। [4]माननीय लोरेटो मदर लोग, जिन का दिल भी ईश्वर के बड़े प्रेम से इतने ज्वलित है, प्यारे आर्चबिशप की ऐसी तेज इच्छा को मालूम करके तुरन्त

---

4 सन् 1845 में सर्वप्रथम जर्मनी से गोस्सनर एवाँजेलिकल लूथरन मिशन के चार पादरी राँची आ चुके थे और ईस्वी सन् 1868 से इंगलैण्ड एस॰ पी॰ जी॰ मिशन, याने Society for the Propagation of the Gospel (SPG) भी, जिनका वर्तमान नाम उत्तर भारत की कलीसिया है, राँची में कार्यरत थे। उन्हें उस समय प्रोटेस्टन्ट कहा जाता था। उनकी प्रेरितिक सफलता से प्रेरित होकर येसु संघी पुरोहितों ने भी कोलकता से इस क्षेत्र में आने की सोची।

5 एस॰ पी॰ जी॰ मिशन को अंगरेजी मिशन भी कहा गया है, क्योंकि वह इंगलैण्ड से इस प्रदेश में आया और अंगरेजी उनकी भाषा थी। जब मिशनरी राँची आये उस समय ब्रिटिश राज्य (1858-1947) था, जो विभिन्न प्रोविंशों और जिलों में बँटा था। उस समय राँची छोटानागपुर प्रोविंश या (Sourth West Frontier) के अन्दर आता था, इसीलिए राँची मिशन को छोटानागपुर मिशन कहा जाता था। केवल 1912 में छोटानागपुर प्रोविंश को पश्चिम-बंगाल और बिहार-उड़ीसा प्रोविंशों में बाँट दिया गया व छत्तीसगढ़ क्षेत्र को केन्द्रीय प्रोविंश से मिला दिया गया। फिर 1936 में बिहार को उड़ीसा से अलग किया गया। केवल 2000 में बिहार से दक्षिणी 18 जिलों को अलग कर झारखण्ड राज्य की स्थापना की गयी है।

6 प्रश्नोत्तर, उस किताब का नाम है, जिसके द्वारा धर्मशिक्षा जी जाती थी, जो बेतिया से प्रकाशित थी। विद्यालय इसीलिए खोला गया कि बच्चे-बच्चियाँ पढ़ लिख कर उस प्रश्नोत्तरी को समझ सकें।

ही इस धार्मिक काम को करने में उद्धत हो गयी हैं। [5]उन्हीं दिनों कलकत्ता में लोरेटो की प्रोविंशल मदर मेरी गोंजागा जोयनट थी। [6]उन्होंने अपनी सिस्टरों के बीच में से चार अच्छी-अच्छी मदरों को चुन लिया; वे ये हैं राँची की प्रधान मदर मेरी गोंजागा, मदर मेरी पत्रीसिया, मदर मेरी अलोयसिया और सिस्टर तेरेसा। [7]ये पहली मदर लोग हैं, जो इस छोटानागपुर की गरीब लड़कियों और स्त्रियों की आत्माओं को यीसु की असल गिरजा में बटोर लाने के लिए भेजी गईं।

1.2 लोरेटो की धर्मबहनों का आगमन

4. [1]ये चार आज्ञा पाकर शीघ्र ही रवाना हुई हैं। [2]उन्हीं दिनों में यहाँ न रेलगाड़ी थी, न तो रिक्सा-पिक्सा और कुछ भी न था। [3]पुरुलिया से इधर पुस-पुस नामक गाड़ी,[7] जिसके हरजुहाट में पाँच या छः कुली लोग जुटकर रात-दिन दौड़ते और सुबह को, पचहत्तर मील तय करके, राँची पहुँचते थे। [4]बहुत मुश्किलता से जंगल-पहाड़ पार कर, बाघ-भालुओं को खदेड़ शोरगुल मचाते हुए बेचारे कुली लोग अपना काम पूरा करके तथा कुछ-कुछ पैसा लेकर चले जाते थे, तब बदली होकर दूसरे कुलियाँ आ धमकते थे। [5]प्यारी मदरों को यहाँ राँची आने-जाने में बहुत ही कठिनाई झेलनी पड़ती थी, मगर यीसु के प्रेम से सदा सब कुछ करने को तैयार थीं। [6]वे आखिर में 19 मार्च 1890 को राँची पहुँचीं। [7]प्यारी मदर लोग यहाँ आकर एकदम फूर्ती से कामों में लग गईं। [8]फादर लोग इधर-उधर से लड़कियों को इकट्ठा करके स्कूल भेजने लगे। स्कूल में लड़कियाँ कभी-कभी 400 से 500 के लगभग जमा होती थीं। [9]बहुतेरी जंगली और निर्बुद्धि लड़कियाँ थीं, परन्तु उन के बीच में से कुछ समझदार थीं, क्योंकि फादर लोगों ने मदरों के यहाँ आने के डेढ़ वर्ष के पहले ही से लड़कियों को कुछ शिक्षा दिलवाया था, क्योंकि सन्त जोन्स स्कूल लड़कों के लिए खोला गया था।

---

7 पुस-पुस नामक गाड़ी याने वह गाड़ी जिसे ठेल (चने) कर चलाया जाता था। राँची पहाड़ी प्रदेश होने के कारण उबड़-खाबड़ था तथा सड़कें कच्ची थीं। उस समय न गाड़ियाँ थीं और न रेल, केवल 1907 में रेल राँची पहुँची और 1911 में लोहरदगा तक बढ़ायी गयी। लोग यात्रा पैदल ही करते थे। पुस-पुस गाड़ी उस समय के लिए एकमात्र पहियावाली वाहन थी।

1.3 लड़कियों में बुलाहट का बीज

5. [1]जब लड़कियाँ दिन-रात मदरों के साथ रहकर उनके निज मुँह से धर्म की बातें सीखने, उनकी प्रेमी और मीठी बातों का मजा चखने और उनकी ऐसी धार्मिक सुचाल आदि ठीक मन दिल देकर देखने लगीं, तब वे भी मदरों को बहुत ही प्रेम और आदर करने लगीं। [2]होते-होते दो-तीन वर्षों के अन्दर ही में कोई चार लड़कियाँ अपने मन में यह विचार करने लगीं, कि अगर ये मदर लोग यीसु के प्रेम से अपने प्यारे बाप, माँ, भाई, बहन, मित्र और कुटुम्बों को, हाँ अपने निज देश को[8] भी त्याग देकर, इस जंगली देश में आकर हम अनजान गरीब और नीच जातियों को इतना प्रेम दुलार करके हमारी आत्माओं को स्वर्ग में पहुँचाने के फिक्र से दिन-रात इतनी मिहनत किया करती हैं, तो क्या हम लोग भी इन्हीं के सुन्दर नमूनों के अनुसार अपने देश और जातियों की भलाई के लिए नहीं करेंगी? [3]ये लड़कियाँ अपने दिल में यह खूब समझकर और सब सीखने की तेज इच्छा से मदरों की सब रीति-नीति, बातचीत और कामों को विशेष तौर से चित्त देकर देखने लगीं। [4]वे इस इच्छा की पूर्ति के लिए जैसे ही काम बात आ निकले, अर्थात् बच्चों को सिखलाना-पढ़ाना, दु:ख बीमारी में उनकी सेवा टहल करना, आदि में मदरों को मदद देने के लिए दिन-रात लग जाती थीं। [5]शुरू में इन लड़कियों की छिपी सोच किसी को मालूम न थी। [6]कुछ समय बाद महामान्यवर प्यारे देस्मेत और एक दो मदरों को यह जान पड़ा है। [7]जब लड़कियाँ चौदह पन्द्रह वर्ष की हुईं, तब माता-पिता और भाई कुटुम्ब लोग शादी के बन्दोबस्त के लिए जोर करने लगे। [8]इसी घड़ी से वे सदा ही उसे नामंजूर करती थीं, तब से सारी छिपी सोच सभों को मालूम होने लगी। [9]इसे नामंजूरी देने के कारण उन्हें नाना-प्रकार का क्लेश उठाना पड़ा। [10]इधर-उधर सब कोई बोलने

---

[8] मदरों का जीवन लड़कियों के लिए एक आदर्श बन गया, क्योंकि उनके जीवन से ही प्रेरणा पाकर अपने माँ-बाप, भाई-बहन, कुटुम्ब और निज देश को भी त्याग देने की चाह लड़कियों में उत्पन्न हुई। ऐसा अनुभव बाइबिल की लम्बी परम्परा में मिलता है, जब ईश्वर ने अब्राहम, मूसा, एलियस, इसायस, जैसे नबियों को अपनी सेवा के लिए बुलाया। अन्ना बेर्नादेत्त और उनकी तीन सहेलियों के पूर्व और कुछ अन्य उदाहरण न था, जिसके अनुसार ये लड़कियाँ अपने जीवन का चुनाव करतीं। इसी से प्रमाणित होता है कि आज भी ईश्वर अपनी व कलीसिया की सेवा के लिए कुछ लोगों को विशेष तरीके से आमंत्रित करते हैं। इसे समर्पित जीवन कहा जाता है, जिसकी विशेषताएँ, अर्थात् शुद्धता, निर्धनता और आज्ञापालन की अभिलाषा यहीं से प्रस्फुटित होती है। (देखिए - संविधान नम्बर 16 से 32 तक)

लगे कि क्या तमाशे की बात है, यह तो हो ही नहीं सकती है। [11]कई फादर भी इन लड़कियों के माता-पिता से कहते थे कि आप लोग किस प्रकार के हैं, जो अपनी बेटियों को इस देश के नियम के विरुद्ध चलने देते हैं सो खबरदार, ऐसा मत होने दीजिए। [12]अपनी बेटियों को सकताई से चलाइये और बेंत मारने से भी पीछे मत हटिए। [13]अगर आप लोग उन्हें अपने मतलबों से चलने देंगे, तो हमारे मिशन का काम बिल्कुल रुक जायगा। [14]हाँ शायद 20 या 30 वर्षों के बाद केवल यह बात हो सकेगी, पर अभी नहीं, इत्यादि। [15]यहाँ एक बात बतलाई जाती है - जब हम लोग स्कूल की छुट्टी में घर गई थीं, तो पिता ने कहा कि देख बेटियो, मैं रोमन लिपि सीखना चाहता हूँ। [16]हाँ कुछ-कुछ अक्षरों को पहचानता हूँ, पर चिट्ठी लिखना-पढ़ना मुझे नहीं आता। [17]इधर-उधर के फादरों से मुझे कुछ चिट्ठी इत्यादि आती है, तो मैं अपने से उसे पढ़ नहीं सकता हूँ। [18]बात ही बात में एक रोज किसी फादर से पिता के लिए चिट्ठी आई, तो उन्होंने खोल कर देखा कि रोमन लिपि में लिखित है, तो मुझे पुकार कर कहा कि "बेटी जरा इसे पढ़कर सुना दे"। [19]तब बेटी ने उस के हाथ से चिट्ठी लेकर पढ़ना शुरु किया। [20]आरम्भ में तो किसी मुकदम्मे के विषय में बात थी, पर पीछे केवल अपनी बेटियों की ओर से पिता को घुड़की दी गई थी। [21]पिता इतने दु:खित हुए कि चिट्ठी की पढ़ाई खत्म होते ही कहने लगे कि "बस-बस अब मुझे सब कुछ ठीक मालूम हो गया है"। [22]इतना कहकर मेरे हाथ से चिट्ठी ले लिया। [23]बाद में मौका पाकर बेटी से कहने लगे कि अभी तुम को अपने से ठीक मालूम हुआ है, इसलिए तुम अपना मतलब बदल डालो। [24]बेचारे माता-पिता को बड़ा मुश्किल हो गया, वे क्या कर सकेंगे? [25]लड़कियाँ तो इधर अपने मतलबों में ढीठ रहती हैं और उधर चारों ओर से उन्हें नाना प्रकार की निन्दा सुननी पड़ती हैं। [26]फादर लोग भी लड़कियों को अपने मतलबों से डिगाने के लिए खूब कोशिश किये। [27]वे उधर से कई बार लड़कों को मदरों के पास भेजते थे, यह देखने और पूछने के लिए कि वे उन से विवाह करें। [28]मदर, हम लोगों को एक-एक करके उन के सम्मुख लाकर पूछती थी कि शादी करना चाहती है या नहीं? [29]अन्त में एक रोज सहा न जाने से मेरे मुँह से यह बात निकली, कि मदर आप को खूब मालूम है, कि मैं विवाह करना ही नहीं चाहती हूँ और इसलिए मुझे ऐसे लड़कों के पास ले आना ठीक नहीं बुझाता है। [30]भला आप तो हमारे देश का दस्तूर नहीं जानती हैं, यह सच बात है, परन्तु क्या ये लड़के भी नहीं जानते हैं? [31]मैं स्कूल की लड़की तो हूँ, यह सच बात है पर याद करना है कि

मैं अनाथ नहीं हूँ। [32]अगर अनाथ होती तो स्कूल में रहते ही मुझ पर आप लोगों का पूरा अधिकार रहता। [33]फिर ये लड़के क्यों यहाँ आते हैं लड़की चुन लेने के लिए। [34]हम या कोई दूसरी लड़की, उन का बाहिरी रूप-रंग देख कर हाँ हूँ करेंगी? [35]लड़की क्या जानती है कि वह कैसे दिल या स्वभाव का है और फिर उस के घराने में कैसे-कैसे लोग हैं, इत्यादि। [36]यह सब कुछ तो माता-पिता और भाई-कुटुम्बों से मिलकर[9] विचार करना होता है। [37]इसमें बन्दोबस्त ठीक-ठीक बने या बिगड़े, सो उन का काम है। [38]आप लोग कृपा करके मुझे लड़कों के पास फिर कभी मत लाइये। [39]मैं साफ से कहती हूँ कि शादी नहीं करूँगी।

[9] कुड़ुख़ समाज में प्रथा के अनुसार लड़के के परिवार वाले लड़की के परिवार वालों से मिलकर उनकी शादी का बन्दोबस्त करते हैं। यही कारण है कि लड़कों को सीधे लड़कियों के पास आकर विवाह का प्रस्ताव करना या फादरों व मदरों के द्वारा कराना, अपने में एक नयी बात थी। इस निर्णय से यही पता चलता है कि समाज की परम्परा को यथासंभव धर्मसंघ की संस्कृति के रूप में रखा गया है।

अध्याय 2

बुलाहट की चुनौतियाँ

2.1 काथलिक कलीसिया से

6. [1]अन्त में जब सब प्रयत्न निष्फल ठहरा, तो फादर लोगों ने कलकत्ता के आर्चबिशप पौल गूथल्स के यहाँ नालिश करके कहा कि देखिये हमारे मिशन के कामों में ऐसी-ऐसी हालत हो रही है। [2]अगर यह काम शुरू से न रोका जाए, तो हम लोगों का सब काम बिगड़ जाएगा। [3]अभी छोटानागपुर में शुरू-शुरू ही काथलिक धर्म स्थापित होने की चारों ओर बड़ी धूम मच रही है। [4]लड़कियाँ यदि इस तरह की बेवकूफी का काम करें, कहकर कि हम शादी न करेंगी और हम कुँवारी रहेंगी, इत्यादि, तो कैसे बनेगा।[10] [5]आदमी लोग अपनी-अपनी बेटियों को स्कूल भेजना पसन्द न करेंगे इस डर से कि कहीं उन की लड़कियाँ भी आगे वालों की राह पर चलना चाहेंगी। [6]आप कृपा करके यह कीजिये कि जो-जो लड़कियाँ इस मन की हों, उन्हें स्कूल से निकालकर घर भेज दीजिए, तो ठीक होगा। [7]हम लोग सोचते हैं कि ये लड़कियाँ मदरों से बहुत ही लाड़ प्यार पाती हैं और शायद इसी कारण उन्हें नहीं छोड़ना चाहती हैं।

7. [1]जरूर ऐसी खबर पाकर प्यारे आर्चबिशप,[11]ने जो धर्म फैलाने हेतु तेजस्वी थे, शीघ्र यह आदेश निकाला[12] कि जो-जो लड़कियाँ शादी करना न चाहती हैं, वे स्कूल से निकाल दी जाएँ। [2]ऐसी परिस्थिति में प्यारी लोरेटो की मदरें इस आज्ञा को कैसे न मानें। [3]जरुर क्या फादर और मदर लोग हम लोगों को प्यार नहीं करते थे? [4]निश्चय प्रेम करते थे। [5]हाँ सच्चाई से दिल खोलकर स्वीकार करती हैं कि माता-पिता से भी बढ़कर प्रेम करते थे। [6]इसमें हमारी बात के माने यह नहीं कि प्रत्येक फादर और मदर ही ऐसे हैं। [7] दुनिया में कहाँ सुख और चैन

---

[10] छोटानागपुर व कुड़ुख़ संस्कृति के अनुसार एक व्यक्ति का विवाह न करना, अपने में आशातीत था, जैसे बाइबिल के पुराने नियम में भी था। अत: लड़कियों का यह अपना निर्णय समाज के लिए एकदम नयी बात थी।

[11] उस समय आर्चबिशप कलकत्ता में रहते थे, जिनका नाम था महामान्यवर पौल गूथल्स, ये॰ सं॰।

[12] काथलिक कलीसिया की दृष्टि से भी इतने कम पढ़े हुओं को धर्मसंघी बनाना स्वीकार्य न था तथा नियम है कि धर्मसंघी बनने के लिए कम से कम पाँच वर्षों के लिए विश्वासमय जीवन का अनुभव हो। ऊपर से ये पहली हैं, जो धर्मसंघ में प्रवेश करने की अपनी इच्छा प्रकट कर रही थीं।

पूरा हो सकता है, यहाँ पारादीस (स्वर्ग) कैसे हो? [8]जहाँ दु:ख और लड़ाई है, वहाँ चैन और जीत होती है। [9]परमेश्वर ही ने यह सब होने दिया है।

8. [1]प्यारी मदर लोग अपनी प्यारी लड़कियों को पास बुलाकर प्यारे आर्चबिशप का हुक्म कह सुनाईं व समझाईं और प्रेम से आशीर्वाद देकर स्कूल से विदा कर दीं। [2]अब बेचारी बेर्नादेत्त करे क्या? [3]आह मारती, आँसू की धारा बहाती हुई सिसक-सिसक रो-रो कलप-कलप कर घर चली गई। [4]अब हम लोग किस के पास जायें कि हमें आड़ और दिलासा मिले? [5]प्यारे आर्चबिशप, फादर और मदर लोग सब के सब प्राय: सहमत थे। [6]प्यारे फादर और मदर लोगों का दिल तो चूर्ण-सा हो गया, तौभी वे हमारी आत्मिक भलाई के प्रेम से उस दु:ख को ईश्वर के पास चढ़ाए हैं। [7]घर में भी प्रतिदिन माता-पिता, भाई-बहन, कुटुम्ब और साथियों की ओर से हमेशा दिल की चूर्णता। [8]सारी पृथ्वी जैसे हमारे लिये अंधेरी रात बन गई थी। [9]ऐसी निराश-दशा में दिल बिल्कुल सूख गया व मुँह मलीन। [10]सब काम करने और खान-पान की रुचि जाती रही। [11]ऐसी दुर्दशा पर घर में रहते ही मैंने तीन बार पिता को चिट्ठी के द्वारा तेज अर्जी विनती की, कि हे बाप, आप दया करके हमलोगों के वास्ते फादरों से बात विचार करके ठीक कीजिये, जिसमें हमलोग ईश्वर की सेवा के वास्ते सदा कुँवारी रह सकें। [12]हम लोग निर्बुद्धि के कारण से सिस्टर हो नहीं सकती हैं, तो मदरों की सेवा अवश्य कर सकेंगी। [13]पिता चिट्ठी का उत्तर कभी न दिये और सदा अनजान से रह गये। [14]कई दिनों तक चिट्ठी के जवाब का आसरा देखती-देखती थक गई। [15]अन्त में एक रोज सांझ को पाँच-सात की हाजिरी में पिता से अर्ज करने लगी। [16]तब पिता समझा कर कहने लगे कि "बेटी तुम्हारी हठ-जिद्दाई अजीब तरह की है, सो हम नहीं बूझ सकते हैं। [17]तुम कहाँ तक मूर्ख उल्लु हो! [18]पशु जानवर तो नौ-नौ दहि-ताता, हड़िरे-गुतुरे[13] को समझता है, पर तुम लोग नहीं बूझती हो। [19]देखो तुम लोगों के कारण से सब कोई हम पर थूकते हैं, चारों ओर की निन्दा और शर्म से हमारा माथा, झुक जाता है, सो तुम्हें न मालूम?

9. [1]देखो यहाँ लूथरन धर्म में भी कई एक लड़कियाँ शादी न करेंगी कहकर कुछ वर्षों तक रही थीं, पर पीछे वे एक न बचीं, सब के सब खराब, बर्बाद हुई हैं। [2]तुम मेरी बातों को सुनकर अपने मतलब को एकदम बदल डालो, नहीं तो और ही ज्यादा ढीठ करके मन मोताबिक चलकर बर्बाद होवोगे तो मैं सच्चाई

---

[13] ये पशुओं को हाँकने की बोलियाँ हैं, जिनका प्रयोग यहाँ के किसान करते हैं।

से कह देता हूँ कि मैं तुम्हें अपने निज हाथों से ही बन्दूक या पिस्तौल से मार दूँगा या तलवार से काट टुकड़े कर मैं अपना निज जान भी मारूँगा। [3]पिता की इन बातों को सुन मैं वहाँ से दूर हो एक अंधेरी कोठरी में जाकर खूब आँसू की धारा बहाई और बिना खाये-पीये ही पलंग पर लेट गई। [4]घर के लोग मुझे खाने के लिये बहुत बार पुकारे, परन्तु मैं अनसुनी-सी हो रही। [5]जब मैं न उठी तो वे सोचे कि अब वह पूरे तौर से सो गई है और मुझे छोड़ दिये। [6]वे बाहर बैठ कर आपस में तरह-तरह की बातें करने लगे, सो सब मैं चुपके से सुन ली। [7]घराने के लोग मूर्ख अनपढ़ तो नहीं थे, वे शिक्षित थे और धर्म के भी जानकार। [8]इस कारण उनमें से कई कहने लगे कि लड़कियों का विचार बहुत-बहुत ही उत्तम तो है। [9]कोई दूसरा कहता कि हमारी स्वदेशीय बेटी बहनों के लिये जीवन भर कुँवारी रहना असम्भव ही है। [10]कोई तीसरा कहता कि बचपन और नवयुवास्था में उन का जी हर तरह के सुख से परिपूर्ण है, माता-पिता, भाई-बहन और कुटुम्बों का प्रेम, पालन-पोषण, कपड़ा-लत्ता सब कुछ ठीक है, इसलिए वे भविष्य के सुख-दु:ख से अनजान हैं। [11]चौथा कहने लगा, कि अब इतने दिनों तक जो बात हुई सो हो गई है, अब ये सब बातों को फिर मुँह में न लाना, बल्कि बड़े प्यार दुलार के साथ उन्हें चलाना चाहिए और उन को व्यस्त रखने के लिये सोनार से कुछ-कुछ गहना सिंगार बनवा कर लड़कियों को पहिनाना उचित है, इत्यादि। [12]ऐसे कहकर वे एक दिन सोनार को घर में बुलाये और उसे गहने का नाप और नमूने देकर बोले कि तुम जल्दी से बनाकर लाना। [13]वह तब जाकर आठ-दस दिन में तैयार करके लाया। [14]जब लड़की ने सोनार को आते देखा, तब वह जल्दी से बगान की झाड़ तले जा छिपी हुई बैठकर चुपचाप से वहाँ रोने लगी, यह सोचकर कि अभी मुझ पर और एक परीक्षा आ पहुँची है। [15]इधर माता-पिता लड़की की खोज में लग जाकर उसे पुकारने लगे, पर कहीं उस का पता नहीं। [16]तब ऐसा कुछ देर तक वे लड़की का आसरा देखते रहे पर वह न आयी, सो वे सोनार के हाथ से गहनों को लेकर उसे विदा किये। [17]पड़ोस की सलोमी नामक एक बूढ़ी, छोटी-छोटी लकड़ी चुनती हुई वहाँ आ पहुँची, जहाँ लड़की छिपी बैठी थी। [18]उसे देख कर बूढ़ी बोल उठी! [19]तू यहाँ क्यों छिपी बैठी रो रही है? [20]घर के लोग तुम्हारी खोज में हैं। [21]वे लोग सोनार से कुछ-कुछ गहना बनवाए और तुझे पहनाना चाहते है। [22]लड़की ने उत्तर दिया, "माँ, मैं गहने पहनना पसन्द न करती हूँ क्योंकि उस से मेरा दिल और आत्मा

दुनिया[14] की ओर झुक कर अन्त में बर्बाद हो जाएगा''। [23]बूढ़ी फिर कहने लगी कि नहीं-नहीं बेटी, कुछ न होगा, माता-पिता बड़े प्रेम से देते हैं, तुम अभी जवान हो और अब तक तेरे हाथ और कानों में सिंगार नहीं है, यह ठीक न लगता, इसलिए माँ-बाप जो देते हैं सो प्यार से लेना उचित है, इत्यादि। [24]लड़की ने फिर कहा, हे बूढ़ी माँ! मुझ पर दया कीजिए और मेरी मध्यस्थ होकर माता-पिता से कह दीजिए कि मैं उन्हें सारे जी जान से सब कुछ के लिए खूब-खूब धन्यवाद देती हूँ और सदा देती रहूँगी, परन्तु मैं शादी करना और गहना-सिंगार पहनना मंजूर नहीं करती हूँ। [25]मैं देखती हूँ कि माँ-बाप मुझे बहुत ही प्रेम करते हैं, पर इन विषयों में मैं उन की इच्छा कभी न मानूँगी। [26]मैं तुरन्त उनके पास जाना ठीक नहीं समझती हूँ क्योंकि उन से अभी कुछ बोलूँ तो वे बहुत ही रुष्ट होवेंगे। [27]इस तरह आपस में बातचीत करने के बाद बूढ़ी, लड़की की बातों में सहमत हो उठ खड़ी हुई और अपनी लकड़ियों को लेकर घर चली गई। [28]लकड़ियों को घर में रखकर सीधे माँ-बाप के पास गई और उन से कहने लगी कि देखिये, आप लोग बेटी को ज्यादा दिक न देना, वह झाड़ी में छिप कर बहुत रोती कलपती है। [29]मैं ने उसे खूब-खूब समझाया पर वह न मानती है। [30]वह बोलती है कि शादी न करूँगी, गहने न लूँगी, जो चाहती हैं वे पहन सकती हैं। [31]ऐसी-ऐसी बातें बोलती है सो आप लोग उसे रहने दीजिए, शायद बाद में आप लोगों की बात मान जाएगी, नहीं तो जोर जुल्म करने से कहीं चल देगी तो अधिक दुःख का कारण होगा, इत्यादि। [32]इस बूढ़ी के मुख से खबर पाकर तुरन्त माँ और कोई-कोई जाकर लड़की को वहाँ से निकाल लाए और हाथ-मुँह धुलवाकर खाना-पीना दिये। [33]खाना हो चुकने के बाद कोई-कोई बहुत ही लड़की को

---

14 लड़कियों का गहना न पहनने का कारण स्पष्ट था, कि वे अपनी आत्मा को बर्बाद नहीं करना चाहती थीं। अपनी आत्मा को बचाने के लिए दुनिया के भोग-विलास के प्रति अनासक्ति व विरक्ति आध्यात्मिकता में बढ़ने का लक्षण है, जो विशेष वरदान के रूप में ईश्वर से मिलता है। येसु ने जब प्रेरितों को बुलाया, तो वे भी तुरन्त अपना सब कुछ छोड़कर येसु के पीछे हो लिए। यही लक्षण दिखाता है, कि जो बुलाये जाते हैं, उनके लिए विरक्ति का जीवन बोझ नहीं, वरन् हल्केपन व शान्ति का कारण होता है। यह विवेक उन लड़कियों को केवल मदरों के उदाहरण से मिला। यही कारण है कि जो त्याग के नियम बनते हैं, इसी आध्यात्मिकता को बनाये रखने के लिए बनते हैं। (देखिए - संत अन्ना की पुत्रियों के धर्मसंघ की निर्देशिका राँची 2019, नम्बर 50. क से ढ तक)

तुच्छ करने लगे, कहकर कि भला इस का तमाशा तो देखिए। [34]झाड़ी के भीतर जाकर ऐसी रोती-कलपती है, इसलिए कि माँ-बाप उसे सिंगार देना चाहते हैं। [35]हम सब कोई कैसे चाहते हैं कि हम को दिया जाए और वह खाना-पीना छोड़कर कूढ़ती है। [36]यह निपट पागल मूर्ख नहीं तो और क्या है, पर लड़की उन की बातों की कुछ भी परवाह न की।

2.2 लूथरन कलीसिया से

पूर्णप्रसाद किस्पोट्टा का परिवार

10. [1]यहाँ कुछ बात लिखना उचित जान पड़ता है - पूर्णप्रसाद घराना समेत पहले लूथरन था। [2]जब कई एक काथलिक फादर लोग पहले-पहल छोटानागपुर में आए तो उनसे मुलाकत होकर उनके मुख से सच्ची धर्म की बात सुनकर वह और दूसरे बहुतेरों ने काथलिक गिरजा में भर्ती होने की तेज इच्छा प्रगट की। [3]इसी कारण लूथरन साहब और सब दूसरे बड़े-बड़े लोग डाह से जल के उन के विरोधी हो गए हैं। [4]वे नाना प्रकार के दोष पूर्णप्रसाद पर लगा के उन्हें अपने मिशन के डेराखाने से निकाल दिये। [5]वर्षा के दिनों में बेचारा अपनी स्त्री बाल-बच्चों को लेकर कहाँ जायेगा? [6]तिस पर भी जुल्म से निकाला गया। [7]वह इधर-उधर भटकता फिरता, एक गरीब बढ़ई के यहाँ डेवढ़ी में डेरा पाया। [8]आँधी पानी से बचाव के लिए बाँस की ठठरी बाँध कर रहने लगा, जब तक कि वह आप कुछ जमीन मोल लेकर घर न बनाया। [9]अब जो बढ़ई ने

बेचारा पूर्णप्रसाद को डेरा करने की जगह दी[15] थी, उसे भी लूथरन लोग बैरी जानने लगे। [10]ऐसा तब रकम-रकम की निन्दा दोष लगाकर एक एतवार को अपनी बड़ी गिरजा में सभों के सम्मुख जोर से पुकार दिया गया कि आज की तारीख से फलाने-फलाने नाम के लोग (छः जन) मंडली से बाहर किये जाते हैं, सो कोई भी उन के साथ उठना-बैठना, चूना तम्बाकू और खान-पान, उन से हाथ मिलावट करना या नमस्कार तक भी मना किया जाता है। [11]यदि कोई यह आज्ञा न माने तो उन्हें भी भारी सजा होगी। [12]इस हुक्म को सुनाने के बाद वे इतनी कड़ाई करने लगे कि जो कोई जरा से भी अपने को काथलिक दिखावे या रोमी पादरियों से बात करते दिखे, उन्हें मिशन के हाते में पैर धरने तक न देते थे। [13]अगर कोई जरा से प्रवेश करे तो उन्हें अपने चौकीदारों के द्वारा खदेड़ देते थे। [14]जब इतना सख्त हुक्म जारी किया गया, तब बेचारे भाई-कुटुम्ब और साथी लोग क्या कर सकेंगे। [15]सब कोई तो बुरे नहीं थे पर जब कभी अवसर पाते तो बहुधा एकान्त में और विशेषकर रात में भेंट मुलाकत करने पाते थे। [16]दिन भर लोगों के सामने बैर भाव और घृणा की दृष्टि ऊपरी मन से दिखाते थे। [17]हाँ बहुतेरे बिषैले नाग के सरीखे थे, जो सदा ताकते रहते थे कि इन्हें नाश कर डाले। [18]तौभी ईश्वर की बड़ी दया से काथलिक नौ चेले उनकी कुछ परवाह न किए हैं।

11. [1]कुछ पीछे तब प्यारे फादर लीवन्स आये, डूरंडा में टिक कर एतवार-एतवार ठड़पखना के एक बंगलो में पवित्र-मिस्सा किया करते थे। [2]पूर्णप्रसाद और कई दूसरे-दूसरे फादर के साथ बातचीत करके और भी प्रगट रूप से काथलिक हो गये।

12. [1]ख्रीस्त आनन्दित रूथ पूर्णप्रसाद की जेठी बेटी लूथरन स्कूल में थी। [2]उस की छोटी बेटी को उम्र के कारण पिता शुरु में उस पर इतना ध्यान न दिया पर उसे सीखने के लिये वहीं छोड़ दिया था। [3]जब लड़की नौ-दस वर्ष की हुई

---

[15] उस समय लूथरन और काथलिक विश्वासियों के बीच सामान्यतः आदान-प्रदान नहीं होता था। यह विभाजन सोलहवीं सदी के आरंभ से यूरोप में हुआ था, जिसका प्रभाव छोटानागपुर की कलीसिया में भी दिखाई दिया, जब संस्थापिका का जन्म हुआ था। अतः पूर्णप्रसाद का सपरिवार काथलिक बनना अपने में बहुत बड़ा कदम था। केवल द्वितीय वाटिकन परिषद (1962-1965) के बाद से रोमन ख्रीस्तीयों की एकता आन्दोलन सक्रिय है। उसके बाद विश्वास की समझ अब एक होती जा रही है। वास्तव में दोनों कलीसियाओं की एक ही जड़ है - एक ही ख्रीस्त, एक ही बाइबिल तथा बपतिस्मा भी एक है।

तब लूथरन धर्म दिल में गहरी जड़ जमने लगा। [4]अपने माता-पिता का धर्म छोड़ना और काथलिक होने का पूरा पता उसे मालूम हो गया। [5]वह दिल में बहुत ही दु:खी हो कुछ उपाय सोचने लगी। [6]अन्त में एक दिन लूथरन साहेब, जो स्कूल की रक्षा किया करते, उन्हीं के पास जाकर सिर नवाए, उन की पाल-पुत्री होना स्वीकार किया[16] और रहने लगी। [7]जब-जब स्कूल से कुछ अवसर पाती, तब-तब माँ-बाप के पास दौड़ जाकर उन्हें बहुतेरा समझाया करती थी, बोलकर कि आप क्यों रोमी धर्म में प्रवेश किए हैं। [8]सारी मंडली आप लोगों को तुच्छ और घृणा करती है सो समझ लीजिये कि ईश्वर ही आप लोगों को घृणा करता है। [9]इतने धर्म की बातों को जानने पर भी जान बूझ कर नरक में जाने माँगते हैं। [10]मैं सुनती हूँ कि रोमन पादरी लोग आये हैं। [11]वे अच्छे आदमी नहीं हैं। [12]लम्बे-लम्बे वस्त्र पहिनते, गली कोचा में घूमते-फिरते और बिल्कुल झूठे धर्म का प्रचार करते हैं। [13]फिर वे नाना प्रकार की मूर्तियों और तस्वीरों को रखते और मरिया को ईश्वर कहकर मानते और पूजा करते हैं, उनके सामने बत्ती जलाते और फूल इत्यादि चढ़ाते हैं। [14]आप लोग खबरदार रहिये, ऐसे ईश्वर विरोधी धर्म पर कभी न रहना चाहिये। [15]अपने किये पर पछतावा करके तुरन्त ही अगले धर्म में लौट आइये। [16]सारी मंडली के सामने क्षमा और दया माँगिये तो सब कुछ ठीक होगा, इत्यादि। [17]बार-बार लड़की ऐसी कहती जाती थी, पर वे इस की एक न सुनकर सब कोई हँस उठते थे। [18]उल्टे उसी को काथलिक बनने को उसकाते थे। [19]जब-जब लड़की को किताब पकड़ी हुई आती देखते, तब-तब घराने के लोग हँस के बोल उठते थे कि जल्दी-जल्दी उपदेश सुनने के लिए आइये, क्योंकि लूथरन प्रेरितिन आयी है और खाली ठट्ठबाजी में उड़ाते थे। [20]ऐसी हालत देखकर मैं नाराज हो उन से कही कि यदि आप लोग ऐसे लापरवाही होकर मेरी एक न सुनते हैं, तो मैं ही आप लोगों से अलग हो जाती हूँ। [21]आज से लेके आप लोग मुझे कभी अपनी याद तक भी न लाना। [22]ऐसी बातें उच्चार के आगे से निकल गई और अन्दाजी ढाई वर्षों तक फिर स्कूल में रह गई।

---

16 लूथरन कलीसिया का बेथसदा स्कूल 1852 में स्थापित हो चुका था, जहाँ आरंभ में बच्चे और बच्चियाँ एक साथ पढ़ते थे। बाद में लड़कों के लिए अलग स्कूल खोला गया। शुरू से ही उनके लिए छात्रावास की व्यवस्था थी, अत: दूर-दूर से बच्चे आकर वहाँ पढ़ते थे। यही कारण है कि पूर्णप्रसाद भी अपनी बेटियों को पढ़ाने के उद्देश्य से उसी स्कूल में दाखिला कराया।

13. [1]बेचारी निर्बुद्धि लड़की! वह कैसे जानेगी कि कौन धर्म सच और कौन धर्म झूठा है। [2]केवल इतना मालूम कर सकती है जितना शिक्षकों के द्वारा सुनी और झूठी किताबों से पढ़ी। [3]माता-पिता लड़की की चाल-ढाल देखकर बड़ी चिन्ता में पड़े। [4]उस के मन को काथलिक धर्म की ओर लाने के मतलब से वे कई बार छोटा पवित्र क्रूस, तस्वीर, स्कापूलर और रोजरी देते थे, परन्तु शिक्षक लोग पवित्र क्रूस और तस्वीरों को अपने लिए रख देते और बाकी सब रोमी धर्म की क्या झन्त्र-मन्त्र चीजें हैं कह कर आँखों के सामने सब जला देते थे। [5]इन सब करतूतों को देखने से दिल में और अधिक काथलिक धर्म की ओर घृणा उत्पन्न होती थी। [6]बात की बात में पूर्णप्रसाद अपनी बेटी को उस स्कूल से निकालने की तेज अभिलाषा से कई मित्रों को साथ लिये लूथरन साहब के पास गये। [7]साहब उन्हें आते देख दूर से ही बाघ के समान गरज कर कहने लगे कि ''तुम कौन हो, क्यों बिना छुट्टी पाये यहाँ हमारे अहाते को अशुद्ध करने के लिये आते हो। [8]सीधे उल्टे पाँव फिर जाओ, नहीं तो मैं तुम्हें चाबुक लगाऊँगा। [9]चौकीदार! हे चौकीदार! इन रोमन लोगों को यहाँ से निकाल दो।'' [10]पिता ने उत्तर दिया कि मैं अपनी लड़की के लिए छुट्टी चाहता हूँ। साहब बोल उठा, ''कि तुम चोर है, अपनी बेटी को अपने धर्म से निकाल लेकर नष्ट करना चाहते हो, यहाँ से निकल कर एकदम चले जाओ''। [11]बंगलो के पास इतना कोलाहल सुन हम लोग सब चौंक पड़ीं, पिता अपने पाँचों साथियों समेत स्कूल के निकट आकर पुकारने लगा ''हे बेटी ख्रिस्त आनन्दित रूथ, निकल आ हम तुझ को लेने आए हैं।'' [12]बेचारी लड़की डर से थर-थर काँपती रोती हुई कमरे के अन्दर कोने में जा दुबक बैठी और रोने लगी। [13]तब किसी दूसरे के मुख द्वारा कहला भेजी कि मैं कभी रोमन काथलिक न हूँगी। [14]पिता बहुत जुल्म करने पर था, किन्तु साहब और चौकीदार ने उसे हटा दिया। [15]पिता का दिल अफसोच से चूर्ण होने लगा, क्योंकि फादर लोग उसे कह दिये कि जब तक आप की बेटी प्रोटेस्टन्ट स्कूल में रहेगी, तब तक आप को पवित्र साक्रमेन्त न मिल सकता है। [16]बेचारा पिता क्या करेगा, उस का दिल इधर दु:ख से पीसा जाता है, और उधर उस की बेटी अपनी ढिट्ठाई में स्थिर रहती है। [17]पिता अपनी दूसरी बेटी सुशीला नामक, उसे भी कभी-कभी भेजा करता था, कहकर कि तू जाके अपनी बड़ी बहन को बुला ला, पर वह क्या करेगी, आती तो थी और बहन से बोलती थी कि चलिए बाप कुछ काम के लिये बुला रहे हैं, किन्तु वह न सुनती थी! [18]उल्टे उसी को वहाँ से दूर-दुरा कर भगा देती थी। [19]कुछ काल बीते पिता फिर कई एक फादरों

को साथ लिये लूथरन साहब के पास गया। [20]फादर लोग बड़े आदर से उस को प्रणाम किये हैं परन्तु वह शुरु में एक दम रोस भरे शब्दों से बड़बड़ाने लगा। [21]तब कुछ पीछे शान्त भाव से बोलने लगा। [22]फादर लोग उसे खूब समझाये कि पूर्णप्रसाद की लड़की, यहाँ आप के स्कूल में है। [23]उस की उम्र छोटी होने के कारण वह बिल्कुल पिता के अधीन में है। [24]अगर आप लोग उसे अपने यहाँ रोक रखेंगे तो वह अदालत द्वारा अपनी लड़की को ले जा सकता है, इत्यादि। [25]साहब ने कहा कि अभी रहने दीजिए, जब स्कूल की छुट्टी होगी तब देखा जाएगा। [26]बाप फिर मान कर चुपचाप चला गया। [27]जब स्कूल की छुट्टी हुई तो लड़की सीधे गाँव चली गई। [28]वहाँ जाकर देखती क्या, कि घराने के सब लोग काथलिक होने पर हैं। [29]उन्हें भी बहुतेरा समझाया पर कुछ न हुआ। [30]वे सब एक शोर से पिता ही की करतूत बतलाये। [31]अन्त में यह सोच कर कि पिता ही को पहले ठीक से समझाना होगा, तब केवल बनेगा कह कर राँची लौट आकर बाप के यहाँ रहने लगी। [32]घर में रहते वक्त बारम्बार धर्मविषय पर वाद-विवाद होता रहा। [33]एतवार-एतवार और पर्व दिनों पर घराने के लोग पवित्र-मिस्सा सुनने को आते थे, परन्तु यह ढीठ लड़की सदा ही लूथरन गिरजा जाया करती थी। [34]एक एतवार को गिरजा हो चुकने के बाद अपनी संगियों से दु:ख-सुख की बातें करते-करते गुजरने में चार-पाँच शिक्षकों से मुलाकत हुई। [35]वे भी उस से सब हाल पूछने लगे। [36]बात करते-करते एक दो जन कहने लगे कि असल में रोमन काथलिक धर्म ही सच्चा धर्म है, क्योंकि यीसु ख्रीस्त से सिखाई हुई शुरु गिरजा तो वही है। [37]उसमें एक पोप स्वामी होता है, और उसी के अधीन सारी गिरजा चलती है। [38]यह बात उन के मुख से निकलते ही आपस में रगड़ा-झगड़ा होने लगा। [39]इतने में एक कहने लगा कि हे भाई हम लोग तो शिक्षक हैं, नाना प्रकार की किताबें पढ़ते हैं। [40]कुछ ध्यान देकर पढ़ने से पूरा मालूम होता है कि रोमन काथलिक धर्म ही सच्चा है। [41]हाँ पर लाचार होकर हमें कहना पड़ता है कि जहाँ जीना वहाँ मरना, पेट ही के लिये तो हमलोग लूथरन हैं जौभी ठीक से जानते हैं कि यह धर्म झूठा है। [42]पूर्णप्रसाद ठीक किया कि उन लोग घराने समेत काथलिक हुए हैं, केवल यह बेचारी लड़की बाकी बची है। [43]कोयल पक्षी की तरह होती है जो इस बगीचे से उस बगीचे, इस पेड़ से उस पेड़ पर उड़ती-फिरती, इस खोज में कि कहाँ मुझे सबसे मीठा रसवाला आम फल-फूल मिले, इत्यादि। [44]जब लड़की उनकी बात सुन चुकी, तो मन ही मन बहुत घबराने लगी। [45]घर जाकर पहले से और अधिक ध्यान देकर काथलिक धर्म की

चाल-ढाल देखने लगी। [46]संयोग से एक दिन ऐसा हुआ कि लड़की घर पर रहते ही कई एक फादर लोग बाप के यहाँ आने लगे। [47]उन के आने की खबर लड़की के कानों में पड़ते ही उसने यह सोचा कि शायद मुझे जबरदस्त से काथलिक बनावेंगे, कहकर चुपचाप से एकान्त में जा छिपी। [48]जब फादर लोग घर पहुँचे तो सब कोई घराने के लोग हाँ, आसपास के लोग भी, उनके पास आकर सुन्दर से बातें करने लगे। [49]तब यह मोरा कोने में छिपी हुई लड़की दरवाजे के निकट जा आँखें चुरा-चुरा कर देखने और उनकी बातों को सुनने लगी। [50]उस के देखने और सुनने का यह मतलब था, कि लोग कहते हैं कि रोमन पादरी लोग ठीक आदमी नहीं हैं। [51]सदा इधर-उधर अपना झूठा धर्म प्रचार करते हैं और रुपये दे देकर लोगों को बहकाते हैं, इत्यादि, सो मैं ठीक से अपने आप इस बात की परीक्षा करूँगी।

14. [1]पिता ने अपनी बेटी की बहुत ही खोज किया पर उस का पता न लगा। [2]जब फादर लोग निकल के कुछ दूर चले गये, तब कुछ पीछे से लड़की बाहर आयी। [3]फादर लोग इस लड़की के लिए पिता के हाथ में छोटा क्रूस, रोजरी, स्कापुलर और तस्वीर दे दिये थे। [4]लड़की पवित्र क्रूस के सिवाय और कुछ न ली। [5]इस क्रूस को अपने पास रखकर वह बारम्बार उन फादरों को याद करके मन ही मन सोचती थी कि लोग उन्हें बहुत ही नाठीक आदमी कहते हैं, परन्तु मैं तो खुद आप ही देखी और उनकी बातों को सुन चुकी हूँ। [6]वे तो बहुत आदरणीय, कोमल, मधुर वचन के तथा सभों से अत्यन्त मिलनसार-सा जान पड़ते हैं। [7]भला मैं धीरे-धीरे और-और विषयों पर देख भाल करती जाऊँगी, जब तक कि इस का पूरा पता न पाऊँ।

15. [1]अचानक से लड़की के लिये एक भाग्य दिन मिल गया। [2]पिता रोज-रोज फादरों के यहाँ कचहरी के काम के लिए आया जाया करता था। [3]तब कुछ पीछे सेवक लड़का या छोटी बहन उस के लिये भोजन पहुँचा देते थे। [4]एक रोज माँ ने कहा कि तुम दोनों बहनें साथ लगकर पिता के लिये खाना ले देना। [5]आज्ञानुसार भोजन साथ लिये दोनों बहनें चल दीं। [6]पिता ने दोनों बहनों को आते देख शीघ्र ही फादरों को खबर दिया, कहकर कि फादर देखिये आज तो मेरी बड़ी बेटी भी आ रही है, आप लोग उससे बात कर सकते हैं क्योंकि गर्मी के कारण वे लोग यहाँ ठहरेंगी और चार या पाँच बजे केवल घर लौटेंगी। [7]इस खबर को पाकर, फादर लोग, जो यीसु के प्रेम से ज्वलित हो आत्माओं को बटोरने में दिन-रात लिप्त हैं, तुरन्त ही मुझ एक कठोर अन्धी और लाचार आत्मा की खोज

में दौड़ आये हैं। [8]जब आये तब बहुत ही मृदु वाणी से बातचीत करने तथा क्रूस चिन्ह बनवाने लगे। [9]सुशीला नामक लड़की तो अच्छी तरह से क्रूस चिह्न बनाई, पर जेठी लड़की बनाये कैसी! [10]शर्मिन्दा हो आज्ञा भंग के डर से एक उँगली उठाकर चुपचाप से हवा में क्रूस का चिह्न बनायी। [11]फादर और उपस्थित वाले सब हँस पड़े और कहने लगे कि धीरे-धीरे वह भी बहन के समान सीखेगी तब जानेगी। [12]ऐसा ही कुछ दिन होता चला कि स्कूल की छुट्टी के दिन पूरे हो गये। [13]लड़की बिना फीस के फिर लूथरन स्कूल में ग्रहण की गई। [14]स्कूल के प्रधानों ने फीस के लिये अर्जी किया तो लड़की ने बतलाया कि पिता की इच्छा के बिना, मैं आप ही चली आई हूँ। [15]ऐसी बातों को सुनकर अत्यन्त ही मगन हो उसे मिशन की पालक पुत्री-सा रख लिये और सब विषयों में उस की अधिक चिन्ता किया करते थे। [16]जौभी लड़की को स्कूल में कुछ बात की भी घटी न थी, तौभी मन में और दिल में सदा डवाँडोल हो बड़ी चिन्तित रहा करती थी। [17]नाना प्रकार के पाठ विषयों पर इतना ध्यान न देकर अधिक से अधिक धर्म सिखलाई पर विशेष जाँचती थी। [18]इन्हीं दिनों में कुछ पीछे "रोमन मत खण्डन" नाम की किताब छापी गई। [19]स्कूल में काथलिक धर्म विरोधी नाना प्रकार की शिक्षा दी जाती थी। [20]लड़कियों का मन भी गड़बड़ होने लगा और प्रश्न पर प्रश्न डालने लगीं। [21]निदान शिक्षक लोग कहने लगे कि असल गिरजा तो वही है जिसे यीसु ख्रीस्त ने ठहराया है, मगर धीरे-धीरे वह बिगड़ गई। [22]लूथर मार्टिन, जो हम लोगों के धर्म का मूल आदमी हुआ, उसे फिर सुधारने के लिए बहुत-बहुत कोशिश की गई, पर कुछ बन न पड़ा, इत्यादि। [23]तब ऐसी बातों को सुनकर और तरह-तरह की सोच उत्पन्न होने लगी और आपस में बारम्बार वाद-विवाद होता रहता था।

16. [1]1890 ईस्वी के 19 मार्च को कलकत्ता से चार लोरेटो मदर लोग राँची आकर स्कूल खोलीं। [2]पूर्णप्रसाद यह सोच कर कि अपने दोनों बेटियों को मदरों के यहाँ रख दूँगा, अपनी[17] छोटी बेटी से बोला कि तू जल्दी जाकर अपनी दीदी को बुला ला। [3]उस से कह देना कि बाप आप को कुछ विशेष बात के लिए जल्दी बुलाते हैं, सो मेरे ही साथ में चली आइये। [4]बहन की बात सुन लेकर और

---

17 लोरेटो की धर्मबहनों ने जो स्कूल खोला था, वह जगह वर्तमान डॉ॰ कामिल बुल्के पथ का उर्सुलाईन कॉन्वेंट है। चूँकि 1887 में लड़कों के लिए मनरेसा हाऊस के बगल में संत जोन्स स्कूल खोला जा चुका था, येसु संघी फादरों ने लड़कियों की शिक्षा के लिए धर्मबहनों के निर्देशन को उचित समझा और उन्हें आमंत्रित किया।

घर बुलाई जाने का असल कारण जानने की तेज इच्छुक होकर वह तेज हठ करके बहन से पूछने लगी। [5]अन्त में बहिन ने सब कुछ साफ से कह दिया कि रोमन मिशन की सिस्टर लोग आई हैं, [6]उन्हीं के स्कूल में हम दोनों को रखना चाहते हैं। [7]तब सब हाजिरवाली लड़कियाँ हँस पड़ी और उसे बड़ी ठठ्बाजी में उड़ा कर वहाँ से खदेड़ दी, बोलकर कि तुम यहाँ अपनी बड़ी बहन को चुरा ले जाने आई है धत्त, तेरी रोमन भूतनी, हट! हट! भाग जा नहीं तो साहेब, मेम और चौकीदार के द्वारा धर पकड़वा के ऐसी मार मारवाएँगी कि तुम्हारा चोरनीपन निकल ही जाएगा, कहकर दुड़्दुड़ाने लगीं। [8]घर लौटकर लड़की ने पिता से सब कह सुनाई। [9]अन्त में पिता ने बेटी सुशीला और अपनी भतीजिन बेटी कृपा नामक दोनों को मदरों के स्कूल में रख दिया।

अध्याय 3

मन परिवर्तन

17. [1]अब घराने के लोग सब कोई काथलिक धर्म पर आये, पर एक मन मतलबी ढीठ लड़की अकेली लूथेरन धर्म में रह गई। [2]हाँ रह गई तो सही पर कहाँ उस का मन स्थिरता को पावेगा! [3]समुद्र के लहरों में जैसे नाव हिलती-डोलती है वैसे ही सच्चाई की खोज में इस का मन हिलता-डोलता था।

18. [1]जब स्कूल की छुट्टी फिर आ पहुँची तो लूथरन साहब और मेम लड़की से पूछने लगे कि रहोगी या घर जावोगी? [2]तो उत्तर आया कि कुछ दिन के लिये घर जाकर थोड़ा जाँच लेगी। [3]तब उन्होंने घर जाने की छुट्टी दी। [4]इन्हीं दिनों में कभी-कभी काथलिक गिरजा में पवित्र-मिस्सा के लिए आई। [5]यहाँ आकर सन्त मरिया और दूसरी-दूसरी मूर्ति, तस्वीर, फूल, बत्ती और लोबान, इत्यादि देखकर घबड़ा गई, सोचकर कि संसार वालों की तरह देव मूर्तियों को पूजते हैं, इत्यादि। [6]घर जाकर इन सब विषयों पर बहुत से पूछताछ करने लगी। [7]घर के सब कोई उसे खूब समझाये बोले कि यह संसारी पूजा नहीं है, पर सन्तों के स्मरण के लिये मूर्ति व तस्वीर रखी जाती है, इत्यादि। [8]जो आदमी राजा को प्यार से मानता है वह उसकी माँ को भी अवश्य आदर देगा। [9]फिर यह अकेला नहीं किन्तु उस के सब प्यारे लोगों का भी आदर-बड़ाई करेगा, इत्यादि। [10]यदि कोई अभी यहाँ बाप के पास आवे तो क्या उसे अकेला आदर-सत्कार से सलाम करेगा कि हम सब को भी करेगा। [11]पिता ही की ओर से माँ, बेटे-बेटियों और घराने के लोग आदर मान पाते हैं। [12]इसी भाँति, कुँवारी मरिया यीसु की माँ है और सन्त और सब दूत ईश्वर के प्रिय हैं, तो क्यों आदर न मिले। [13]पूजा के तौर पर नहीं, क्योंकि ईश्वर अकेला सब पूजा आदर के लायक हैं।

19. [1]आखिर बहुत-बहुत सोच-विचार करके लड़की समझ गई और जब दूसरी बार फिर पवित्र-मिस्सा के लिये आई तो लूर्द की निष्कलंक मरिया की मूर्ति पर ध्यानपूर्वक दृष्टि डाल के मोहित हो गई। [2]उस का मन एकदम से पलट गया और कहने लगी कि हो न हो यह धर्म सच्चा है, क्योंकि यहाँ कुँवारी मरिया का बहुत ही आदर-सत्कार दिखाई देता है। [3]हम लोगों के प्रोटेस्टन्ट धर्म में ऐसा बिल्कुल नहीं है, हाँ इसके उल्टे सन्त लोग और विशेष करके कुँवारी मरिया को घृणा और तुच्छ करते हैं। [4]अब जो भी हो कुछ परवाह नहीं है, मैं अवश्य

काथलिक बनूँगी, कहकर प्रोटेस्टन्ट गिरजा जाना बन्द कर दी। [5]यह हालत मालूम करके प्रोटेस्टन्ट पादरियों ने बिना देर किये लड़की की शिक्षक जी को दो बार भेज दिया बोलकर कि "आप जाकर उसे अच्छी तरह से समझा दीजिए, वह क्यों ऐसी पागल होती है, झूठा धर्म ग्रहण करने से क्या उसे कुछ डर नहीं लगता? [6]शीघ्र अपना मतलब बदल के उसे स्कूल आना उचित है।" [7]लड़की ने उत्तर दिया कि मैं एक बार काथलिक धर्म जानना चाहती हूँ, अगर वह असल धर्म है तो मैं निश्चय उसे ग्रहण करूँगी और फिर न लौटूँगी। [8]आप लोगों की प्रेमी शिक्षा और मिहनत के लिये मैं सारे दिल से धन्यवाद देती हूँ।

20. [1]2 जून 1890 ईस्वी में लड़की कॉन्वेंट स्कूल में भर्ती हुई। यहाँ आकर खूब आनिन्दत दिल से धर्म सीखने लगी। [2]इसके साथ पाँच प्रोटेस्टन्ट स्त्रियाँ भी शिक्षा पाकर 31 जुलाई को पहला पवित्र परमप्रसाद पायी हैं। [3]काथलिक बपतिस्मा में ख्रिस्त आनन्दित रूथ का नाम हुआ है मरिया बेर्नादेत्त, सुशीला का नाम सेसिलिया और मझला पितिया बाप की बेटी कृपा का नाम बेरोनिका व मोक्ता विधवा की बेटी का अपना ही निज नाम रह गया, अर्थात् मेरी। [4]बेरोनिका और मेरी तो आगे ही दृढ़ीकरण साक्रमेन्त पाईं, मगर मरिया बेर्नादेत्त, सेसिलिया और पिताजी को 21 फरवरी 1892 ईस्वी में, जब कलकत्ता से महामान्यवर आर्चबिशप पौल गूथल्स राँची आये थे, तब उस के हाथ से दृढ़ीकरण पाये हैं। [5]अब सब कोई काथलिक होकर दिल की बड़ी शान्ति और आराम से रहने लगे।

अध्याय 4

धर्मसंघीय बुलाहट की पहचान

21. [1]इन लड़कियों का स्कूल में प्रायः दो वर्ष न बीते कि लोग चारों ओर से शादी के लिये दिक्-दिक् करने लगे। [2]एक दिन का वर्णन है कि लोग शादी का बन्दोबस्त करने के लिये बेरोनिका को देखने आये। [3]वह एकदम से नहीं, नहीं खुश कहने लगी, पर वे एकदम न मानते थे, तो वह दौड़ जाकर एक बड़े ऊँचे पेड़ की शिखर पर जा बैठी और कहने लगी कि यहाँ से जाना है तो चले जाओ, मैं शादी करना मँजूर न करती हूँ, तौभी वे देर तक उसके लिये ठहरे थे, लेकिन वह कुछ परवाह न की। [4]खूब मजे से चिड़िया की तरह बैठी रही जब तक कि लोग अपना मुँह लिये घर न लौट गये। [5]कुछ महीने बीते, उस लड़के की शादी हो गयी लेकिन वर्ष ही के भीतर में उसका मगज अक्ल बिगड़ जाकर एकदम ही पागल हुआ और दिन-रात चारों ओर घूमता-फिरता बड़बड़ाता हुआ मर गया। [6]हम लोगों ने ईश्वर को खूब-खूब धन्यवाद दिया, क्योंकि वह बहन बेरोनिका को ऐसी शोकमय दशा से मुक्त किया है।

22. [1]ये चार लड़कियाँ जिनका नाम ऊपर बतलाया गया है वे अपने मतलब को महामान्यवर प्यारे फादर यान देस्मेत, ये॰ सं॰, के पास प्रगट किये। [2]वह अपनी शक्ति भर उन्हें मदद देने तथा उनका उत्साह बढ़ाने कभी न छोड़ा। [3]कुछ पीछे अति मान्यवर प्यारी मेरी तेरेसा, जो उन्हीं दिनों में राँची की बड़ी मदर थी, फादर देस्मेत के साथ होकर अपनी प्रेमी बात, काम और सलाहों से सदा उसकाती जाती थी। [4]फिर कुछ काल बीते मान्यवर प्यारे फादर सपार्त, फादर हागेनबेक, इन दोनों ने भी धर्मसंघीय जीवन कैसे सीधे स्वर्गीय पथ है, हमें समझाने में अटल रहे। [5]बाकी सब दूसरे फादर, मदर और लोगों की यह सोच थी कि निष्फल काम में हाथ डालने के सिवा और कुछ नहीं है। [6]हाँ बीस-तीस वर्षों के बाद शायद ऐसा हो सकता है, किन्तु अभी यह समय नहीं आया है, इत्यादि, कहने लगे।

23. [1]जैसे पहले कुछ वर्णन हो चुका है कि जो लड़कियाँ शादी करना नहीं चाहतीं वे स्कूल से निकाली जायें, सो ऐसा ही किया गया है। [2]जब सलीना नियमानुसार कलकत्ता से प्रोविंशल रेवरेण्ड मदर मेरी गोंजागा राँची आकर यह सब वृतान्त सुनी तथा लड़कियों के निज मुँह की बात मालूम की, तो उस का

दिल भी पिघल गया। [3]तब कहने लगी कि प्यारी बेटियो, मैं आप लोगों की इस पवित्र इच्छा की पूर्ति के लिये अथक चेष्टा किया करूँगी, इतनी देर तक अपना हिम्मत न हारना, सदा सुचाल लड़कियाँ रहकर यीसु को सारे दिल से प्रेम करने में नित्य लौलीन रहना इत्यादि।

24. [1]सो विशेष करके ये तीन जन, अर्थात् महामान्यवर प्यारे फादर देस्मेत, मान्यवर प्यारी प्रोविंशल मदर मेरी गोंजागा और प्यारी मदर मेरी तेरेसा एक साथ होकर खुद आप से आर्चबिशप पौल गूथल्स से तेज अर्जी की हैं कि आप कृपा करके इन चार लड़कियों को स्कूल में रहने की अनुमति दीजिए और इन्हीं द्वारा जाँच लीजिए अगर इनकी बुलाहट सच है या नहीं। [2]तब महाधर्माध्यक्ष ने इन की अर्जी सुनकर मनरेसा के बड़े फादर को लिखकर कहा कि जो-जो लड़कियाँ विवाह न मँजूर करने के कारण स्कूल से दूर की गई हैं सो फिर भर्ती की जायें। [3]जब बड़े फादर से यह आज्ञा सूचित की गई तो बेचारी लड़कियों का दिल आनन्द से फूला न समाया। [4]मेरी बेरोनिका को गाँव से लाने के लिये तीनों जन, मेरी बेर्नादेत्त, सेसिलिया और मेरी एक संग होकर रवाना हुईं। [5]भयंकर घोर वर्षा के दिन होने की वजह से भींग कर लहोलठ हो आगे बढ़ना कठिन हो गया। [6]अन्त में एक संसार निकट कुटुम्बिन के घर में जा बैठीं। [7]वे बड़ी खुशी से ग्रहण करके झटपट से आग सुलगाये, जिससे हम लोगों का वस्त्र कुछ सूखने पावे और भी अपने भोजनों से, जो कुछ घर में बाकी रहा, उस से हम लोगों को अच्छी तरह से खिलाये हैं। [8]उन लोग बहुत अर्जी किये कि आज यहीं ठहर जाइये, क्योंकि पानी-पानी कैसे जाओगी? [9]शायद नदी भी भर गई है, इत्यादि। [10]पर हम लोग एक न मान के शीघ्र आगे बढ़ने लगीं और नदी के निकट गाँव पहुँचीं तो वहाँ के लोग भी और जुल्म से रोकने लगे, कहकर कि एकदम साँझ हो रही है सो कैसे जाओगी? [11]हमलोगों के गाँव का डोंगा तो कल परसों ही बाढ़ से बह गया है। [12]हाँ तुम लोगों के गाँव का नाव तो ऊपर में लगा हुआ है, पर कदाचित उसे बंद करके चले गये होंगे। [13]उन की सुन लेकर हमलोग तौभी हठ कीं, बोलकर कि चलिये वहाँ तक हमें पहुँचा दीजिये। [14]गाँव का एक साहसी आदमी ले चला। [15]अब हम लोग एक बड़े नाले के पास पहुँची, जो पानी से उमड़ा हुआ निकट ही नदी में गिरता था। [16]वह आदमी हमारी तेज इच्छा जान बड़ी-बड़ी कठिनता सहकर हमें नाले को पार कर दिया, पर अब नदी को कैसे पार उतरें? [17]डोंगाइत, जो लड़कियों के निज घर का भाई ही था, सो उसे किनारे में ले जाकर रस्सी से कस के बांध दिया और चला गया। [18]हम लोग धुंधला-

धुंधला दूर में दृष्टि करके एक आदमी की नजर पाईं और खूब शोर से पुकारने लगी, कि कौन हो। [19]आकर हमें पार कर दो[18]। [20]पुकार की आवाज सुन के आदमी तेजी से लौट आया और बांधी हुई नाव को खोलकर एकदम खेवने लगा। [21]जब इस पार आया क्या देखता कि बहिन लोग हैं और तब अत्यन्त खुशी से मिहनत उठाके पार किया और अपने साथ-साथ घर ले गया। [22]इधर साहसी आदमी को खुशी से हमलोगों ने खूब-खूब धन्यवाद देकर विदा कीं। [23]गाँव में एक सप्ताह रहकर फिर चारों लड़कियाँ कॉन्वेंट लौट आई हैं।

25. [1]मदर लोग अब इन लड़कियों को अधिक देखभाल करने लगीं और इसलिये नाना प्रकार के कामों में लगायी जाने लगीं। [2]जैसे लड़कियों को सिखलाने, गिरजा काम, वेदी सवाँरना, बवर्चीखाना, गोदाम, बीमारों की सेवा टहल और रात का जागरण, मुर्दों को धोना सवाँरना, इत्यादि। [3]एक बार की बात है कि एक समय बीमारी के जुल्म से दूसरी बेला, अर्थात् तीसरे चौथे पहर के लगभग में, दो लड़कियाँ एक के बाद एक मर गईं। [4]डूरंडा कब्रस्थान दूर होने और भी दिन ढल जाने के कारण उन्हें उसी दिन नहीं गाड़ने सके थे। [5]उन की लाशें बीमार कोठरी में चटाई पर पड़ी हुई थीं, जिन्हें दूसरे दिन पवित्र-मिस्सा के बाद केवल गाड़ने के लिये ले जायेंगे। [6]एक तीसरी लड़की, जो प्राय: बारह तेरह वर्ष की थी, वह भी बीमार होकर खाट पर पड़ी कराहती थी और निहायत कमजोरी के कारण नजर चढ़ जाकर आँखें बन्द न होती थीं। [7]एक साफ शब्द उच्चार नहीं सकती थी। [8]बीमारी की हालत जान उसे पापस्वीकार और अन्तमलन भी दिया गया था। [9]अब इस बीमार लड़की की रात सेवा टहल के लिये मदर मेरी देपज्जी और एक लड़की की बारी हुई। [10]यह लड़की बड़ी डरपोक थी। [11]थोड़ी- सी अंधेरी रात में घर से कहीं नहीं निकलने वाली, गीदड़ या उल्लू या कुछ शब्द सुनने से भी सिकुड़ जाती थी, विशेष कर मुर्दों से अत्यन्त भय खाती थी। [12]मदर और लड़की दोनों साथ में उस की सेवा के कामों में लग गईं। [13]बीमार लड़की की दशा कुछ अच्छी जान पड़ने लगी। [14]बेचारी प्यारी मदर मेरी देपज्जी दिन भर के काम की थकावट के कारण तंग हो गई थी। [15]फिर अपने साथ की लड़की को जाँच के निमित्त उसे सुअवसर मिल गया,

---

18 सरगाँव और राँची की दूरी करीब 32 किलोमीटर है। उस समय केवल पगडण्डी थी और उन्हें जंगल-झाड़ व नदी-नाला पार करके जाना पड़ता था। बाढ़ के समय नदी पार करने का तरीका था नाव, जिसे केवल सिद्धहस्त नाविक ही चलाते थे, जो किसी एक परिवार की परम्परागत पेशा होती थी।

इसलिए वह लड़की से कहने लगी कि "देख मैं कुछ देर के लिये जाती हूँ यहाँ मेज पर बत्ती, घड़ी, दवा, पानी सब है, सो समय-समय पर उसे दिया करना, जब तक मैं न लौट आऊँ। [16]डरने की कुछ बात नहीं है, लड़की अभी पहले की अपेक्षा आराम देख पड़ती है, सो हम लोग शक्ति भर यत्न करेंगी तो शायद बच जायेगी। [17]अगर मर भी जाए तो कुछ परवाह नहीं है, क्योंकि उसे साक्रमेन्त तो मिल चुका है। [18]ईश्वर की पवित्र इच्छा पूरी होवे" कहकर साढ़े दस बजे चल दी।

26. [1]शुरु में लड़की इतनी चिन्तित न हुई। [2]वह अपने में सोच करने लगी कि मदर जल्दी से लौटेगी इसलिये वह शर्मिन्दा हो कुछ न कही। [3]लेकिन जब खूब देर हो रही और ग्यारह, बारह, एक बजे तक नहीं लौटती है, तो वह भयभीत हो खूब घबड़ाने और डरने लगी, क्योंकि घोर अंधेरी रात, मुर्दा बदन पड़ा और बीमार लड़की दरवाजे के एकदम निकट खाट पर पड़ी है। [4]मुर्दे की गंध पाये दो गीदड़ भी आकर जुल्म से भीतर पैठने चाहते हैं। [5]उन्हें खदेड़ने के लिये हाथ में एक लाठी भी नहीं। [6]बेचारी लड़की डर से थरथर काँपने लगी और हाथ उठाकर उन्हें हाँकने लगी, पर वे एक न मानते थे। [7]जोर से चिल्लाने के लिये भी लजाती, बोलकर कि पीछे मुझे सब हँसी में उड़ाएँगी, इत्यादि सोचकर। [8]अन्त में उससे और न रहा गया, सोच के कि मैं इस लड़की को और न तो मुर्दे को बचा सकती हूँ, डर से तो मेरा ही जी जैसा अभी निकलेगा-सा मालूम होता है, सो निकल कर भागने के सिवा और कुछ उपाय सूझी नहीं। [9]फिर से मन में सोचती कि अगर मैं भाग जाऊँ तो इस जीवित लड़की को भारी नुकसान हो सकता और शायद मर भी जायेगी। [10]फिर इन मुर्दे बदनों को गीदड़ अगर घसीट के निकाल लेवे और चीर फाड़ कर दे, तो कैसे शोकमय कारण और क्या ही नीच बुरी बात होगी। [11]हाय! हाय! मैं क्या करूँगी? [12]डर से मेरा गला बन्द हो जा रहा है। [13]ऐसे-ऐसे सोचों में कुछ देर तक डूबी हुई थी। [14]थोड़ी देर के बाद अपने जी को सम्भाल के उठ खड़ी हुई और स्कूल का रक्षक, उन दिनों में सन्त रखवाल दूत ठहराये गये थे, इसलिये सन्त रखवाल दूतों से यह तेज प्रार्थना की कि आप लोग मुझे मदद दीजिये, क्योंकि यह काम पूरा करने को मुझ में साहस नहीं है। [15]देखिये मैं आप लोगों की रक्षा में इन्हें सौंप देती हूँ, सो कृपा करके इन्हें सब जोखिम और नुकसानी से बचा लीजिए। [16]विनती अन्त करके मेज पर से बत्ती लेकर दरवाजे के ठीक बीचों-बीच रख दी और मदर को बुलाने के लिए दौड़कर कॉन्वेंट में घुसी। [17]तब धीमी चाल चलकर मदर के पास

पहुँची तो देखती क्या कि वह थकी माँदी हो एक दम गहरी नींद में सोयी पड़ी है। [18]इसलिये उसे न जगाई मगर फुर्ती से स्कूल तरफ जाकर साथियों को जगाके उनसे खूब अर्जी की कि आप लोग चलकर मुझे मदद दीजिये, क्योंकि मैं लाचार हो बीमार कोठरी से भाग आई हूँ। [19]देखिये तो कैसी घोर अंधेरी रात है, मैं अकेली हूँ, गीदड़ जोड़ा भर आकर जुल्म कर रहा है, सो मैं कुछ नहीं कर सकती हूँ। [20]डर से मेरा दिल धक-धकाता हुआ सारी देह काँप रही है। [21]मेरी सुन लेकर बहुतेरी लड़कियाँ साथ चलने को लालायित हुईं, परन्तु दो-तीन जनों को केवल साथी करके हाथों में ठेंगा लिये शीघ्र जाकर पहरे में बैठ गीदड़ों को हाँकने लगीं। [22]हम लोग सब खुशी से सन्त रखवाल दूतों को बहुत-बहुत धन्यवाद दीं, क्योंकि उन्हें सब नुकसानी से बचा रखे। [23]जब मदर की नींद टूटी तो वह आई और इन सब बातों को सुन कर बहुत-बहुत हँसने लगी।

27. [1]अब इधर घराने के लोग अपनी बेटियों के बारे चैन में न बैठे थे। [2]विवाह के लिए लोग बहुत ही जुल्म करने लगे, बोलकर कि किसी उपाय से उन्हें अवश्य शादी में देना ही पड़ेगा। [3]बेर्नादेत्त, सेसिलिया और बेरोनिका के लिये भाई कुटुम्ब लोग तीन कट्टर प्रोटेस्टन्ट घराने के धनी और माननीय शिक्षित लड़कों को चुन लिये। [4]तब मनरेसा के बड़े फादर के यहाँ आकर चिकनी-चुपड़ी बात बनाकर कलकत्ता के महाधर्माध्यक्ष पौल गूथल्स से दोगली शादी के लिए छुट्टी मँगवाए हैं। [5]महाधर्माध्यक्ष ने यह छुट्टी प्रसन्नता से नहीं, किन्तु जोर जुल्म के कारण से दिया था। [6]बेचारी लड़कियाँ इस बात के विषय कुछ नाम मात्र तक भी न जानती थीं। [7]तब लोगों ने इस बहाने से यह झूठा दोष इन्हीं पर डाल दिया, यह बोलकर कि इन तीनों लड़कियों ने खुद अपनी खुशी और राजी से प्रोटेस्टन्ट वर (लड़कों को) चुन लिया है। [8]इसलिये केवल यह काम बाकी है कि लड़कियाँ निज मुँह से स्वीकार करें। [9]इस बात की जाँच के निमित्त बड़े फादर ने स्वयं आकर प्यारी मदरों को सब बतला दिया है और चुपचाप बैठ गये, यह सोच कर कि शायद लड़कियाँ मुझ से भय या लज्जित होकर ठीक उत्तर न देंगी। [10]जब मदर लोग फादर के मुँह से ऐसी खराब हाल सुनीं, तो एकदम उदास होकर कहने लगी कि हम लोग विश्वास नहीं कर सकती हैं। [11]यह जरूर से सच बात न होगी, लड़कियाँ ऐसे दिल के नहीं हैं, इसके बावजूद आप के कहे अनुसार एक बार उन्हीं से पूछना ही उचित जान पड़ता है। [12]लड़कियाँ इधर-उधर क्लास में थीं, उन्हें एक-एक कर कुछ काम के बहाने बुलावा करके पूछने लगीं। [13]लड़कियों को तनिक भी मालूम न हुआ कि फादर

उन लोगों की बात सुन रहे हैं। [14]वे मदरों के पास जो-जो बात बोली हैं, उन सब को फादर अपने निज कानों से सुन चुके हैं।

28. [1]शुरु में तीनों लड़कियाँ ऐसी बातों को सुनकर घबड़ा उठीं। [2]तीनों का जवाब एक-सा हुआ। [3]वे कहने लगीं कि यह एकदम झूठ बात है, हम तीनों तो किसी लड़के के साथ में बात नहीं की हैं, न मुँह से और न चिट्ठी से। [4]ऐसी नीच, बुरी दोगली[19] शादी की बात हम लोगों से कभी न हुई है और न होगी। [5]जो हम लोगों को शादी करना चाहते हैं वे कौन और कहाँ के लोग हैं? [6]उन्हें यहाँ बुला लाइये तो उन दगेबाजों के सुन्दर रूप रंग को थोड़ा देखेंगी तथा उन्हीं से पूछ लेंगी कि कब, कहाँ और कैसे बन्दोबस्त हुआ है। [7]छी! छी! जरुर कोई ईर्ष्या से हम लोगों को बदनामी करने के लिये ऐसा झूठा दोष लगा रहे होंगे, कहकर बहुत कुहक-कुहक कर रोने लगीं। [8]पीछे सभों को स्पष्टता से मालूम हुआ है कि यह केवल झूठी बनावटी बात थी। [9]इसलिये बड़े फादर ने महाधर्माध्यक्ष के पास लिखकर सब कुछ कह दिया है।

29. [1]ठहराए दिन में पूर्णप्रसाद के घर में तीनों लड़कियों के विवाह की रीति-रस्म ठीक करने के लिये बड़ा भोज तैयार किया गया तथा सभा-सी भीड़ लग गई। [2]खान-पान, बाजे-गाजे, गीत-रंग होने लगा। [3]जब तीनों के ससुराल के लोग सास, ससुर, वर और सब रिश्तेदार प्राय: इकट्ठे होने को तैयार हुए, तो पिता जी लड़कियों को घर ले जाने के लिए आये। [4]लड़कियाँ उसी समय एक फादर का धर्मोपदेश सुन रही थीं। [5]फादर को देख कर झुक कर प्रणाम करके कहने लगा, "फादर हमारी लड़कियों को हम घर ले जाने के लिये आए हैं। [6]बेर्नादेत्त, सेसिलिया और बेरोनिका सीधे घर चलो।" [7]लड़कियाँ पिता की कड़ी आवाज सुन भयभीत और उदास हो सिर नीचे की ओर झुकाईं। [8]यह देख पिता फिर से कहने लगा कि क्या नहीं सुनती हो, क्यों न उठकर आती हो! [9]तब बेर्नादेत्त उठ

---

19 दोगली का अर्थ है खराब। कुड़ुख़ समाज में माता-पिता की अनुमति के बिना शादी करना सामान्य बात नहीं रही है। इसके अलावे यदि पति या पत्नी अपने समुदाय या सम्प्रदाय का सदस्य न हो, तो वह भी सामान्य विवाह की गिनती में नहीं आता है। कलीसिया में यदि दम्पत्ति में से कोई एक भी समुदाय के बाहर का हो, तो धर्माध्यक्ष की अनुमति अपेक्षित होती है। बेर्नादेत्त समाज और कलीसिया के इन नियमों से परिचित थी, अत: उनका पालन करना उनके लिए नैतिक आचरण के बराबर था। जो भी इन सामान्य विवाह के अन्तर्गत नहीं होता है, उसे दोगली शादी कही जाती है। संत अन्ना की एक धर्मबहन बनने के लिए भी उन्हीं नियमों का पालन किया जाने लगा, मानों वह एक विवाह की ही प्रथा हो।

खड़ी हो कहने लगी कि थोड़ा अभी ठहर जाइये, जैसे उपदेश अन्त होगा, तब मदर से छुट्टी लेकर जायेंगी। [10]पिता कहने लगे, नहीं, नहीं, मदर की छुट्टी का दरकार नहीं है शीघ्र अभी ही चलना है। [11]फादर और सब लड़कियाँ इस तमाशे को देख रहे थे कि फादर एक लड़की को चिह्न करके मदर को बुलाने भेज दिया। [12]जैसे खबर पाई मदर फुर्ती से आ पहुँची और कहने लगी कि पूर्णप्रसाद क्या बात है? [13]बाप ने उत्तर दिया कि मदर, हमारी बेटियों से कुछ बात करना नहीं, जल्दी चलना है, आओ लड़कियो, जल्दी आओ! [14]फादर यह देख आप से उठ खड़े होकर हाथ से निशान करके पिता को चुप कराया और तीनों लड़कियों को अपने निकट बुलाकर दबी आवाज से कहने लगा कि देखिये प्यारी लड़कियो, बड़े फादर ने तुम लोगों के विषय में हम सब फादरों को बतलाया और उस ने हुक्म दिया कि पवित्र-मिस्सा और विनती, अपनी विनती जो रोज-रोज पादरियों को करने का भारी हुक्म है, उसे करें और कुछ स्व-दण्ड लेवें, जिससे आप लोग इसी परीक्षा से जीत विजय पावें। [15]धर्म में स्थिर रहिये, अजनबी और विशेषकर प्रोटेस्टन्टों से विवाह करने में खूब सावधान रहिये। [16]कभी निराशा नहीं पर बहादुरी दिल के होकर निर्भयता से घर चली जाइये। [17]ईश्वर आप लोगों की रक्षा अवश्य करेगा। [18]यह कहकर अपनी विनती किताब से तस्वीर निकाल के तीनों लड़कियों को एक-एक कर दिया। [19]लड़कियाँ आँसू बहाती हुई फादर को उसके उत्तमोत्तम सलाह और तस्वीरों के लिये बहुत-बहुत धन्यवाद दे, घुटनों के बल गिरकर उससे आशिष ग्रहण कीं और पिता के साथ चल पड़ीं। [20]कॉन्वेंट के फाटक से बाहर जाकर पिता ने अपनी बेटियों को यह सक्त हुक्म दिया कि सीधे घर पहुँचना है, यह कहकर अपने कुछ काम के लिये चल पड़ा। [21]थोड़ी दूर पर लड़कियों से जेम्स नामक एक काथलिक प्रचारक की मुलाकत हुई। [22]वह उनसे कहने लगा कि "बेचारी लड़कियो, क्या आप लोग अभी घर जा रही हो?" उन्होंने जवाब में कहा कि हाँ। [23]वह कहने लगा, "खबरदार! कभी मत ठगा जाइये पर साहसी दिल से लड़कर जीत लीजिये, क्योंकि अभी आप लोगों पर भारी परीक्षा आ पड़ी है, न सिर्फ विवाह का लेकिन धर्म से भी डिगाने के लिये जान बूझ कर लोगों ने ऐसा किया है। [24]महाधर्माध्यक्ष से दोगली शादी की अनुमति माँग चुके हैं, पर आप लोग उस की कुछ परवाह न करना। [25]वे तुम्हें कितना भी मार-मार, लाठी-ठेंगा से डराने या जो कुछ करे आप लोग मत डगमगाना, पर काथलिक धर्म में डटे रहना।" [26]वह ऐसी सुन्दर-सुन्दर सलाहों से हम लोगों को ढाढ़स देकर विदा किया।

30. [1]अब तीनों बहनें चलती-चलती एक दूसरे का मुँह देखती हैं। [2]तीनों तो चिन्ताओं में डूबी हुई तथा एक प्रकार के भय से दिल जैसा धुकुड़-पुकुड़ कर रहा था। [3]बीच-बीच में कभी प्रार्थना करतीं, कभी निराशा हटाने के लिये मनमोहनी बातें करके दिल का उत्साह बढ़ाती हुई घर पहुँचीं। [4]तीनों अपने में दृढ़ मनसूबा बाँधी कि ईश्वर की दया से इस परीक्षा में विजय प्राप्त करने की शक्ति भर कोशिश किया करेंगी।

31. [1]घर में पहुँचते ही हमें अच्छा भोजन दिया गया, परन्तु खाएँ कैसे? [2]उदासी भरे हुए को आहार रुचे कैसे? [3]कण्ठ तो फूला-सा जान पड़ता और किसी से बोलने का दिल ही नहीं, तिसपर भी जबरदस्ती से कुछ खिलाये हैं। [4]कुछ देर के बाद धीरे-धीरे नाना प्रकार की मीठी, चिकनी, फुसलाहट की बातें निकालने लगे। [5]हम लोग सुनी-अनसुनी सी चुप रहीं, मगर धीरे-धीरे वे और जोर करने लगे। [6]निदान हमें बोलना ही पड़ा कि नहीं-नहीं, कभी नहीं, हम लोग शादी करना नहीं चाहती हैं, सो तो आप लोगों को पूरा मालूम था ही, और तिस पर भी आप लोग बिन कहे पूछे क्यों ऐसे नीच दोगली शादी का बन्दोबस्त करके उठान-पुठान कर रहे हैं। [7]वे कहने लगे कि तमाम दुनिया ऐसी करती है इसलिये तुम्हें कुछ पाप न लगेगा। [8]महाधर्माध्यक्ष और सब फादर लोग भी इस बात पर खूब राजी हो चुके हैं। [9]मत डरिये सब ठीक-ठाक हो गया है। बड़े-बड़े नामी घराने के सुशिक्षित सुन्दर-सुन्दर जवान हैं। [10]तुम्हें क्या ही भाग्यवान सुखित जीवन प्राप्त होता है। [11]तुम्हें कुछ भी तकलीफ नहीं होगी। [12]इसलिये निर्बुद्धियों की तरह नहीं, पर अक्ल से बातें करनी चाहिये। [13]वे प्रोटेस्टन्ट हैं तो तुम्हें क्या परवाह, वे अपने धर्म में और तुम लोग अपने धर्म में रहना। [14]वे घराने समेत यह प्रतिज्ञा करते हैं कि धर्म विषयों पर हम लोग उन को कुछ भी रोक-टोक न करेंगे। [15]सो अब तुम्हें क्या कहना है? [16]हम लोग एक स्वर से विवाह करना इन्कार कहीं। [17]वे तब खूब रंज होकर भाँति-भाँति के बकने और धमकी देने लगे, बोलकर कि तुम लोग ऐसी ढीठ मूर्ख होती हैं, खुश-खुश उत्तर देने में देर न लगाओ। [18]बाप अभी घर में नहीं है परन्तु वह जल्द लौटेगा तो। [19]अगर वह लौट कर मालूम करेगा कि बेटियाँ निहायत ढीठ पागल हैं, तो गुस्से में होकर अवश्य खूब मार-पीट करेगा, इसे जरा ख्याल करो और भी तुम्हें कैसे लाज की बात होगी। [20]इतनी-इतनी बातों को सुनने पर भी हम लोग ज्यों का त्यों स्थिर रहीं। [21]जब पिता लौट कर लड़कियों का हाल मालूम किया तो वह क्रोधित हो बोल उठा कि तीनों लड़कियाँ अलग-अलग की जाएँ । [22]बेरोनिका और

सेसिलिया को दूसरों के घर में एक साथ कमरे में रखकर दरवाजे पर ताला दी जाए, कि बेर्नादेत्त उन के पास तक जाने न पावे, क्योंकि वही उन्हें बहका के बिगाड़ती और दृढ़ता देती रहती है। [23]पिता की आज्ञानुसार लड़कियाँ फर्क की गईं, ऐसा कि वे अब एक दूसरे का हाल न जान सकें।

32. [1]इधर भीतरी आंगन में लोगों की बड़ी भीड़ सभा-सी लगी थी। [2]बेर्नादेत्त उनके सम्मुख की गई। [3]उसे न्योतहारे देखकर सब खुशी से फूल उठे और नियमानुसार हाथ मिलाने और चूमने लगे। [4]बेचारी लड़की आँखें भी न उठा सिर पर साड़ी से घूँघट ले खड़ी होकर बिलख-बिलख रोती थी, क्योंकि वह किसी को देखना न चाहती थी। [5]हाथ मिलाने एक जवान आ पहुँचा। [6]भीड़ से एक स्त्री ने कहा कि "बेटी मत रो, देख वही तेरा वर होनेवाला है, इसलिये आँखें उठाकर उसपर दृष्टि लगा और बड़े आदर-सत्कार से उस के संग हाथ मिला ले।" [7]यह सुन बेर्नादेत्त ने फुर्ती से हाथ खींच लिया, बल दे मुट्ठी बन्द किये और हाथ सिकुड़ाकर कपड़े के अन्दर छिपा लिया। [8]लोगों ने बहुत जोर-जुल्म किया, कहकर "बेटी ऐसी मत हो, देखिये दुनिया की चाल तो यही है कि अमीर या भिक्षुक की लड़कियाँ, कितना भी प्यार के योग्य हो, वे पराये घर जाती हैं और पराये की लड़की घर की रानी बन बैठती हैं। [9]तुम ऐसे बड़े प्रतिष्ठित आदमी की बेटी होकर केवल अपनी मूर्खता में रहती हो। [10]छी! छी! तुझे कुछ भी लाज नहीं? [11]सब कोई तुझे देख रहे हैं। [12]इतने दल के सामने ऐसी ढिठाई करने से तुम अपने और घराने में केवल निन्दा और शर्म लाती है। [13]देख बेरोनिका और सेसिलिया कैसी खुशी से सब बातों को मान ली हैं। [14]सिर्फ तुम अकेली जिद्दी, मन मतलबी हो। [15]उन के नमूनों पर तुम भी चलो तो सब ठीक होगा। [16]कैसे सुन्दर से तीनों बहिनें एक ही मड़वा में शादी होने से क्या ही आनन्द की बात होगी।" [17]बेर्नादेत्त ने उत्तर दिया कि बेस, वे दोनों शादी होना चाहती हैं तो होवें, परन्तु मैं इन्कार करती हूँ। [18]लड़की ने ठीक पूरी रीति से मालूम किया कि यह सच बात न थी परन्तु बनावटी बातों से उसे फँसाना चाहते थे। [19]वे बहुत गुस्सा होकर कहने लगे कि देख पिता यों कहता है कि किसी की राय पर नहीं चलती है, तो उसे छोड़ दीजिये। [20]जाए, कहाँ जाना चाहती और क्या होना माँगती है, मैं उसे एक फूटी कौड़ी तक न दूँगा। [21]मजे से खाती-पीती और पहनती-ओढ़ती है, इस कारण उसे कुछ की परवाह नहीं। [22]बात की बात में नातेदार में एक बड़ा भाई जो कुछ निकट ही खड़ा था सो कहने लगा, "इसे छोड़ दीजिये तो, मैं ही उसे ठीक कर देता हूँ।" [23]यह बोल कर बेर्नादेत्त को पकड़ कर धक्का-धुक्की

करके झकझोरते हिचकाते भीड़ के पास से दो-चार कदम अलग करके थप्पड़ पर थप्पड़ देने और कानों को मलने लगा। [24]अगर प्रेम से न बनता तो तेरे लिये मार ही सही है। [25]बोल, जल्दी बोल शादी करेगी या नहीं? [26]लड़की ने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया, नहीं, कभी नहीं। [27]तो देखिये फिर से मार, गाली पर गाली। [28]बाप रे! तुम किस प्रकार की है? आदमी होता तो समझता, जानवर होता तो मार-पीट के डर से चलता। [29]क्या तुम शैतान की बच्ची है? [30]इसलिये तो आदमियों की संगति में उठना-बैठना तुझे पसन्द नहीं आता है।" [31]भीड़ यह देखकर बोल उठी कि ऐसा नहीं करना चाहिये, क्योंकि जवान लड़की पन्द्रह-सोलह वर्ष की है। [32]उन को अभी अफसोच या डर से जवानी दिल घबड़ा जाता है। [33]पीछे वह धीरे-धीरे से मान जाएगी।

33. [1]बाप लड़की का हाल देख के बहुत दु:खित, नाराज और झुँझलाकर मेहमानों से अलग हो कमरे में बैठ कर वहाँ बहुत रोने, आह मारने लगा बोलकर, कि ओह! व्यर्थता से हम इतने दु:ख विपत्ति झेलकर उसे पालन-पोषण करके बढ़ाया और उत्तम होता कि नन्हीं बच्ची होकर अपनी माता के संग ही मर जाती, तो मुझे इतना दु:ख न होता। [2]पिता के ऐसे शोकमय कराहने को सुन, सभों का जी भर आया और उन की आँखों से आँसू की धारा बहने लगी। [3]कुछ देर के बाद में पिता अपने को स्थिर करके कमरे के अन्दर ही से गरज कर कहने लगा कि लड़की को ठीक समझाइये, नहीं तो मैं अपने को और रोकने नहीं सकता हूँ। [4]जो हो, सो हो, मैं अपने निज हाथों से उसे गोली देकर पूरा करूँगा और निज प्राण भी खो दूँगा। [5]उस की ऐसी भयानक बातों को सुनकर कई एक जाकर कमरे से एक बन्दूक और दो पिस्तौल को निकाल लाकर छिपा दिये। [6]भाई-बन्धु पिता के करतूत को देख कर लड़की को और जोर से धमकी देकर जुल्म से समझाने लगे कि बेटी मान जा। [7]केवल एक बार तो, हाँ शादी करना मंजूर है बोल दे, तो बात बन जाएगी। [8]इसलिये वर होनेवाले लड़के को फिर निकट बुलाये और उसे हुक्म दिये कि हे बेटे, लड़की का हाथ पकड़ ले। [9]तब लड़का निकट आकर कहने लगा कि देखिये आप क्यों ऐसी होती हैं? [10]मैं दृढ़ प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुझे धर्म के विषय में कुछ भी रोक-टोक न करूँगा। [11]एक बार, हाँ केवल एक ही बार दृष्टि लगाके मुझे देख लीजिए कि मैं लँगड़ा, लूला, काना, गूँगा और बहरा हूँ या नहीं? [12]बस, जरा से हाथ मिलाइये मैं उसी से पूरा सन्तुष्ट हूँगा, इसके सिवा और कुछ न चाहता हूँ। [13]यह कहकर लड़की के हाथ पकड़ने का यत्न करने लगा। [14]तब लड़की भी शक्ति भर झिड़का-झिड़की कर

हाथ छिपाई तथा कह उठी कि मैं कभी न हाथ मिलाऊँगी। [15]मैं आप की कभी न हूँगी सो जानिये, इसलिये मुझे ऐसे दिक् मत कीजिए। [16]तो वह बोल उठा कि राही भी गुजरते ही जान पहचानों से एक दूसरे को सलाम करके हाथ मिलाते हैं। [17]लड़की ने उत्तर दिया कि वह साधारण तौर का सलाम है, परन्तु अभी जो आप लोग मुझ से कराते हैं यह विशेष निशानी का सलाम है। [18]आप लोग यह मत सोचिए कि मेरा दिल किसी दूसरे लड़के पर लगा हो। [19]अगर आप लोग ऐसे सोचते होंगे तो यह बड़ी भूल है सो जानिये। [20]मैं स्पष्टता से स्वीकार करती हूँ कि शादी करना मुझे नामंजूर है।

34. [1]बाप लड़की की बातों को कमरे के अन्दर से सुनता ही था, अचानक गरजते हुए अपने हाथ में एक चोखी चमकती हुई नंगी तलवार लिये बेटी की ओर दौड़ने लगा। [2]भीड़ हा! हा! कर चिल्ला उठी। [3]बेर्नादेत्त को, जो माँ भाई लोग धरे थे, सो कहने लगे कि बेटी यहाँ से जल्दी भाग निकल जा, नहीं तो तेरा नाश होगा। [4]तब वे ही लोग दरवाजे को फुर्ती से खोल के इसे भागने का अवसर दिये हैं। [5]पिता को लोग जुल्म से रोक रखे, कि लड़की कुछ दूर तक निकल पड़ी। [6]तौभी उस ने दो मनुष्यों को उस का पीछा करने का हुक्म दिया। [7]वे दो मनुष्य पिता की बात ऊपरी मन से पूरा करने के लिये, लम्बी डाँग हाथ में लिये, बहुत कुछ दूर तक उसे खदेड़े। [8]पीछे लौट जाकर पिता से बोले कि लड़की बहुत दूर निकल पड़ी है, सो हम लोग उसे पकड़ के लौटाने नहीं सके। [9]पिता ऐसी खबर सुनके कह उठा कि आज वह भाग कर गई, सो आज की तारीख से फिर हमारे घर में उस का पैर तक धरने न पावेगी। [10]मैं तुरन्त ही मदर, सिस्टर और फादरों को चिट्ठी दूँगा, बोल के कि वे उस शैतानीय लड़की को स्कूल में कभी जगह न दें, इत्यादि।

35. [1]लड़की भागती-भागती चली आई और चार बजे के पीछे कॉन्वेंट पहुँच के गिरजा में पवित्र साक्रमेन्त के सामने घुटनों के बल गिरकर आँसू बहाती हुई यीसु को बहुत-बहुत धन्यवाद दी, क्योंकि उस की बड़ी दया और फादरों, मदरों, लड़कियों और सब भले आदमियों की तेज प्रार्थनाओं से यह विजय हमें मिली है। [2]मदर और सब लड़कियाँ जब बेर्नादेत्त को अकेली देखे तो बहुत घबराने लगे। [3]वे बेरोनिका और सेसिलिया का हाल उससे पूछने लगे, तो बेचारी बताएगी कैसे? [4]क्योंकि वह आप तो नहीं जानती थी कि उन को क्या आ पड़ा था। [5]बेर्नादेत्त ने तो सोच लिया कि वे जरुर मुझ से पहले ही भाग कर अगुवा गई होंगी, लेकिन अब वह देखती कि वे नहीं आई हैं इसलिये उन के विषय बड़ी

चिन्तित हो रही। [6]आखिर को जब एक दम से साँझ हो गयी, तब बेरोनिका और सेसिलिया आ पहुँची हैं। [7]उनको कुछ भी मालूम न हुआ कि बेर्नादेत्त किस घड़ी घर से भाग चली आई थी। [8]अब जब एक साथ आपस में भेंट हुई, तो उनके आनन्द की सीमा न रही। [9]वे आपस का हाल एक दूसरी को बतलाने लगीं कि लोग कैसे झूठमूठ से कहते थे कि देखो बेर्नादेत्त कैसी-सीधी लड़की है, माता-पिता की सब बातों पर वह राजी होकर शादी करना स्वीकार कर चुकी हैं, सो अब सब ठीक होगा। [10]भला, तुम दोनों भी उस के समान होकर सिर्फ एक बात बोलो ''हाँ'', बस सब ठीक होगा। [11]वे जवाब दी कि बेर्नादेत्त शादी करेगी या नहीं हमें क्या है, परन्तु हम लोग नहीं करेंगी। [12]इसपर नातेदार में बड़ा भाई सेसिलिया को एक दो थप्पड़ मारा, यों कहते हुए कि तू इतनी छोटी लड़की होकर ऐसी ढिठाई करना जानती है, बेरोनिका तो बड़ी लड़की है इसलिये उसे मारना नहीं बनता है, कह कर उसे छोड़ दिया। [13]अन्त में माँ उन्हें कुछ काम के लिये बाहर बुलाई तो वे दोनों भी भाग चली आईं, जैसे पहले बतलाया गया है।

36. [1]दूसरे दिन सुबह घर की ओर से बेर्नादेत्त के नाम पर, नाना प्रकार की घुड़की तथा नालिश की एक लम्बी चिट्ठी मदरों के हाथ लगी, परन्तु मदरों ने उस लेख की कुछ भी परवाह न कीं और न लड़की से भी उसके विषय में कुछ कहा, क्योंकि ऐसी दिल जली-कटी बातों को सुनाना ठीक नहीं। [2]माँ-बाप से जो कपड़ा लत्ता उस के पास था, सो भी वे माँगने लगे। [3]इस कारण लड़की ने पुराने चिथड़े-गेदड़े को छोड़, बाकी सब दूसरे सन्दूक (बक्स) में ठीक से सजा कर साथ ही भीतर में एक छोटी चिट्ठी रखकर भेज दिया। [4]चिट्ठी में ये बातें लिखी थीं ''मेरे अति प्यारे माता पिता, आप दोनों को और घर के सब छोटे बड़ों को मेरा बहुत-बहुत यीसु की बड़ाई और प्रेम का चुम्मा होवे। [5]मान्यवर प्यारे माता-पिता, मैं आप लोगों के अपार प्रेम, मिहनत, दिक् तथा दुःखों के लिये सारे दिलो-जान से बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूँ। [6]फिर आज तक जो-जो मेरी बात, काम या चाल से आप लोगों को रंज तथा निरादर हुआ है, उन के लिये मुझे क्षमा कीजिये। [7]मैं आप लोगों के ऊपरी दिखावे की अति प्रेमी निर्दयता के कारण दिल से धन्यवाद देती हूँ। [8]आप लोगों ने तो सिर्फ हमारी भलाई के हेतु ऐसे किये हैं। [9]इस में आप लोगों का दोष तनिक भी नहीं हुआ है। [10]आप लोगों को ऐसा करना उचित ही जान पड़ा, सो आप लोग अपना कर्तव्य करने से मेरी भलाई हुई। [11]इस को छोड़ दुनिया के सामने आप लोगों के नाम की निन्दा भी साफ हो गई।

[12]अब लोगों ने स्पष्टता से आप लोगों के करतूत को पहचान लिया है। [13]आप लोगों की करनी पर कुछ उदास नहीं हूँ। [14]मेरे दिल में जीवन भर सदा आप लोगों के प्रेम की याद बनी रहेगी और हमेशा आप लोगों के प्रति कृतज्ञ दिल रखूँगी। [15]आप लोगों की आज्ञाधीन बेटी ख्रिस्त आनन्दित रूथ मेरी बेनदित्त।

37. [1]जब कपड़ा लत्ता और चिट्ठी उन्हें मिली तो वे बहुत ही अचम्भे में पड़ गये तो सही, किन्तु तिस पर भी वे अपने हृदय को कड़ा करके चुपचाप रह गये हैं। [2]लड़की अब सच्चाई से निहायत लाचार दशा में गिर पड़ी, क्योंकि उस के पास अब चिथड़े-गेदड़े के सिवा और कुछ न था। [3]ऐसी हीन दशा देखकर प्यारी मदरों, मेरी साथी और स्कूल की लड़कियों से रहा न गया। [4]वे अपने निज खर्च से कपड़ा लत्ता और सब आवश्यक वस्तुएँ देने लगीं। [5]पीछे फिर महामान्यवर प्यारे रेभ. फादर यान देस्मेत ने महामान्यवर प्यारी मदर मेरी तेरेसा के साथ सलाह करके यह बन्दोबस्त किया कि जरुरी चीजें उसे और उसकी तीनों संगियों को भी मिल जाया करे और ऐसा ही हुआ।

38. [1]अब तो, जो थोड़ी तकलीफ झेलनी पड़ी, सो तो अन्त हुई। [2]ईश्वर को हम सब कोई इस जीत विजय की कृपा के लिये अत्यन्त हर्ष मना के सारे दिल से धन्यवाद दी हैं। [3]फिर भी सब भले लोगों की प्रार्थना परन्तु विशेष करके उन सब प्यारे फादरों को, जो इस की पूर्ति अपनी तेज प्रार्थना, स्व-दण्ड और भी पवित्र-मिस्सा के बलिदान चढ़ाकर हम लोगों के लिये यह अनमोल कृपा दान कमाये हैं, उन्हें यथा शक्ति दिलोजान से करोड़ों-करोड़ धन्यवाद देती हैं और प्रगट से स्वीकार करती कि अगर पवित्र-मिस्सा, प्रार्थना और स्व-दण्ड की सहायता हमें न मिली होती, तो नि:सन्देह इस परीक्षा में हार जातीं।

अध्याय 5

धर्मसंघीय बुलाहट की जाँच

39. [1]जब आर्चबिशप पौल गूथल्स कलकत्ता से फिर आये तो वह इन लड़कियों की देख-भाल करने वाली मदर मेरी तेरेसा के द्वारा बोले कि अगर तुम लोगों की तेज इच्छा है, कॉन्वेंट जीवन जीने को, तो इस के लिये कम से कम और आठ वर्ष तक ठहरना पड़ेगा। [2]इतने में यदि तुम लोग स्थिर रहकर अपने को खूब सीधी लड़कियाँ तथा इस महात्मिक पवित्र दशा के विश्वासी योग्य ठहरे, तब मैं इस के विषय में और सोच-विचार करूँगा। [3]तुम लोग मदरों के पास स्कूल में रहकर उन्हें सब कामों में मदद दिया करना। [4]तुम लोगों के धार्मिक जीवन जीने की अभिलाषा देख कर मेरे मन में यह विचार आता है कि सब से पहिले मैं यहाँ लड़कियों के लिये सोदालिती, याने निष्कलंक कुँवारी मरिया की संगत ठहराऊँगा जैसे सन्त जोन्स स्कूल में लड़कों का है। [5]अगर तुम चारों जन इस संगत में भर्ती होने के खूब योग्य होकर अति शुद्ध माँ निष्कलंक कुँवारी मरिया की सच्ची बेटियाँ बन जाओगी, तब और केवल तब, पीछे से तुम लोगों के धार्मिक जीवन के विषय में देखूँगा, ऐसे कह कर हमलोगों को आशिष देकर विदा किये।

40. [1]महाधर्माध्यक्ष की बातों को सुनकर हम लोगों का दिल अत्यन्त आनन्द से उछलने लगा। [2]उसी दिन से हम लोग दिनों की - हफ्ते, महीने और बरस की - गिनती करती जाती थीं, यह कह-कह के कि आठ बरस से इतने दिन कट गये हैं और हमारे दिल का साहस उठाती रहीं। [3]हम लोग मदरों के संग बड़ी खुशी से रहने लगीं। [4]वे हमें नाना प्रकार के कामों में और लगाये, जैसे रात दिन लड़कियों की देख भाल करना, गिरजा झाड़ पोंछ करना, वेदी सिंगारना, पवित्र-मिस्सा का कपड़ा तैयार करना, गिरजा कपड़ा धोकर इस्त्री करना, सिलाई करना, बीमारों और छोटे-छोटे अनाथ बालकों की सेवा टहल करके रात-दिन जागरण करना, स्कूल में कुछ शिक्षा देना, धर्म की बातें लड़कियों और स्त्रियों को सिखलाना, उपदेश देना, गोदाम, बवर्चीखाना, बागान में साग-सब्जी, फल-फूलों को देखना और कभी-कभी बाजार इत्यादि का काम करना। [5]इन सब प्रकार के कामों को ठीक-ठीक करने में हमें सदा सहज नहीं होता था। [6]कभी-कभी बहुधा इस, उस से दिक्, दु:ख, दिल की घबड़ाहट और उदासी झेलनी पड़ी।

[7]लेकिन ईश्वर की कृपा के द्वारा तथा हमारे प्यारे पापसुनक पुरोहितगण, जैसे रेभ० फादर ख्रीसान्त सपार्त, ये० सं०, रेभ० फादर लुदोविक हागेनबेक, ये० सं० पर विशेष करके रेभ० फादर यान देस्मेत, ये० सं० की अगुवाई और मदद से हम लोगों को बल और दिलासा मिलने से स्थिर रह सकी हैं।[20] [8]ऐसा होते-होते समय, बरस बीतता चला।

41. [1]अन्त में ईश्वर ही के चलाने से ऐसा हुआ है। [2]1895 और 1896 ई. के बीच में बहुत ही भयानक महामारी, याने हैजा और अकाल, देश में फैल जाने के कारण रोज-रोज बहुत लोग मर जाने लगे। [3]सरकार की मेहरबानी से, रोज-रोज साँझ को गरीब-दु:खी भूखों को कुछ-कुछ खाना दिया जाता था। [4]सैकड़ों क्या बूढ़े, जवान, बच्चे, स्त्री और पुरुष थोड़ा भात पाने के लिये आया करते थे। [5]मगर तौभी बहुत ही कमजोर दु:खित-पीड़ित लोग, जिन को उठने-बैठने और चलने-फिरने की शक्ति कुछ न थी, वे कैसे खाना लेने को आवें! [6]बेचारे चारों तरफ क्या शहर में, बस्ती, खेत, मैदान और रास्ता सड़क की नलियों में इधर-उधर गिरे पड़े मर जाने लगे। [7]उन्हीं दिनों में फादर लोग भी बहुत ही कम थे। [8]तौभी जहाँ तक हो सका सब फादर लोग उन्हीं आत्मा की और बदन की परवस्ती के निमित्त खूब दौड़ धूप किये। [9]अन्त में यह हुक्म हुआ कि सब मदर लोग भी इस पवित्र और महान कामों में फादरों की मददगार होवें। [10]होते-होते हम लोगों के स्कूल में भी यह भयानक बीमारी चढ़ाई कर दी और कई लड़कियाँ मर भी गईं। [11]तब तुरन्त स्कूल बन्द किया गया और सब लड़कियों को अपने-अपने गाँव घर भेज दिया गया। [12]प्यारी मदरों को इस भयानक कामों में कुछ-कुछ मदद देने के लिये, हम चार ही लड़कियाँ अपने निज राजी और खुशी से उन के साथ रह गईं। [13]प्यारी मदरों के साथ हम लोग रोज-रोज दवा, चावल, कपड़ा और चटाई कुलियों के द्वारा लेकर इधर-उधर, घर-घर, टोली-टोली, बस्ती और गाँवों तरफ घूमा फिरा करती थीं। [14]तब जो जिन को दवा, चावल-दाल, कपड़ा चटाई का दरकार होगा, सो देती जाती और

---

20 धर्मसंघीय जीवन में परिपक्व होने की पहचान यही है कि व्यक्ति का ईश्वर में विश्वास पक्का हो रहा है अथवा नहीं, कि सामुदायिक जीवन के प्रति अभिरुचि बढ़ रही है अथवा नहीं तथा परस्पर खुलापन, स्वतंत्रतापूर्वक निर्णय लेने की क्षमता, भावनात्मकता, प्रौढ़ता व धार्मिक कार्यों के प्रति अभिरुचि बढ़ रही है अथवा नहीं। ये लक्षण धर्मसंघीय जीवन के लिए उपयुक्त हैं। (देखिए - संविधान, न० 76 से 78; निर्देशिका, न० 119. ङ)

दिलासा देकर उन्हें धर्म की मूल बातें समझाती थीं तथा मरण संकट में पड़े हुओं को तुरन्त ही बपतिस्मा देती जाती थीं। [15]दिन-रात लोगों के दु:ख से रोने-विलापने की आवाज सुनाई पड़ती थी। [16]प्यारी मदरों को और हम लोगों को अपनी विनती तथा आहार करने की एक फुर्सत तक न होती थी। [17]इधर-उधर चारों ओर से लोग प्यारे फादरों के पास और यहाँ भी दौड़े आते थे। [18]कोई कहता चलिये मदर हमारे घर में दो-तीन मर रहे हैं, दवा दीजिये, कोई चावल दाल, कोई चटाई कोई क्या माँगते थे। [19]बोलकर कि हाय! हमारा पिता, माता, स्त्री, बेटा या बेटी, भाई, बहिन मर गये हैं उन के गाड़ने के लिये कुछ भी नहीं है, इत्यादि कहा करते थे। [20]किस की सुने, किस की नहीं। [21]उन्हीं दिनों में यहाँ राँची की बड़ी मदर मेरी तेरेसा बोन्नर थी। [22]वह गरीब दीन-दु:खियों की बड़ी प्रेमी और दान दाता थी। [23]इस अवसर पर परोपकार के कामों में सैकड़ों रुपये और असबाब वे खर्च कर डाली हैं, फिर अनाथ नन्हें गोद के बच्चे और लड़के-लड़कियों को यहाँ लाकर उन का पालन पोषण कराई हैं। [24]जो जितने अनाथ लोग जीते रह गये, उन की असली माँ की तरह होकर शिक्षा-दीक्षा की भी चेष्टा की हैं। [25]हम चार लड़कियों के बीच में सेसिलिया जो मेरी बेर्नादेत्त की बहन थी, उसे घर जाना उचित हुआ। [26]इसलिये कि घर में भी बीमारी के कारण से मदद की जरुरत थी, इसी कारण दो बहनों में से एक को जाना पड़ा। [27]पिता जी आकर मदर से सब बातें कह कर ले गये। [28]जब भाई, जो बुखार से मरण के ऐसा पीड़ित था, को पूरा आराम हो गया है, तब सेसिलिया फिर कॉन्वेंट लौट आई।

42. [1]हम लोग अक्टूबर 1896 ईस्वी में अपने माता-पिता से विदा लेकर कॉन्वेंट में रह गईं और बात कामों में जो जैसे काम बात होवे, रात-दिन उन के अधीन रहने को ठान लीं। [2]दो हफ्ते तक तीनों बहनें - कृपा (मरिया बेरोनिका), ख्रिस्त आनन्दित रूथ (मरिया बेर्नादेत्त) और सुशीला (सेसिलिया) दो हफ्ते तक गाँव में रहीं, घरानों, भाई-कुटुम्बों से, गाँव वालों से भेंट मुलाकत कीं और उन्हें बतलाई कि यह अन्तिम बार है, तो वे सब रोने कलपने लगे। [3]मौका भी मिल गया, इसी बीच में एक और बड़ी झँझट उठ खड़ी हुई, याने जोनस तिग्गा, बढ़म्बई का लड़का, मरिया बेर्नादेत्त को शादी के लिए जुल्म करने लगा। [4]तब वह उस से बोली कि प्यारे भाई जोनस, आप को मालूम हो कि मैं यीसु की सेवा में जाना चाहती हूँ। [5]इसलिये आप, अपनी बात, काम और चाल से मेरे रास्ते पर कुछ भी कँकड़ी, ईंट, पत्थल के टुकड़े मत बिछाइयेगा, ऐसा कि मैं अपनी मनुष्य कमजोरी के कारण ठेस ठोकर खाकर न गिर पड़ूँ। [6]फिर भी मेरा

यह कहना है कि किसी प्रकार की हवा या आँधी के झोंके से, एक पत्ती या छोटे कागज के टुकड़े तक मेरे पास मत उड़ाइएगा। [7]यही तो हमारी अन्तिम विदाई का प्रेमी नमस्कार है सो जानियेगा। [8]इस पर वह बोल उठा कि आप ही मुझको बतला दीजिए कि मैं किस को चुन लूँ? [9]मैं बोली, आप की इस में जो इच्छा है, सो ही तो बनेगा। [10]वह बोला, पर तौभी जिस लड़की को आप बोलेंगी, उसी को मैं खुशी से मँजूर करूँगा। [11]इस पर मैं बोली कि हमारे प्यारे माता-पिता की अनुमति बिना मैं कभी किसी के यहाँ नहीं आती जाती हूँ। [12]केवल प्यारी मदरों के हुक्म से अल्फोंस कुजूर और रोबेरटीना सुसई की शादी में बढ़म्बई गई थी। [13]उसी प्रकार अभी मैं कहती हूँ कि आप पत्थलकुदवा लूईसा लकड़ा नामक, मथियस की बेटी को शादी कीजियेगा, वह तो बहुत ही सीधी-सादी लड़की है, सो आप की जो जैसी खुशी हो, सो कीजियेगा। [14]ईश्वर की बड़ी कृपा और आशिष आप पर और आप के सारे घरानों पर होवे। [15]मैं यह भी दृढ़ प्रतिज्ञा करती हूँ कि आप के जितने पुत्र-पुत्रियाँ होंगे, उन सभों को मैं अपने निज धर्म बेटे-बेटियाँ मानकर, सदा उन के लिये प्रार्थना किया करूँगी। [16]तब ऐसे जोनस तिग्गा और लूईसा लकड़ा की शादी हो गई और मदरों ही की आज्ञा से हम तीनों बहनों को और बढ़म्बई जाना ही पड़ा। [17]शादी भोज खत्म होने पर हम लोग जोनस और लूईसा को छोड़कर सुसई चली गईं। [18]वहाँ डेढ़ दो घंटे ठहर कर अपने सरगाँव चली गईं। [19]घराने के लोग खूब खुश हुए और हमें बड़ा खाना खिलाने के नाम से एक मोटा घुसरा बण्डा को मारे हैं। [20]राँची सिरोमटोली घरानों के लिये एक डुण्डी[21] भेज दिये हैं। [21]सरगाँव में घराने के लोग, हमें विदा देने में खूब ही दु:खित हुए, रोये, कलपे पर ईश्वर की पवित्र इच्छा जानकर हमें विदा किये हैं। [22]जरुर हमलोग ठीक से समझती हैं कि एक साथ तीन बेटियों को घर से विदा देना सदा के लिए बहुत ही मुश्किल और कठिन बात तो थी, पर ऐसा होना अवश्य ही था।

43. [1]ईश्वर को बहुत-बहुत धन्यवाद होवे। [2]अन्त में जब यह बीमारी बिलकुल मिट गई, तो स्कूल फिर खुल गया। [3]हम लोग पहले की तरह अपने-अपने कामों

---

[21] डुण्डी वह संदेश या दान है, जो पर्व मनाने के लिए मारे गये सूअर के पिछले पैर वाला भाग है, जिसे उनके लिए पहुँचाया जाता है, जो विवाह भोज में भाग नहीं ले पाये। इस दान के माध्यम से विवाह समारोह में उन्हें भी शामिल करने का चिन्ह है। सामान्यत: प्रथा के अनुसार यह पुरोहित को भी भेंट में दी जाती थी, जिन्होंने विवाह की विधि सम्पन्न की।

को फिर करने लगीं। [4]तब कुछ दिनों के बाद में, हम लोग सच्चाई से बोलती हैं कि नि:सन्देह यह असीम दयालु परमेश्वर ही की योजना से ऐसा हुआ है, कि बहुतेरे फादर, कई मदर और कई दूसरे लोगों की आँखें और अधिक से खुल गईं। [5]वे लोग अपने आप से आर्चबिशप को गवाही देकर बोल उठे कि हो न हो आप इन लड़कियों को बिना देर किये धर्मसंगत का जीवन व्यतीत करने की कृपा कीजिएगा। [6]पहले हम लोग कहते थे कि अविवाहित रहना इस देश के नियम के विरुद्ध है, इसलिये कभी हो नहीं सकता है। [7]इस मुल्क में कोई भी बिना शादी के रह नहीं सकते हैं, इत्यादि। [8]परन्तु हम लोग इन लड़कियों की चाल, बात और विशेषकर इन के कामों को देखकर पूरे तौर से मालूम करते हैं, कि इनका इरादा जो है सो खूब ठीक तथा पक्का है। [9]इसलिये जब कि दूसरे-दूसरे देश की लड़कियाँ संगति जीवन व्यतीत कर ईश्वर की बड़ाई और आत्माओं की मुक्ति के हेतु कितने-कितने धर्म काम करती हैं, तो यहाँ इस देश में भी क्यों नहीं हो सकेगा? [10]इन लड़कियों की कुँवारी रहने की तेज और दृढ़ इच्छाओं को मालूम करके, अब हम लोग खूब समझ गये हैं। [11]इस तरह हो न हो, यह तो परमेश्वर ही का मनोरथ है। [12]वह जरुर से यह चाहता है कि इस जंगली देश की लड़कियाँ भी, उसे विशेष रीति से प्रेम, सेवा और आत्मा बचाव के कामों में अपने को बिल्कुल दे डालें।

44. [1]सो हे मान्यवर प्यारे बिशप! आप ठीक से इसके बारे में सोच-विचार करके देख लीजिये कि क्या करना होगा।

45. [1]इन बातों व कामों की पूर्ति में सब से अधिक चेष्टा किये हैं - रेभ० फादर यान देस्मेत, ये० सं०, कलकत्ता की लोरेटो प्रोविंशल रेभ० मदर मेरी गोन्जागा जोयनेट और राँची की बड़ी प्रधानी मदर मेरी तेरेसा बोन्नर। [2]ये तीन जन विशेष हैं जो शुरु से अन्त तक, अपनी पूरी शक्ति भर कोशिश किये हैं कि सब ठीक हो जा सके। [3]तब आखिर में आर्चबिशप बहुत-बहुत सोच-विचार करने के बाद में सोदालिती, याने निष्कलंक माँ कुँवारी मरिया की संगत स्थापना की छुट्टी 8 दिसम्बर 1896 ई. में दे दिये हैं। [4]तब प्यारी मदरों ने प्राय: 50 सीधी लड़कियों के नामों को एक कागज पर लिखकर, ठहराए हुए स्थान पर तीन महीने टाँग रखी थीं। [5]तब, जब-जब मदर लोग उस कागज पर लिखी हुई लड़कियों की भूलें देख पातीं, तब-तब उनके नाम के सिद्ध में कुछ चिह्न दिया करती थीं। [6]पीछे जितनी लड़कियाँ योग्य ठहरीं, उन को तब छोटा तगमा, पतला नीले रंग का फीता दिया गया। [7]तब फिर उन पतला फीता पायी हुई

लड़कियों का नाम, चुनाव के निमित्त और टाँगा गया।[8]अन्त में जो-जो लड़कियाँ अच्छी सुचाल की निकलीं, उन्हें कुँवारी मरिया ख्रीस्तीयों की मदद का पर्व, अर्थात् 24 मई 1897 ईस्वी में रेभ० फादर ख्रीसान्त सपार्त, ये० सं० के हाथ से कुँवारी मरिया का तगमा, चौड़ा नीला फीता सहित आशिष होकर के 12 लड़कियों को दिया गया। [9]यही तो राँची में लड़कियों के लिये सोदालिती का पहला शुरु दिन रहा है।

46. [1]आगे वर्णन हो चुका है कि कैसे पूर्णप्रसाद ने अपनी दो बेटियों, याने बेर्नादेत्त, सेसिलिया और भतीजिन बेरोनिका को विवाह कराने के निमित्त बहुत ही जोर जुल्म कर गये थे। [2]मगर ये तीनों लड़कियाँ अपने-अपने मतलबों में स्थिर रहके, दृढ़तापूर्वक भाई कुटुम्बों की सभा में सदा कुँवारी रहने का पक्का इरादा को स्पष्टता से स्वीकार करके 10 अक्टूबर 1896 ईस्वी में, घर से एक दम चल दीं और कॉन्वेंट आ गईं। [3]हमलोगों की एक साथी अर्थात् मरिया, जो मुक्ता विधवा की बेटी है, सो तो कॉन्वेंट ही में रह गई थी। [4]पीछे 26वीं जुलाई 1897 ई. में महामान्यवर प्यारे पौल गूथल्स ने "सन्त अन्ना की बेटियों" की संगत का नींव डालना बड़ी खुशी से मंजूर किये। [5]इस वास्ते राँची की बड़ी मदर मेरी तेरेसा बोन्नर ने इस बात को मालूम करके हम लोगों को अपने प्यारे माँ बाप और भाई बन्धुओं से विदा लेने के निमित्त दो हफ्ते की छुट्टी देकर घर भेज दी। [6]तब हम लोग घर जाकर घरानों के साथ में बड़ी खुशी से कुछ दिन तक टिक गईं और रोज व रोज उन्हें धर्म की बातें बोलकर समझाती थी, ऐसा कि इस जुदाई के कारण उन को दिल में कुछ दिलासा और चैन मिले। [7]जब छुट्टी के दिन पूरे हुए तो हम लोगों को उनसे विदा लेना ही पड़ा। [8]ओह! एक दूसरे से अलग होना, यह तो अवश्य ही अत्यन्त दु:ख दायक घड़ी थी। [9]सभों का दिल जैसा अफसोस से टूट जाकर, आँसूओं की धारा बहने लगी। [10]किसी के मुख से एक बात तक न निकलती थी, क्योंकि दु:ख से गला जैसा दब गया था। [11]तौभी हम लोग अपने आँसूओं को रोक, जी सम्भाल कर बड़े प्रेम से अन्तिम बार यीसु की बड़ाई कह और प्रेम का चुम्बन देकर झट से रवाना हो गईं। [12]वे रोते विलापते खड़े हो टकटकी बाँधे देख रहे थे। [13]हाँ घरानों की उदासी सच्चाई से बड़ी ही थी सो हम समझे हैं, क्योंकि तीन बेटियाँ एक ही घर से एक ही दिन उनसे अलग हो गईं।

अध्याय 6

धर्मसंघ की स्थापना

47. [1]जब महामान्यवर बिशप स्वामी से ठहराया हुआ समय आ पहुँचा तो हम लोग 26 वीं जुलाई 1897 ई. में, संत अन्ना की बेटियों की संगत में चार जन पहली उम्मेद्वार या माँगनेवाली हुईं।

48. [1]भर्ती होने के दिन पर, पवित्र कोम्यूनियों लेने के पहले बेंच पर घुटने टेक कर यह "चढ़ावे की विनती" बोली। [2]अर्थात् – *हे यीसु, मेरे छोटे चढ़ाव को मंजूर कर! [3]तू ने मुझे अपने को सौंप दिया है। [4]मैं तुझे अपने को सौंप देने पाऊँ। [5]मैं तुझे अपना बदन दे देती हूँ, कि साफ निर्मल रहे। [6]मैं तुझे अपना आत्मा दे देती हूँ कि पाप से अलग होवे। [7]मैं तुझे अपना दिल दे देती हूँ कि तुझ को नित प्यार करे। [8]जितनी साँस, मरने तक और मरते ही मुझे लेना है, सब को मैं तुझे दे देती हूँ। [9]जीने में भी, मर जाने में भी, मैं तुझे अपने को दे देती, कि युग-युग मैं तेरा ही रहूँ।* [10]विनती हो चुकने के बाद, पवित्र कोम्यूनियों लीं।

49. [1]हम लोगों को कई एक सरल साधारण नियम दिये गये, जैसे साथ-साथ विनती-प्रार्थना करना, एक साथ खाना-पीना, मन बहलाना, चुप्पी साधना, कुछ ध्यान विनती और धर्म पढ़ाई करना, इत्यादि। [2]फिर एक रंग ढंग का पहरावा पहना करती थीं – काले आँचल (किनारी) की सफेद साड़ी, लम्बी आस्तीन की सफेद कुर्ती (जाकेट) और गले पर नीले रंग के चौड़े फीते से लगे सन्त मरिया का एक तगमा (चन्दवा) और हमेशा सिर पर साड़ी की घूँघट। [3]हफ्ते में एक बार फादर से और दो बार मदर द्वारा धर्मोपदेश सुनती थीं। [4]उपदेशक फादर उन्हीं दिनों पर रेभ० फादर अन्द्रे ग्रिन्यार, ये० सं० और रेभ० फादर ख्रीसान्त सपार्त, ये० सं० थे।

50. [1]जब मान्यवर आर्चबिशप ने देखा कि ये लड़कियाँ तो अपनी पवित्र इच्छाओं में दृढ़ बनी रहती हैं। [2]तब वह संगत के पहरावे तथा सन्त फ्राँसिस असीसी के तीसरे दर्जे के रुल (नियमानुसार) चलाने के मतलब से हमारे सिर के बालों को नहीं काटने के विषय सोचने लगे। [3]इधर हम लोगों ने अपनी बड़ी प्रधान मदर मेरी तेरेसा बोन्नर के द्वारा आगे से बिशप तथा प्रोविंशल रेभ० मेरी गोंजागा के पास यह खबर दीं बोलकर, कि हमलोगों की संगत का पहरावा तथा रहन-सहन यूरोपियन की तौर पर नहीं, लेकिन हमारे निज देश की रीति पर हो। [4]इसलिए

हम लोगों की यह अर्जी है कि कुछ प्रकार की साड़ी ही हमें दी जाय तो भला होगा। [5]फिर हम लोगों को यह भी सुनने में आता है कि आप लोग हमारे सिर के बालों को न काटने का विचार कर रहे हैं, सो यह बात हम लोगों को नहीं पसंद आती है। [6]हमारी यह तेज-तेज इच्छा है कि हम लोग समस्त दिल ओ जान से ईश्वर ही की हो जाएँ। [7]हाँ सच बात है कि स्त्री जातियों की सिंगार तो विशेष कर सिर के बाल ही हैं सही, मगर उसे भी हम लोग खुशी से त्याग देने को तैयार हैं। [8]यदि आप लोग तिस पर भी बालों को काटना मंजूर नहीं करेंगे, तो जानिये कि हम लोग निज हाथों से अपने आप काट लेंगी।

51. [1]हम लोग यूरोपियन पहरावे तथा रहन-सहन इस कारण मंजूर नहीं करतीं, क्योंकि हमारे देश की बहुत लाचारी हालत है सो यदि हमें पीछे कुछ मुश्किलता आ पड़े, या कि इस देश में धर्म की सतावट हो जाए, जैसे दूसरे-दूसरे देशों में होता है, तो हमलोग दशा-दशा के अनुसार अपनी जाति भाई कुटुम्बों के बीच में रह सकेंगी। [2]इन सब हमारी इच्छाओं को मालूम कर महामान्यवर बिशप पौल गूथल्स और मान्यवर रेभ० मदर प्रोविंशल बहुत-बहुत सोच करने लगे। [3]अन्त में महाबिशप तब अपनी निज इच्छानुसार साड़ी की बुनावट का नमूना देकर, अर्थात् आठ गजवाली नीले रंग की साड़ी, जिस के किनारे में दो सफेद धारी हो, तैयार कराया है। [4]कमरबन्द सफेद सूती रस्सी, जो तीन-तीन लपेट की पाँच गाँठ हो, याने सन्त फ्राँसिस असीसी के पाँच घावों की यादगारी में बनवाया है। [5]पहनने के लिये सफेद लम्बी कुर्ती या कमीज और सिर पर सफेद पट्टी।

52. [1]आर्चबिशप स्वामी अपने निज हाथों से सन्त अन्ना की बेटियों के लिये नियम अर्थात् कानून कुछ बढ़ा चढ़ाकर लिख दिये हैं। [2]तब रेभ० फादर यान देस्मेत, ये० सं०, के हाथ देकर बोले कि आप सहज हिन्दी में इसे लिख दीजिये, तो उसने ऐसा ही किया है। [3]पीछे हम लोग उसी का नकल करके अपने-अपने लिये रख लीं। [4]असीम दयालु परमेश्वर की मेहरबानी से, हम लोगों के लिये यही सुभाग्य दिन, जिसे हम लोग बहुत दिनों से

जोहती थीं, आ पहुँचा। [5]छह: फरवरी 1899 ई. में हमलोग चार जन संगत के पहरावे से सुशोभित की गईं। [6]महामान्यवर पौल गूथल्स ने स्वयं क्रिया-कर्म किया। [7]पहरावे जैसे कुछ आगे वर्णन हो चुका है -याने आठ गज वाली नीले रंग की साड़ी, जिस के किनारे में दो सफेद धारी, कटिबंद सफेद सूत की रस्सी, जिस में तीन-तीन लपेट की पाँच गाँठ और ये बड़ी-सी काली रोजरी माला। [8]इन सब चीजों को आशिष करके हम लोगों को एक-एक दिया गया। [9]सिस्टर बनते घड़ी तो दस्तूर से नाम बदल कर नया नाम दिया जाता है। [10]मगर मान्यवर महाबिशप की इच्छानुसार कि ये लड़कियाँ संगत की शुरुवाली हैं तथा सब लोग इन्हें अपने निज नामों से पहचानते हैं, इस कारण से नाम नहीं बदलेगा पर अगला नाम रखना ही पड़ेगा। [11]हम चार जन के ये नाम हैं: सिस्टर अन्ना बेर्नादेत्त, सिस्टर अन्ना सेसिलिया, सिस्टर अन्ना बेरोनिका और सिस्टर अन्ना मेरी।

53. [1]मान्यवर प्रोविंशल रेभ० मदर मेरी गोंजागा खुद आप इस भाग्यवान हर्षित दिन की खुशी बढ़ाने तथा पूरी करने के लिये, हम लोगों की एक अति पुरानी प्यारी सिस्टर तेरेसा, जो कि चार लोगों में से जो लोरेटो मदर लोग 19 मार्च 1890 ई. में पहली बार राँची आई थीं, उन्हें अपने साथ लेकर आईं। [2]ऐसे तब अपनों की उपस्थिति से हम लोगों को बहुत आनन्द प्राप्त हुआ। [3]फिर जरुर हम लोगों की प्यारी मदरों का दिल भी अत्यन्त आनन्द से उमड़ जाकर फूला न समाया होगा। [4]जब कि पहली बार उन्होंने देखा कि कैसे उनकी गरीब लड़कियाँ अपनी प्यारी मदरों की भली चाल नमूनों को देख करके, वे भी अपने को यीसु की सेवा में दे देती हैं। [5]खुशी से भर जाकर किसी-किसी की आँखों से आँसूओं की धारा बह चली। [6]उसी दिन पर वही पुरानी प्यारी सिस्टर तेरेसा नामक ने ईश्वर को धन्य मान के सिस्टर अन्ना बेर्नादेत्त को अपनी गोद में लिये, आगमवक्ता बूढ़े सन्त सिमेयोन के अनुसार पुकार उठी कि "हे प्रभु अब मुझे अपनी गरीब दासी को खुशी से मरने दीजिये, क्योंकि अब मैं अपनी निज आँखों से आप के अद्‌भुत प्रेम का फल देखने पायी हूँ। [7]मैं देखती हूँ कि आप इस जंगली देश की लड़कियों के बीच में से भी अपनी प्यारी दुल्हिन होने के लिये चुन लिये हैं।"

54. [1]इस सुअवसर तथा हर्षित दिन ही, हमारे मान्यवर पिताजी पूर्णप्रसाद ने भी हम लोगों के साथ मेल-मिलाप कर लिया और आदर सत्कार में खूब बाजा गाजा करके उत्सव मनाया तथा भाई-बन्धु और मित्र गणों को नेवता कर बड़ा

भोजन खिलाया। [2]बहुत-बहुत लोग बाप के घर में चारों ओर से आ गये थे। [3]एक ही दिन पर अल्फ्रेद नामक हमलोगों के एक भाई का विवाह भी होने को था। [4]तब तीन बेटियों और बेटे के नाम पर साथ में, सब भाई-बंधु और नेवताहारियों[22] को खिला पिला सके। [5]मगर महामान्यवर बिशप स्वामी ने पिताजी को पास बुलाकर कह दिया, कि "देखिये पूर्णप्रसाद! आप की तीन बेटियाँ ईश्वर की हैं। [6]इसलिए ईश्वर की तरफ का अर्थात् आप की बेटियों की धर्मक्रिया आगे होना उचित है। [7]बेटे की शादी पीछे दूसरे दिन पर होगा।" [8]महाबिशप के कहे अनुसार तब किया गया। [9]पिताजी ने अपने बेटे-बेटियों के नाम से खूब धूमधाम मचाकर बड़ा खाना खिलाया पिलाया और सब लोगों को सन्तुष्ट कर दिया है।[23]

55. [1]हम लोग दो बरस दो महीने तक नवशिष्यालय में रहीं। [2]एक मान्यवर प्यारी मदर मेरी एमेल्दा लोगिन[24] नामक हम लोगों की नोविस मिस्ट्रेस थी। [3]वही हम लोगों को कुछ-कुछ देखभाल करके अपनी अच्छी बात काम तथा सलाहों से अगुवाई करती थी। [4]इस त्योहार के हो चुकने के बाद प्यारी प्रोविंशल रेभ० मदर मेरी गोंजागा तथा वही पुरानी बूढ़ी सिस्टर तेरेसा, जो संग में आई थी, उन्हें कलकत्ता लौटना पड़ा। [5]इसी लौटते घड़ी में प्रोविंशल मदर हम लोगों की बड़ी मदर मेरी तेरेसा नामक को बदल करके उस की जगह में एक नई मदर मेरी जेरट्रूड को रख छोड़ी और पहली वाली को ले गई। [6]यह बड़ी मदर है, जो हम लोगों के लिये एक अति प्यारी-प्यारी पहली धर्म माँ की तरह होकर, सब कुछ की चिन्ता फिक्र करके बहुत ही दु:ख उठाई और मिहनत की है। [7]जिससे हम लोग धर्मसंगत के जीवन को प्राप्त कर सकें, सो बदल गई है। [8]ऐसी प्यारी मदर को खो देने से हम लोगों के लिये बहुत-बहुत ही अफसोस हुआ है, लेकिन ईश्वर की पवित्र इच्छा पूरी हुई है। [9]इस संसार में मरते दम तक ऐसी दशा तो होती है, अर्थात् सुख के साथ-साथ हमेशा दु:ख भी अवश्य मिला हुआ रहता है। [10]हम लोग दिल टूटा हो बहुत रोती विलापती हुई अपनी प्यारी मदर को यथाशक्ति अपनी कृतज्ञता प्रगट कीं। [11]यह कहके कि प्यारी धर्म माँ, हम लोग

---

22 छोटानागपुर की संस्कृति में यह परम्परा है कि किसी भी पर्व को मनाने के लिए जब कोई व्यक्ति आमंत्रित किया जाता है, तो वह भी पर्व का खर्च उठाने के लिए स्वेच्छापूर्वक कुछ दान लेकर आता है, उसे 'न्योताहारी' कहा जाता है।

23 धर्मबहनों के व्रत को 'ईश्वर के साथ शादी' समझ कर पर्व मनाने की प्रथा शायद यहीं शुरू हुई, जो आज तक जारी है। इस सामाजिक-विधि को पूरा किये बिना माता-पिता अपने दायित्व को अधूरा समझते हैं।

24 Mother Mary Imelda O'Loughlen (Irish name)

आपके प्रेम तथा बेबयान उपकारों की याद, हमारे दिलों में छाप देकर, जीवन भर कभी न भूलेंगी। [12]आप के लिये प्रार्थना किया करेंगी। [13]हम लोग सदा आप की ऋणी रहेंगी। [14]बदला चुकाव हम से नहीं हो सकता है। [15]ईश्वर ही हमारे बदले आप को इस लोक तथा परलोक में बदला फिराके बड़ा इनाम देवे, इत्यादि कह कर प्रेम से विदा ली हैं। [16]प्यारी मदर भी हमारे उदास दिलों में दृढ़ता, साहस और शांति की बातों से आनन्दित रहने को खूब उसकाई हैं बोलकर, कि ईश्वर की इच्छा ऐसी ही है। [17]हम लोग एक दूसरे की दृष्टि से दूर रहते हुए भी, दिल के प्रेम तथा सोच से साथ हो, प्रभु की बड़ाई और आत्माओं की मुक्ति के लिये खूब काम करेंगी। [18]ऐसा करने से सब कुछ भला होगा। [19]आशा करती हैं कि ईश्वर की कृपा से हम लोग फिर एक दिन मुलाकत कर सकेंगी, इत्यादि कहकर यीसु की बड़ाई करके और आशिष देकर विदा हुईं।

56. [1]दो बरस के बाद अर्थात् नवशिष्यालय का समय बीत जाने पर हम लोगों को पहली मन्नत ग्रहण करने की मँजूरी दी गई। [2]महामान्यवर रेभ॰ पौल गूथल्स ने फिर अपने निज हाथ से संगत के पहले नियमों को बहुत ही बढ़ाकर लिख

माता अन्ना सेसिलिया माता अन्ना मेरी बेनदित्त माता अन्ना बेरोनिका माता अन्ना मेरी

दिया। [3]परन्तु हाय! हाय! उन्हीं दिनों पर महामान्यवर प्यारे बिशप स्वामी का स्वास्थ्य बिगड़ जाने लगा था, इसी वजह से वह हम लोगों की मन्नत के दिन उपस्थित न हो सके, परन्तु वह अपने नाम से फादर सुपीरियर ब्रिसियुस मोलमन, ये॰ सं॰, को भेज दिये। [4]उस ने आकर 8 अप्रैल 1901 ईस्वी में हम लोगों को पहली मन्नत के दिन में हर एक सिस्टर को सन्त अन्ना का एक चन्दवा (तगमा) और एक अगूंठी आशिषित कर दी। [5]काले रंग के फीते में चन्दवा सिस्टर के गले का हार बना रहता है। [6]इस संगत का पहरावा ऐसा ही है।

57. [1]ओहो! हम लोगों के अपार सुख का वर्णन अब कैसे किया करें? [2]असीम सर्वशक्तिमान, असीम दयालु ईश्वर के बड़े अचम्भित प्रेम का गुणगान कैसे करें? [3]उस ने इतनी बड़ी कृपा की है कि वह हम लोगों को अपना निज बना

लिया है। [4]अब हम लोग प्रत्येक सच्चाई से यह कह सकती हैं कि यीसु आप मेरा सर्वस्व और मैं आप की निज हो गई हूँ। [5]ओह! हमारे सुभाग्य नसीब की बड़ाई कौन समझने और नापने सकता है? [6]यह तो मनुष्य की बुद्धि तथा समझ के बाहर है। [7]हाँ ईश्वर असीम मेहरबान और दानदाता की विशेष कृपा से अकेला, हम लोग इस ऊँचे और पवित्र हाल तक उठाई गई हैं, तो हमें जरुर से यह उचित है कि उस को यथाशक्ति अपने समस्त दिलोजान से प्यार, आदर और धन्यवाद दें। [8]हाँ सुख, दु:ख, थकावट, तंगहाली, याने जो कुछ भी हो, अपने प्राण निछावर तक उस की सेवा में सदा उत्साहित तथा दृढ़ बने रहने की कोशिश किया करें।

58. [1]हम लोगों की मन्नत करने के मनोहर खुश दिन के लिये, अति प्यारी प्रोविंशल रेभ॰ मदर मेरी गोंजागा ने आप फिर उपस्थित होकर, हमारे सुख आनन्द को दुगुणी से चौगुणी बढ़ा दी हैं, सो उन्हें कोटि-कोटि धन्यवाद। [2]उस की दया और भलाईयाँ अकथनीय हैं। [3]इस के अतिरिक्त और दूसरे-दूसरे उपकारकों को भी हम लोग सारे दिल से धन्यवाद देती हैं।

59. [1]इस उत्सव में फिर और प्रिय पिता-माता तथा मित्र-बन्धुगण हमारी खुशी में शामिल होकर बहुत-बहुत ईश्वर को धन्यवाद दिये हैं, जिस की अपार प्रेमी दृष्टि डालने से छोटानागपुर में ऐसे महान् कार्य हुए हैं।

60. [1]हम लोगों के अति मान्यवर प्यारे रेभ॰ फादर यान देस्मेत, ये॰ सं॰ इस उत्सव में हाजिर न हो सके, क्योंकि उन्हीं दिनों में वे मोरापाई में थे। [2]वे वहाँ भी इस धर्मसंगत के विषय में चर्चा कर रहे थे। [3]इस की बातें सुनकर मोरापाई से चार बंगाली लड़कियाँ भी राँची के जाँच घर में आ गईं। [4]जिस रोज हम लोग अपनी पहली मन्नत कीं, उसी दिन पर ये बंगाली लड़कियाँ प्रार्थी के दर्जे में भर्ती हुईं।

61. [1]बड़ी उदासी की बात कि इसी साल पर 4 जुलाई 1901 ईस्वी में अति प्यारे महामान्यवर पौल गूथल्स की मृत्यु हो गई। [2]ईश्वर उन्हें अपने बड़े-बड़े कामों का प्रतिफल देने के निमित्त, अपने पास बुला लिये हैं। [3]ईश्वर उन्हें चैन और आराम दें।

62. [1]26 जुलाई 1901 में हम लोग फिर मन्नत चढ़ाईं कि वार्षिक मन्नत का दौर ठीक होवे। [2]26 जुलाई 1902 में हम लोग फिर एक वर्ष की मन्नत की हैं। [3]इसी 1902 ई. की 8वीं दिसम्बर को ये चार बंगाली लड़कियाँ राँची कॉन्वेंट ही में संगत के पहरावे से पहिराईं गईं। [4]उन के नाम हैं, सिस्टर अन्ना रेजीना, सिस्टर

अन्ना बेरोनिका, सिस्टर अन्ना अगाथा और अन्ना मगदलेन। [5]तब बात ऐसी ठहराई गई कि अब छोटानागपुर में प्यारी लोरेटो मदरों की जगह पर, बेल्जियम से उर्सुलाईन मदर लोग आवेंगी। [6]इस कारण ये चार बंगाली सिस्टरें मदरों के साथ जाएँगी और संगत की शाखा, बंगाली लड़कियों के लिये शुरु करेंगी। [7]वे लोग लोरेटो के अधीन रहती हैं, जब तक उन के लिये घर न बना था, तब तक वे एनटल्ली में टिक गई थीं। [8]पीछे उनके लिये मोरापाई में घर बनने लगा। [9]वहीं उन का मातृगृह है। [10]वहीं उन का जाँचपन, क्रिया-कर्म और शिक्षा-दीक्षा इत्यादि मान्यवर लोरेटो मदरों के द्वारा से होता है। [11]तो ईश्वर की अपार कृपा के चलाने से, जो मान्यवर प्यारे रेभ० फादर यान देस्मेत ये० सं० ने यहाँ छोटानागपुर में लड़कियों के लिये धर्मसंगत जीवन का सलाहकार और मददगार थे, उस एक ही प्यारे फादर के कामों से, बंगाली लड़कियों के लिये भी धर्मसंगत जीवन का द्वार खुल गया। [12]इधर हम लोग अपनी प्यारी माननीय मदरों से बिछुड़ जाने पर, जो दु:ख हुए हैं, उसका वर्णन नहीं हो सकता है। [13]वे हैं जो शुरु में आकर 12 वर्षों तक अपने निज खर्च से खाना-पीना, थाली-बर्त्तन, कपड़ा-लत्ता इत्यादि देकर इस जंगली मुल्क की लड़कियों तथा स्त्रियों को ईश्वर के लिये बहुत प्रेम करके चिन्ता और कष्ट उठाके सिखलाई हैं। [14]वे ही हैं, जो काथलिक धर्म के विश्वास-रुपी बीजों को दिल में रोप दी हैं।[15]हाँ उन्हीं के कामों से जैसा छोटानागपुर की लड़कियों और स्त्रियों के बीच में परस्पर धार्मिक प्रेम, सुचाल तथा शिक्षित होने की अभिलाषा यहाँ तक जड़ पकड़ी कि होते-होते समय बीतते सभी समूचा छोटानागपुर जैसा धर्म और शिक्षा की उन्नति के बड़े पेड़ होकर फलने-फूलने लगा है। [16]ओह उन्हीं के अपूर्व प्रेम, दया और मिहनतों का वर्णन अकथनीय है। [17]इस कारण उन की और हमारे दिलों में भी धन्यवाद की याद चिरकाल सदा बनी रहेगी। [18]ईश्वर उन्हें अपने अनगिनत उपकारों का बड़ा प्रतिफल देवे।

63. [1]नवम्बर 1902 ई. से 4 अप्रैल 1926 ईस्वी तक अतिमान्यवर प्यारे रेभ० फादर अल्फोन्स स्कार्लाकन, ये० सं० हम लोगों की सब आत्मिक तथा शारीरिक जरुरतों के विषय, क्या बड़ी क्या छोटी क्यों न हो, हर एक बात कामों की बहुत-बहुत देख भाल करके चिन्ता और परवरिश किये हैं।

64. [1]मान्यवर बिशप स्वामी की आज्ञा से इसी फादर ने सन्त अन्ना की बेटियों के अगले नियम को बहुत ही बढ़ाया। गिरजा की इच्छा के अनुसार और 1904 ईस्वी में महामान्यवर प्यारे बिशप रेभ० ब्रिसियुस मोलमन ने इस नये नियम को ग्रहण किया।

65. [1]यही मान्यवर प्यारे रेभ॰ फादर अल्फोन्स स्कार्लाकन, ये॰ सं॰, ने हम सन्त अन्ना की बेटियों के लिये रोज-रोज की "धर्म विषयक ध्यान संग्रह" तथा "भली माता का दर्पण", ये दोनों किताबें, जो हम लोगों के लिये उत्तमोत्तम लाभदायक तथा सब धर्म बातों के मधुर रस से भरी स्वर्ग की ओर मन और दिलों को लुभाकर खींच लेनेवाली हैं, उसे बड़े फिक्र और मिहनत उठाकर रचा है। [2]ओह! उस ने हम लोगों के लिये अपने को बिल्कुल बलि कर दिया। [3]क्या तेज गर्मी की लू, क्या मूसलाधार वर्षा, क्या ठंड से सिकुड़ती देह, आदि कुछ की परवाह न कर प्रतिदिन हम अपनी गरीब छोटी बेटियों को धर्म उपदेश तथा सिखलाई देने, हमारे आत्मिक हाल जानने तथा प्रत्येक के दु:ख-सुख, घटी-कमी के सब विषयों का निरीक्षण करने आया करते थे। [4]हाँ हम सच कहती हैं कि जैसी मुर्गी अपने छोटे-छोटे चेंगनों को सब प्रकार की जोखिमों से बचाने के लिए अपने डैनों तले लुकाकर बचाती है, उसी भाँति वे हमारी रक्षा और पालन पोषण अपने मरण तक किये हैं। [5]इतने परोपकार का बदला हम से दिया ही नहीं जा सकता है। [6]हम सदा उसके ऋणी हैं। [7]असीम दयालु स्वर्गीय पिता ने उसे अपने भले कामों का इनाम ग्रहण करने के लिये 4 अप्रैल 1926 ईस्वी के पास्का एतवार के दिन अपने पास बुला लिया। ईश्वर उन्हें अनन्त आराम और चैन दे।

66. [1]13 जनवरी 1903 ईस्वी में बेल्जियम से माननीय प्यारी उर्सुलाईन मदर लोग राँची छोटानागपुर में लोरेटो मदरों की जगह पर आईं। [2]शुरु में वे चार ही जन आईं, जैसे हमारी लोरेटो मदर लोग आईं थीं। [3]जो शुरु उर्सुलाईन मदर आई हैं वे हैं - रेभ॰ मदर गोंजागा, मदर अन्तोनी, मदर उर्सुला और सिस्टर सबीना। [4]पीछे और आने लगी हैं। [5]उन्हीं के हाथ हम सन्त अन्ना की बेटियाँ पड़ गईं। [6]वे भी शक्ति भर हमारी चिन्ता और फिक्र करके पालन-पोषण का भार अपने ही पर ले ली थीं। [7]उन की रक्षा में हम लोग 16 वर्षों तक रहके साथ-साथ काम की हैं। [8]उन माननीय प्यारी मदर की दया, प्रेम तथा सब भलाईयों के लिये दिल से धन्यवाद देती हैं। [8]धन्यवाद देती हैं कारण कि वे हमारे राँची छोटानागपुरवासियों की आत्मा बचाव हेतु अपने अति प्यारे माँ -बाप, भाई-बहिन, कुटुम्ब तथा मित्रगणों को, हाँ स्वदेश तक त्याग देकर इतने दूर मुल्क में आईं और अत्यन्त परिश्रम करके काम करती हैं।

67. [1]अन्त में कुछ जरुरी दशानुसार हम लोग उर्सुलाईन मदरों से अलग की गईं। [2]अब सन्त अन्ना की बेटियों का अपना अलग मठ है। [3]अपने निज प्रधान

है जिसे "माता" कहकर पुकारती हैं। [4]उनका निज मातृ-गृह राँची में है, जहाँ उम्मेद्वार तथा नौशिष्यों का घर है, जिसमें उनकी जाँच, क्रिया-कर्म तथा शिक्षा-दीक्षा होती है। [5]यहीं से प्रति वर्ष मिशन क्षेत्र की कई जगहों पर इधर-उधर तीन-चार करके सिस्टरें भेजी जाती हैं। [6]वहाँ येसु संघी फादरों की देख-रेख में, लड़कियों के लिये स्कूल और स्त्रियों तथा बिना स्कूल वाली लड़कियों को धर्म की शिक्षा-दीक्षा दिया करती हैं। [7]उन्हें बपतिस्मा, पापस्वीकार, पवित्र कोम्युनियों तथा विवाह साक्रमेंत इत्यादि ठीक से लेने को तैयार करती हैं।

68. [1]सन्त अन्ना की बेटियों का असल बड़ा प्रधान तो महामान्यवर धर्माध्यक्ष खुद आप ही हैं और उन के नीचे दूसरा प्रधान वही है, जिनको बिशप स्वामी सिस्टरों का गुरु फादर होने को नियुक्त करते हैं। [2]इन्हीं दोनों के द्वारा सिस्टरों की देख-भाल तथा आत्मा और बदन की सब जरुरत पूरी होती है।

69. [1]26 जुलाई 1903 ई॰ में तीन वर्ष की मन्नत लीं। [2]तब पीछे फिर 26 जुलाई 1906 ईस्वी पर जीवन-मन्नतों से अपने को बिल्कुल यीसु को दे दीं। [3]इस हर्षित तथा सौभाग्य दिन पर महामान्यवर ब्रिसियुस मोलमन स्वयं हम लोगों की मन्नतों को ग्रहण किये हैं। [4]उसी दिन बहुत ही बड़ा पर्व प्यारी उर्सुलाईन मदरों की देख-रेख में मनाया गया।

अध्याय 7

धर्मसंघ का विस्तार

70. [1]हम सन्त अन्ना की पुत्रियां, उर्सुलाईन मदरों के साथ रहकर राँची 1903, खूँटी 1904, टोगों 1906 और रेंगाड़ी 1908 में काम की हैं, फिर उन्हीं के अधीन रहकर इधर-उधर देहात भेजी गईं, जैसे सोसो और बसिया नवाटोली 1903, कुर्डेग 1906, समटोली 1915 और जशपुर गिनाबहार 1918 में। [2]ऐसी कुल नौ जगहों में 1919 नवम्बर के अन्त तक काम करती आईं। [3]पीछे उर्सुलाईन मदरों से एकदम अलग किये जाने पर भी 1919 से मान्यवर प्यारे धर्माध्यक्ष की पसन्द अनुसार चार-पाँच, चार-पाँच करके इधर-उधर सिखलाई के कामों के निमित्त सिस्टरें भेजी जाती रहीं, जैसे, समटोली, कुर्डेग, जशपुर गिनाबहार, कटकाही, नवाडीह और मझाटोली 1919 से, हमीरपुर 1921 से, माण्डर और गैबीरा 1922 से, छेछाड़ी महुआडाँड़ 1923, तोरपा 1924, लचड़ागढ़ 1926, दिघिया 1927, कर्रा 1928 और जशपुर तपकरा 1934 से।

71. [1]मगर यह भी जानना है कि राँची, खूँटी, टोंगो, रेंगाड़ी और बसिया नवाटोली में उर्सुलाईन कॉन्वेंट हैं और 1926 ई. से गैबीरा डॉटर्स ऑफ द क्रॉस[25] के हाथों दे दिया गया है।

72. [1]28 अगस्त 1906 ई. में एक बड़ी बहुत ही शोकमय दुर्घटना हुई, जिससे तीन सन्त अन्ना की सिस्टरें एक ही दिन में हैजे की बीमारी से परलोक सिधरी हैं, अर्थात् उसी वर्ष में इधर-उधर चारों ओर हैजे की बीमारी फैल गई थी। [2]इस बीमारी के पंजे में पकड़कर सैकड़ों आदमी मर गये। [3]लोग गोद के छोटे-छोटे अनाथ बच्चों को यहाँ उर्सुलाईन मदरों के पास में लाते थे। [4]ये बच्चे बीमार घर से लाये जाने के कारण अवश्य बीमार थे। [5]मदर लोग यह न समझ कर खुशी से उन्हें ग्रहण करके सन्त अन्ना की सिस्टरों की देख-रेख में दीं, कि वे उन की खबरदारी करें। [6]सो वे आज्ञा पाकर रात-दिन उन की सेवा करने लगीं, तो ऐसा हुआ कि तीन प्यारी सिस्टरें और एक महीने की नन्हीं बच्ची हैजे की बीमारी से एक ही दिन में चल बसीं। [7]इसी घड़ी प्यारे महामान्यवर ब्रिसियुस मोलमन कलकत्ता से आकर मनरेसा हाऊस में हाजिर थे, सो जैसे ही वे गरीब

---

25 The Daughters of the Holy Cross

सिस्टरों की खबर पाये, वैसे ही तुरन्त स्वयं देखने आये और प्रत्येक के पलंग के पास जाकर उन्हें आशिष दिये। [8]जब मान्यवर बिशप स्वामी, सब हाल ठीक मालूम किये कि किस कारण से ऐसे शोकमय आफत हुई है, तो वे अति ही दु:खित हो बोल उठे कि "आज की तारीख से फिर ऐसा कभी न होगा कि गोद के बच्चे सन्त अन्ना की सिस्टरों के हाथ सौंपे जायें! [9]एक दो बालकों को पालने में हमारे सिस्टर लोगों के एक ही दिन में मर जाने से मिशन का काम कैसे चलेगा? [10]नहीं-नहीं, कभी नहीं। [11]अगर मदरों की इच्छा, ऐसे छोटे बच्चों को पालने की है, तो वे आप इस का उपाय कर लें, मगर गरीब सन्त अन्ना सिस्टरों के द्वारा से यह काम कभी नहीं कराना है, यह हमारा भारी हुक्म है, क्योंकि वे दिन भर क्लास और नाना प्रकार के कामों में लगी रहती हैं और तब रात-दिन बच्चों को पालने का यह भारी काम करना, यह हो ही नहीं सकता है, इत्यादि।"

73. [1]उसी समय से हम लोग गोद के बच्चों को पालने का भार कभी न लेती हैं। [2]कई बार लोगों से यह सुनने में आता है कि "क्यों सन्त अन्ना की सिस्टरें, अनाथ नन्हें बच्चों को ग्रहण न करतीं, जैसे दूसरी मदर लोग करती हैं?" [3]बोलने वाले आप या उस के अड़ोस-पड़ोस के लोग क्यों न ग्रहण करते हैं? [4]इस प्रश्न का उत्तर आप पहले दें। [5]हम लोग सन्त अन्ना की बेटियों का काम दूसरे प्रकार का है, सो जानें। [6]सिस्टर लोग बहुत-बहुत गरीब और लाचार हैं, सो किसी से छिपा नहीं है, फिर बोलने की जरुरत ही क्या है। [7]इस देश के नियमानुसार किसी भी लड़की को अपने घर से कुछ भी हिस्सा नहीं दिया जाता है, जिसके कारण उनके पास कुछ भी धन नहीं होता है तो कैसे वे बच्चे का खर्च और नौकरानी को वेतन दें।

74. [1]जैसे शुरु में बतलाया गया है कि 19 मार्च 1890 ईस्वी में मान्यवर लोरेटो मदर लोग राँची में स्कूल खोलीं। [2]इस स्कूल के खुलने की यादगारी में हम लोग 1915 ई. में पच्चीस वर्ष पूरे होने में खुशी से उत्सव मनायीं। [3]माननीय लोरेटो मदर लोग भी इस उत्सव में भाग ली हैं और अपनी ओर से एक चिह्न रुपी "पैर वाली सिलाई मशीन" दान हम लोगों के लिए भेज दीं।

75. [1]आगे यह भी वर्णन हो चुका है कि 26 जुलाई 1897 ईस्वी में सन्त अन्ना की संगत स्थापना हुई, जिस की यादगारी में हम लोग एक उत्सव मनाने को उत्सुक थीं। [2]मगर शुरु की चार सिस्टरों में से दो जन, एक ही साल के अन्दर में याने 1921 ईस्वी के 21 नवम्बर, अर्थात् सन्त कुँवारी मरिया का मन्दिर में चढ़ावे के पर्व के दिन में, प्यारी सिस्टर अन्ना बेरोनिका और फिर दिसम्बर 30

तारीख में प्यारी सिस्टर अन्ना मेरी, थैसीस बीमारी से अति पीड़ित हो बड़े धीरज तथा साहसी दिल से इस भयानक बीमारी की तकलीफ सह ली हैं। [3]अपने होश में रहते ही बड़ी भक्ति और प्रेम से पापस्वीकार, अन्तमलन और पवित्र कोम्युनियो ग्रहण करके खूब भरोसे के साथ अपने अति प्यारे स्वर्गीय दुल्हे यीसु ख्रीस्त में वे दोनों बड़े चैन और शांति से सो गईं।

अध्याय 8

धन्यवाद समारोह

76. [1]तब जो दो जन जीवित हैं, हम लोग तीन रोज का आत्मिक साधन करके इस बड़े पर्व की याद में, अर्थात् इस दिन में असीम दयालु ईश्वर का बड़ा प्रेम, आशिष और कृपा उंडेला गया है, जिस का दिलोजान से धन्यवाद देने के लिये अपने को तैयार कीं। [2]25 नवम्बर 1922 ई. में खूब ही धूमधाम से यह उत्सव मनाया गया। [3]बड़े गिरजे में, बड़ा पवित्र-मिस्सा का बलिदान चढ़ाया गया, हम दोनों ने अपनी मन्नतें दुहरायीं। [4]पवित्र-मिस्सा से निकलते घड़ी बैण्ड बजाये गये और फटाके फोड़े गये, जिससे मानो आकाश-पाताल इन की ध्वनि से गूँजने लगा था। [5]बैण्ड तथा गोले की आवाज एक संग मिल जाने से मानो सभों के मन और दिल खुशी के मारे उछलने-धड़कने लगा। [6]सब कोई सहमत होकर ईश्वर के इस बड़े दान और कृपाओं के लिये सहमत दिलोजान से धन्यवाद देने लगे। [7]इस बड़ी खुशी के उत्सव में भाग लेकर, लोगों से जो-जो दान मिले हैं जिसका हम फिहरिस्त लिख देती हैं, अर्थात् मान्यवर प्यारे धर्मप्रान्तीय पुरोहितों से 200 रुपये, माननीय प्यारी लोरेटो मदरों से 100 रुपये, मान्यवर प्यारे रेभ॰ फादर जे॰ भान जेरवन, ये॰ सं॰, से पैरवाली एक सिलाई मशीन, मान्यवर प्यारे रेभ॰ फादर जी॰ बोसवेल से गिरजा के लिये रकम-रकम की अनेक वस्तुएँ, जैसे धूपदानी, सात पाकेट मोमबत्ती, रंगीन मोमबत्ती और यीसु, मरिया के पवित्र दिल की सुन्दर-सुन्दर छापवाली मोमबत्ती, दो बाक्स एक-एक फुट की लम्बाई यीसु और मरिया का छापवाला सुन्दर मोम, दो बाक्स आठ इंच वाला सुन्दर छापवाला मोम और तीन इंच वाला सुन्दर छापवाला मोम कलकत्ता से भेज दिये। [8]प्यारी लेस स्त्रियों से 26 रुपये, मान्यवर रेभ॰ फादर लूई कार्दो, ये॰ सं॰, से 25 रु., मनरेसा हाऊस के मान्यवर प्यारे रेभ॰ फादर

माता सेसिलिया एवं
माता मेरी बेर्नादेत्त

भानलेम्बेर्ख़, ये॰ सं॰, से दो जोड़े पीतल का फूलदान, माननीय प्यारी उर्सुलाईन रेभ॰ मदर सुपीरियर से ख्रीस्तानी शिक्षा के प्रश्नोत्तर की बयान किताबें 10 और उर्सुलाईन कॉन्वेंट स्कूल लड़कियों से गीत, अभिनन्दन पत्र और फूलों के गुच्छे, उर्सुलाईन कॉन्वेंट की शिक्षिकाओं से एक बड़ा पीतल का गगरा, संत जोन्स हाई स्कूल के प्यारे लड़कों से सुन्दर अभिनन्दन पत्र, फूलों के गुच्छे, प्रभु यीसु के पवित्र दिल की एक छोटी मूर्ति तथा प्रत्येक लड़के की ओर से एक छोटा कागज, जिस में वे अपनी-अपनी विनतियाँ और भले-भले मतलबों को लिखकर हर एक क्लास-क्लास थोक बांधे अर्पण किये। [9]फिर काथलिक ख्रीस्तीय भाईयों की ओर से भी सुन्दर गीत, अभिनन्दन पत्र, फूलों के गुच्छे तथा उर्सुलाईन कोन्वेंट के हॉल में अति मनोहर नाटक साँझ में दिखाया गया। [10]दूसरी बेला चार बजे बड़े गिरजाघर में पवित्र साक्रमेन्त की बड़ी आशिष और धन्यवाद का गीत, याने "ते देयुम"[26] गाया गया। [11]ऐसे तब छोटे बड़े एक संग मिलकर महान् ईश्वर को, उस की बेबयान अद्भुत कृपाओं के लिये यथाशक्ति प्रेम, आदर, प्रशंसा और धन्यवाद दिया गया है। [12]बहुत-बहुत परमानन्द से जय जयकार करके यह उत्सव माना गया है।

77. [1]अब हम छोटी गरीब लाचार सिस्टरों की ओर से आप सब मान्यवर प्यारे पुरोहितगण, माननीय मदरगण तथा सब छोटे बड़े प्यारे लोगों को दिलोजान से धन्यवाद दीं, क्योंकि आप लोगों ने इस हमारे बड़े प्रमोद त्योहार की पूर्ति के लिये अत्यन्त कोशिश करके सब विषयों में मददगार हुए हैं। [2]इस कारण हम लोग भी, आप लोगों के प्रेम तथा भलाइयों को कभी न भूलेंगी, फिर इन के बदले हमारी प्रार्थनाओं के द्वारा, सदा परमेश्वर की बड़ी आशिष और कृपाओं की अधिकता माँगती रहेंगी। [3]हाँ श्री यीसु के मुँह का यह वचन मैं आप लोगों पर लगाती हूँ, "मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुम ने जब-जब मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से एक के साथ ऐसा किया, तब मेरे ही साथ ऐसा किया"। [4]फिर जब कि उस ने एक प्याला भर कच्चा पानी के लिये स्वर्ग सुख देने का करार किया है, तो क्या वह आप लोगों की इतनी दया के कामों के बदले और अधिक न देगा?

78. [1]कुछ आगे और यह भी वर्णन हो चुका है कि 8 अप्रैल 1901 ईस्वी में हम लोग अपनी पहली मन्नत ली हैं। [2]पच्चीसवें वर्ष के स्मरणोत्सव को ठीक 8 अप्रैल 1926 ईस्वीं में रखने के पक्का मतलब से सब कुछ तैयार किया गया,

---

[26] Te Deum

किन्तु असीम ज्ञानी स्वर्गीय बाप की इच्छा ऐसी न थी। [3]उस ने हम लोगों के सब मतलबों को उलट दिया। [4]हमें कुछ सोच तक न हुआ कि अचानक एक भारी विपत्ति हम पर आने वाली थी। [5]हाय! हाय! हम लोगों के महामान्यवर प्यारे गुरु तथा पालक पिता जो थे, अर्थात् रेभ॰ फादर अल्फोन्स स्कार्लाकन, ये॰ सं॰, को बुखार आने और शीघ्र ही उसे भारी नीमोनिया पकड़ के दबा मारा है। [6]ऐसा कि छः सात दिन ही में वह परलोक सिधरे हैं। [7]उसकी मृत्यु से हमलोगों को जो दुःख हुआ सो कैसे बयान करें। [8]ईश्वर ही दुःख और सुख का मालिक है तो। [9]इस कारण उस के पवित्र नाम की यश और बड़ाई होवे सदा-सदा तक।

79. [1]स्वर्गवास हुए मान्यवर गुरु तथा पालक पिता के बदले में, तुरन्त ही महामान्यवर प्यारे रेभ॰ फादर फ्रेडरिक पील, ये॰ सं॰, नियुक्त हुए हैं। [2]हम लोग उस के मिलने से बहुत खुश हुईं और ईश्वर को अत्यन्त धन्यवाद दीं, क्योंकि यही एक अति प्यारा पुराना पहचान वाला फादर था। [3]जिस समय हमलोग लोरेटो मदरों के स्कूल में लड़कियाँ थीं, उसी समय से ये फादर रोज-रोज हमें धर्म की शिक्षा देने के लिये आया करते थे। [4]जब 1895 और 1896 ई. के बीच भंयकर महामारी और अकाल से लोग बहुत दुःख तकलीफ में पड़े थे, उसी घड़ी मनरेसा हाऊस में जितने फादर लोग रहे, सो सब के सब रोज-रोज आदमियों की शारीरिक तथा विशेषकर आत्मिक मदद के निमित्त बहुत ही दौड़ धूप किये। [5]उन्हीं मान्यवर प्यारे फादरों के बीच में से एक, यही प्यारे रेभ॰ फादर फ्रेडरिक पील, ये॰ सं॰, थे।

80. [1]यही प्यारे फादर की राय के अनुसार 27 मई 1926 ई. को यह त्योहार खूब सज धज कर मनाया गया, जो कि 8 अप्रैल पर रखने की तैयारी हुई थी। [2]हम दोनों सिस्टरें तीन दिनों की आत्मिक साधना करके अपने को इस बड़े परब मनाने की तैयारी की। [3]महामान्यवर प्यारे रेभ॰ फादर जे॰ भाण्डेमवेरख़ें, ये॰ सं॰ ने हम लोगों की छोटी गिरजा में बड़ा पवित्र-मिस्सा का बलिदान चढ़ाया और मान्यवर प्यारे रेभ॰ फादर फ्रेडरिक पील ये॰ सं॰ सहायक हुए और चार धर्मबन्धु मिस्सा सेवक थे। [4]हम दोनों सिस्टरें अपनी मन्नतें दुहराईं। [5]पिछले सुसमाचार के आगे विशेष प्रार्थना हमारे लिए कर पवित्र पानी छिड़क कर आशिष दी गई। [6]उसी दिन पवित्र-मिस्सा में और तीन बजे पवित्र साक्रमेन्त की बड़ी आशिष के समय में भी, प्यारे धर्मबन्धु लोग, सब गीत और "ते देयुम" गाना गाये हैं। [7]उर्सुलाईन की सुपीरियर रेभ॰

मदर अन्तोनिया और दो तीन दूसरी प्यारी उर्सुलाईन मदर लोग भी, पवित्र-मिस्सा और पवित्र साक्रमेन्त की बड़ी आशिष में हाजिर हुई थीं।

81. [1]अति माननीय प्यारी लोरेटो मदरों के इस छोटानागपुर से चले जाने के बाद कभी फिर वे हमलोगों के खुश आनन्द के दिनों पर, उपस्थित होने न पाईं, मगर तौभी यह नहीं कि वे हमलोगों को प्रेम करना छोड़ दिये, सो बात कभी नहीं। [2]जौभी कि हम लोग अपने दिलोजान के बड़े धन्यवाद तथा पत्रिका द्वारा उन्हें निमन्त्रण या न्योता दीं। [3]हमें उनकी अनुपस्थिति के बारे में यह ठीक मालूम है, कि जब तक उन्हें ऊपर के प्रधानों या बिशपों से छुट्टी न मिलेगी, तब तक वे नहीं आ सकती हैं। [4]तिसपर भी वे अपने मन ही मन और दिल से उपस्थित होकर, इस बड़ी खुशी के उत्सव में भागी होने की तेज इच्छा प्रगट करने के मतलब से, सब पुरानी प्यारी मदरों के नाम पर माननीय प्यारी लोरेटो रेभ॰ मदर प्रोविंशल 100 रुपये भेज दीं।

82. [1]फिर इस पर्व की याद चिन्ह के लिये माननीय अति प्यारी उर्सुलाईन रेभ॰ अन्तोनिया मदर सुपीरियर की ओर से, एक जोड़े पीतल के गुच्छेदार सुन्दर फूलवाला बड़ा बत्तीदान मिला, जिसे बड़े-बड़े पर्वों में पवित्र साक्रमेन्त की आशिष के समय वेदी पर रखा जाता है।

83. [1]इन सब प्रेमी उपकारों के लिये आप सब प्यारे फादरों, प्यारे सेमिनरियों तथा प्यारी मदरों को, समस्त हृदय से धन्यवाद देती हैं। [2]परमेश्वर से हम लोगों का तेज निवेदन है कि वह आप ही हम गरीबों के बदले में आप लोगों को बड़ा प्रतिफल देवे।

84. [1]हम लोगों के अति प्यारे गुरु और पालक रेभ॰ फादर फ्रेडरिक पील ये॰सं॰ 4 अप्रैल 1926 ई. से लगातार 28 दिसम्बर 1933 तक, अर्थात् 7 वर्ष 8 महीने, हम सन्त अन्ना की बेटियों को बहुत-बहुत अच्छी रीति से, प्रेमी फिक्र से बदन और आत्मा की परवस्ती किये हैं। [2]उस की छाया में हम लोग जैसे मुर्गी के डैनों तले उस के छोटे चेंगनें हैं। [3]वह बहुत ही साहसी शूरवीर और परिश्रमी था। [4]कैसा ही दु:ख विपत्त और कामों की थकावट क्यों न हो, वह कुछ न किसी से भय खाकर पीछे हटनेवाला नहीं, मगर बड़ी बहादुरी से सब विषयों को अति उत्तमोत्तम से पूरा करने में सदा तैयार रहता था। [5]फिर उसमें यह एक बड़ा ही अद्‌भुत गुण झलकता रहा कि दु:ख उदासी में भी वह सदा अपने को सुखी, मग्न तथा हँसमुख दिखलाता था। [6]वह आप जैसे था, वैसे ही औरों को हमेशा अपनी प्रेमी दयाशीलता की मधुर वाणी, सलाह तथा नमूनों के द्वारा आत्मिक

और शारीरिक दु:ख सन्ताप से चूर दबे, मन दिल टूटे हुओं को, इतने उत्साहित और तेजी से उस्काके, मानो नई शक्ति पहुँचा कर उठाता था। [7]वह हमें इतने उत्साह से प्यारे यीसु, निष्कलंक माँ मरिया तथा सन्तों की जीवन चरित्र सुना-सुना कर हमारे दिलों में विश्वास, भरोसा और प्रेम को बढ़ाने की अथक चेष्टा किया करता रहा। [8]उस का बारम्बार यह कहना था कि देखिये प्यारी सिस्टरों, यह संसार थोड़े दिनों का है, मगर यह ख्याल मत करना कि हम मोटर गाड़ी या रेल में बैठे-बैठे समतल रास्ता से होकर झट स्वर्ग में पैठेंगी, सो यह बात नहीं हो सकता है, लेकिन रोज-रोज शैतान, दुनिया और विशेष कर अपने शरीर की कुइच्छाओं के विरुद्ध में लड़ना होगा। [9]तब केवल जीत का इनाम मुकुट मिलेगा, इत्यादि बोलकर हमारे गिरे पड़े निर्बल मन और दिलों में जोश, शांति और खुशी भर देकर हँसवाता था। [10]इन के अतिरिक्त उस में और बहुत से भले-भले गुण चमकते थे।

85. [1]ओह! उस की छाया में रहने का सौभाग्य समय, हम लोगों के लिये दो दिनों का केवल हुआ है। [2]इतने अच्छे और अति प्यारे फादर को खो देने से हम लोग निहायत दु:खी हुईं, परन्तु हम करें क्या? [3]उस के इतने प्रेम तथा बेबयान उपकारों का बदला हम कैसे चुकावें?

86. [1]निश्चय हमारी ओर से, उस के लिये ईश्वर से विनती चिरौरी, बड़े प्रेम तथा दिल का धन्यवाद की याद चिरकाल तक बनी रहेगी।

87. [1]28 दिसम्बर 1933 को वे अपने प्रधानों, हाँ ईश्वर की ही पवित्र इच्छा से स्थानान्तरण करके, हजारीबाग के सन्त स्तानिसलास कॉलेज में काम करने के लिये भेजे गये। [2]वहाँ रहते एक वर्ष भी न बीते कि अचानक वह बिछौने पर दो तीन रोज तक बेहोश पड़े। [3]ऐसा ही 5 अक्टूबर 1934 ई. को स्वर्गवास हो गये। [4]वह जीवन भर अपने को परमेश्वर की बड़ाई बढ़ाने और अनगिनत आत्माओं की मुक्ति के निमित्त अपने को बलि कर डाले, सो यीसु अपने करार अनुसार, अवश्य बड़ा-बड़ा इनाम उसे दिया होगा, यह बोलकर कि "हे भले और विश्वास योग्य नौकर, जब कि तू थोड़े कुछ में विश्वास योग्य निकला, तो मैं तुझे बहुत कुछ पर प्रधान करूँगा, अपने स्वामी के आनन्द का भागी हो जा।"

88. [1]जब उनका पुरोहित अभिषेक हुआ, उसी घड़ी अपने देश के प्यारे घरानों की ओर से जितने दान मिले हैं, जैसे पवित्र पूजा बलिदान के लिये सुन्दर चमकता कपड़ा, सुन्दर स्टोल, सर्पलस, अल्ब, कटोरा, सिबुरियुम, मोमस्टैंड, इत्यादि बेनेदिक्सन भेल इत्यादि, सब कुछ को हम गरीब सन्त अन्ना की बेटियों

के लिये दे दिया। [2]इस के अलावे हम सोसो की जितनी सिस्टरें और काम करने वाली लड़कियों और कुलियों का सब खर्च-वर्च पूरा वर्ष के चावल, दाल, नमक, चाय, चीनी, घी, मिट्टी तेल और ... [27]।

[27] ज्ञात हो माता बेनदित्त जीवन के अन्तिम दिन माण्डर अस्पताल में थीं और वहीं रहकर अपनी आत्मकथा लिख रही थीं, जिसे वे पूरा नहीं कर पायीं।

शब्द अनुक्रमणिका

अ

आर्चबिशप 2, 7, 8, 20, 22, 34, 38, 40, 41
आत्मा 35, 40, 47, 48, 55
अनाथ 6, 36, 49, 50
अल्फोन्स 47
अल्फोन्स स्कार्लाकन 46, 47, 54
अल्फ्रेद 43

ई

ईश्वर 2, 8, 12, 13, 19, 24, 28, 33, 35, 37, 38, 41, 42, 43, 44, 45, 46, 47, 52, 53, 54, 56

उ

उम्मेद्वार 40, 48
डोंगाइत 22
उत्सव 45, 52

क

कुँवारी 8
कुँवारी 7, 9, 19, 34, 38, 39, 50
कुर्डेग 49
कर्रा 49
काथलिक 1, 2, 7, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 19, 20, 27, 46, 53
कोन्सटन्ट लीवन्स 1
कटकाही 49
कलकत्ता 3, 7, 17, 20, 21, 25, 34, 38, 43, 49, 52
कलीसिया 1
कृपा 6, 7, 22, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 44, 45, 52

ख

ख्रीसान्त सपार्त 39, 35, 39, 40
ख्रीस्त आनन्दित रूथ 12, 14, 20, 33, 36

ग

गिरजा 11, 15, 20
गैबीरा 49

घ

घुसरा बण्डा 37

च

चिट्ठी 5, 8, 26, 31, 32, 33

छ

छोटानागपुर 1, 2, 3, 7, 11, 45, 46, 47, 55
छेछाड़ी महुआडाँड़ 49

ज

जशपुर गिनाबहार 49
जशपुर तपकरा 49

ड

डूरंडा 1, 12, 23

त

तोरपा 1, 2, 49

द

दिघिया 49

ध

धर्मसंगत 38, 43, 45, 46

न

नवाडीह 49

प

पिस्तौल 9, 30
पवित्र-मिस्सा 1, 12, 15, 19, 23, 27, 33, 34, 52, 54, 55

पौल गूथल्स 2, 7, 20, 22, 25, 34, 39, 41, 42, 44, 45
प्रश्नोत्तर 2, 53
प्रतिज्ञा 37
प्रार्थना 33, 34, 37, 40, 54
प्रोटेस्टन्ट 14, 19, 20, 25, 28
प्रोटेस्टन्टों 27

फ

फुर्त्ती 25
फादर लीवन्स 12
फ्रेडरिक पील 54, 55

ब

बवर्चीखाना 23, 34
बन्दोबस्त 4, 6, 21, 26, 28, 33
ब्रिसियुस मोलमन 44, 46, 48, 49

भ

भाण्डेमवेरख़ें 54
भानलेम्बेर्ख़ 53

म

मझाटोली 49
मथियस 37
महाधर्माध्यक्ष 22, 26, 27, 28, 34
महामान्यवर 42, 46
महामान्यवर 2, 4, 20, 21, 22, 33, 39, 40, 41, 43, 44, 45, 48, 49, 54
माण्डर 49
मेरी एमेल्दा लोगिन 43
मेरी पत्रीसिया 3
मेरी देपज्जी 23
मेरी तेरेसा 21, 22, 33, 34, 43
मेरी तेरेसा बोन्नर 36, 38, 39, 40

मेरी जेरट्रूड 43
मेरी अलोयसिया 3
मेरी गोंजागा 3
मेरी गोंजागा 21, 22, 40, 42, 43, 45
मेरी गोंजागा जोयनट 3
मेरी गोन्जागा 38

य

यान देस्मेत 2, 21, 33, 35, 38, 41, 45, 46
यूरोपियन 40, 41

र

रोबेरटीना 37

ल

लीवन्स 1, 2
लोरेटो 3
लचड़ागढ़ 49
लूई कार्दो 52
लूईसा 37

श

शादी 7, 8, 21, 25, 27, 28, 29, 31, 32, 37, 38, 43

स

समटोली 49
सोदालिती 34, 38, 39
सिरोमटोली 37
सिस्टर तेरेसा 3

ह

हमीरपुर 49
हागेनबेक 21, 35
हुक्म 8, 12, 27, 30, 31, 35, 37, 50

व्यक्तियों के नाम
उनकी अपनी भाषा के अनुसार

Archbishop Paul Goethals
महाधर्माध्यक्ष पौल गूथल्स (फ्लेमिश)
Bishop Britius Meuleman
धर्माध्यक्ष ब्रिसियुस मोलमन (फ्लेमिश)
Father Alphonse Schaerlaecken
फादर अल्फोन्स स्कार्लाकन (फ्लेमिश)
Father Andre Grignard
फादर अन्द्रे ग्रिन्यार (फ्रेंच)
Father Chrysanth Sapart
फादर ख्रीसान्त सपार्त (फ्लेमिश)
Father De Cock
फादर दे कॉक (फ्लेमिश)
Father Fredrik Peal
फादर फ्रेडरिक पील (फ्लेमिश)
Father G. Boswell
फादर जी॰ बोसवेल (अंगरेजी)
Father Joseph Van Gerven
फादर जे॰ भान जेरवन (फ्लेमिश)
Father Joannes De Smet
फादर यान देस्मेत (फ्लेमिश)
Father John Fierens
फादर जोन फियरेन्स (फ्लेमिश)
Father Louis Cardon
फादर लूई कार्दों (फ्रेंच)
Father Ludovic Haghenbeek
फादर लुदोभिक हागेनबेक (फ्लेमिश)
Father Motet
फादर मोतेत (फ्लेमिश)

Father Sylvain Grosjean
फादर सिल्भे ग्रोजाँ (फ्रेंच)
Father J. Vandemberghe Reetoe
फादर जे॰ भाण्डेमवेरख़े रेटू (फ्लेमिश)
Father Van Lemberghe
फादर भान लेम्बेंख़े (फ्लेमिश)
Mother Anthony
मदर अन्तोनी (फ्लेमिश)
Mother Mary Gertrude
मदर मेरी जेरट्रूड (फ्लेमिश)
Mother Mary Gonzaga Joynet
मदर गोन्जागा जोयने (फ्रेंच)
Mother Mary Imelda Mc Loughlin
मदर मेरी एमेल्दा मक लोगिन (आईरिश)
Mother Mary Teresa Bonner
मदर मेरी तेरेसा बोन्नर (आईरिश)
Mother Ursula
मदर उर्सुला (फ्लेमिश)

प्रस्तुतकर्ता

फादर लीनुस कुजूर, ये० सं० प्रान्तीय सेमिनरी संत अल्बर्ट्स कॉलेज, राँची के प्राध्यापक के रूप में पुरोहित उम्मीदवार प्रशिक्षु ब्रदरों के आध्यात्मिक, नैतिक एवं बौद्धिक विकास हेतु प्रशिक्षण के साथ-साथ छोटानागपुर की कलीसिया की रीति-नीति एवं पूजन पद्धति विषयों पर समयानुसार लेखन एवं अनुपालन में क्षेत्रीय अधिकारियों के साथ सक्रिय रहे। इसी दरमियान कलीसिया के अन्तर्गत संचालित विभिन्न संस्थाओं - विशेषकर संत अन्ना की पुत्रियों के दिशा-निर्देशन में उनकी भूमिका अहम् रही है। वे काथलिक पत्रिका निष्कलंका के माध्यम से धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विषयों पर अपना विचार नियमित रूप से साझा करते थे। उनकी कुछ कृतियाँ और लेख विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। इसी कड़ी में फादर लीनुस कुजूर ने माता अन्ना मेरी बेर्नादेत्त की आत्मकथा में संत अन्ना की पुत्रियों के धर्मसंघ और स्थानीय आदिवासी जीवनशैली, रीति-रिवाज, रहन-सहन एवं परम्परा में अंतरंग संबंध देखा। उन्होंने पूरे संस्मरण को प्रसंग के अनुरूप अध्याय में विभाजित कर बाइबिल के तर्ज पर अराबिक नम्बर से रेखांकित किया ताकि कोई भी संदर्भ आसानी से ढूँढ़ा जा सके। फादर लीनुस कुजूर अपने जीवन के अंतिम दशक में पोंतिफिकल ग्रेगोरियन यूनिभर्सिटी, रोम के प्राध्यापक थे।

Printed at Catholic Press, Ranchi - 834001
Mob. No. : 8757340417 e-mail : catholic_press@yahoo.in